कथा सरवरी
भाग २

(हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा, चम्बा, मण्डी तथा बिलासपुर क्षेत्रों की कुछ चुनी हुई लोक-कथाओं का संकलन)

मुख्य सम्पादक
–लाल चन्द प्रार्थी

सम्पादक-मण्डल
–हरिचन्द पराशर
–मौलू राम ठाकुर
–डा० बंशी राम शर्मा
–विद्या शर्मा



हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी,
परी महल, शिमला-9

प्रकाशक : सचिव,
हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी,
परीमहल, शिमला—171009

प्रथम संस्करण : 1977
1,000 प्रतियां

मूल्य : दो रुपये पचास पैसे मात्र

प्राप्ति स्थान : हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी,
परीमहल, शिमला—171009.

मुद्रक : उपनियन्त्रक,
मुद्रण तथा लेखन सामग्री,
हिमाचल प्रदेश, शिमला-3

प्राक्कथन

पहाड़ी लोक कथा भाग–2 हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी की ग्रन्थ माला में आठवां पुष्प है ।

बर्फ के किसी बड़े तोदे (लुठित हिमपुंज) में बर्फ के इलावा कितनी शिलाएं, पेड़, पौधे, पशु साथ में ढेर हुए पड़े हैं, यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता । परन्तु वह हिमपुंज कुछ अदृश्य रूप से चालित होता है, कुछ क्षरित होता रहता है, कुछ नीचे भूमि में रिसता है, कुछ ऊपर पसीजता है । लोककथा भी हिमपुंज की मानिंद है उसमें देवगाथा, पुराण कथा, इतिहास, वार्ता आदि के कई तत्त्व समाए रहते हैं और सब से बढ़ कर है–उसका गल्प और आख्यायिका तत्त्व जिसका कथक्कड़ी रस उसे साहित्य क्षेत्र की परिधि में घेर कर ले आता है ।

हिमाचल प्रदेश में आदि काल से विभिन्न जाति-समूहों का मेल जोल रहा है, अतः यहां का लोक साहित्य विविध और विभिन्न है । लोक साहित्य में से लोककथा सर्वाधिक व्यापक रूप है क्योंकि इस के सुनाने वाला यत्र-तत्र परिवर्तन कर लेता है तथा उसकी अपनी साहित्यिक कल्पना कथा सुनाते सुनाते कार्यशील रहती है ।

'बड्डकहा' (बृहत्कथा–सरित्सागर) भारतीय लोककथाओं का ऐसा भण्डार है जो समय समय पर भारतीय भाषाओं के ग्रन्थ साहित्य को सामग्री प्रदान करता रहा है, साथ ही उससे तत्कालीन भाषा-रूपों का ज्ञान होता है और उस समय की भाषाओं के ग्रामर लिखने में मदद मिलती है ।

पहाड़ी भाषा और साहित्य की इस विकास वेला में लोककथाओं से एक साथ दो वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है, साहित्य के लिए कथानकों का ताना बाना और भाषा के ठेठ रूप । हमारा प्रयत्न है कि पहाड़ी लोककथाओं की सरवरी को ग्रन्थ साहित्य के लेखकों को निरन्तर उपलब्ध कराते रहें । इस का पहला भाग हिमाचल प्रदेश के मध्यवर्ती क्षेत्रों–सिरमौर शिमला कुल्लू के सम्बन्ध में है और दूसरा भाग चम्बा, कांगड़ा, मण्डी व बिलासपुर क्षेत्रों से सम्बन्धित है ।

मुझे आशा है कि यह पुस्तक माला उपयोगी सिद्ध होगी और पाठक इस प्रयास को पसन्द करेंगे ।

लाल चन्द प्रार्थी,
भाषा एवं संस्कृति मन्त्री, हि0 प्र0
तथा
अध्यक्ष,
हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी,
परीमहल, शिमला-9 ।

भूमिका

जो प्रदेश जितने विभिन्न प्रकार के जनपदों से बना हो वह लोक कथाओं में उतनी ही विभिन्नता रखता है। लोक कथा मानव इतिहास के उस चरण की उपलब्धि है जब वह अपने से बाहर के संसार को और विराट प्रकृति को भावात्मक दृष्टि से देखता था और उसे अप्रयोज्य इकाई (अनयुटेलाइज़ेबल होल) समझता था। लोककथाओं में कल्पना का फन्तासी रूप किसी अदृष्ट घटना को मनचाहे ढंग से चित्रित करता है, इस लिए सामान्य जनों में प्रभावी ढंग से भाषा प्रयोग करने वाले कुछ एक ऐसे व्यक्ति अवश्य होते हैं जो गल्प में रस घोल सकते हैं। हमारे प्राचीन साहित्य में उल्लेख है कि लेखकों की परम्परा ने भारत के आदिवासियों में प्रचलित सवा लाख कथाओं का संकलन किया था और कथा सरितसागर में उन में से अधिकांश सुरक्षित हैं। भारत के कथा-साहित्य को उन कथाओं ने प्रचुर मात्रा में प्रभावित किया है।

हिमाचल प्रदेश में विभिन्न जाति-समूह और सांस्कृतिक समुदायों का आरम्भ से ही मिलन होता रहा है। विभिन्न वसु यहां आपस में मिल जुल कर जनपद बनाते रहे हैं और आपस में मेल जोल के कारण उनकी गल्प में लेन देन होता रहा है। सदियों की इस रेलपेल से जो लोककथाएं आजकल सुनने सुनाने में मिलती हैं उनके अन्तर्गत कथावस्तु में अनेक सांस्कृतिक रूढ़ियां (कल्चरल मोटिफ्स) हैं जिनका अध्ययन सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से किया जा सकता है। हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी ने प्रदेश की लोककथाओं के संकलन की एक विशाल योजना बनाई है, इस के अन्तर्गत प्रथम प्रयास के रूप में दो पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं। प्रथम भाग में कुल्लू, महासू और सिरमौर की लोककथाएं संकलित हैं और दूसरे भाग में चम्बा, कांगड़ा, मण्डी, तथा बिलासपुर की कुछ एक लोककथाएं एकत्रित हैं।

इन कथाओं से जहां प्रदेश के मौखिक गल्प-साहित्य का अनुमान लगेगा वहां इन क्षेत्रों की कथा-भाषा के सहज रूप के उदाहरण भी उपलब्ध होंगे।

अकादमी के सभी प्रकाशनों के कार्य की प्रगति में अकादमी के अध्यक्ष श्री लाल चन्द प्रार्थी जी निकटता और निष्ठा से रुचि लेते हैं। वह अकादमी की गतिविधियों के महाप्राण हैं।

हमें आशा है कि इसी श्रृंखला में हम शीघ्र ही किन्नौर और लाहुल स्पिति की कुछ लोककथाओं के हिन्दी रूपान्तर को पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर पायेंगे।

हरिचन्द्र पराशर,
सचिव,
हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी,
परीमहल, शिमला-9

कथा सरवरी—२

विषय सूची

घटोहरेरी देवी बैलैकरेरी

—अमरसिंह रणपतिया

पुराणे समय घटोहरेरे इर्द-गिर्द एक बड़ा भयंकर अते डिरौणा जंगल थु । अज बी ओ जंगल घट डरौणा न हा । ओस जंगला मंझ रागस रेहु करदे थिए । ओ लोका जो तंग बी करदे थिए । एक रोजेरी गल हा जे दो मणुह एक रंई रे बूटे जो कटी करी उसेरे तगते बणांदे थिए । उइएं किछ तगते कढी थी रखूरे अते किछ कढना लौरे थिए । तिएं तगते मंझ दग पोड़ने ताईं कोई फसाई अते कुरहाड़ी री कोई जो फटा बगाई । तिआ जो किछ छेड़ पुणाई दित्ती । तिएं समझु जे कोई जंगली जीव आ भोला अते ओ खड़े भुवी करी चौही कनारे हेरणा लगे । से कै हेरंदे जे दो रागसणी खड़ी हिन । उआरे बड़े बड़े पराल थिए अते चुच्चु पिठी पिच्छे सटूर थी । ओ खड़ी भुची गई कने तिआ मणुह जो बोलणा लगी "असु तुसु जो खाणा !" से डरे न अते बोलणा लगे "तु खा बसक अणता एक गल इंधी बी मन", ओ बोलणा लगी—"कै गल ?"

बड़े आदमी बड़ी रागसणी जो बोलु—"इस दग्गा जो पोड़ाई दे तां मुज्जो खाएं ।" ओ मनी गई अते उनी तगते रे अन्दर हथ पऊ । जिह बी उनी हथ पऊ उनी मणसुए दग्गा थंउ कोई छिक्की लेई अते रागसणी रा हथ ओस मंझ फमी गो अते ओ कौंटा मारना लग्गी । ओ मणुहं खड़ाके मारने लग्गा । दुई रागसणी पिटी पिच्छे त हेरू अते सिद्धी न्हषी गई । अबे रागसणी मिणता करने लग्गी । "छंदे मुज्जो छड़ी दे, छंदे मुज्जो छड़ी दे ।"

तिनी मणहुंए बोलु—"अबे मु तुज्जो खाणा न ता तु मुज्जो मिते बचन ले ।"

"हां अऊं बचन दिन्नु तु मेरी जान बगस ।"

"ता तु मु सिते बैह करली ।"

"करली ।" उनी रागसणी बोलु पर एक सरत हा"

"कै?" मणहुए पुच्छ ।

"अऊं तुज्जो सिते सारी उमर गल न करली पर तेरे घरे लाड़ी रे रूपा मंझ जरूर रहली"

"खरी" ! उनी मणहुएं बोलु ।

अबे उस जो छड़ी दित्ता अते ओ लाड़ा लाड़ी रे रूपा मंझ रहणा लगे अते काफी समा बिती गो । अबे उआंरे घरे बाल-बच्चा बी भोई गो । ओ अबे सारा घरेरा कम करंदी । बगड़ी मंझ कम करंदी । अपणे चुच्चु जो अपणी पिठी पिच्छे सट्टी रखदी । बच्चे चुच्चु पींदे रंहदे । उनी अजा ताईं कसी मणहुं सिते गल न करी थी । उस जो पता थु जे उनी कसी मणहुं सिते गल करी तां ओ अपणी रागसी तागत जो खोई बैंषली अते साधारण मणहुरे रूपा मंझ चली इल्ली अते अपणी सारी जादुभरी तागता थऊं खाली

बणी गालही ओ हर बारहुएं साले हैणीरे पाले जो गंधी अते हैणी जो थल्लै पुजाई करी अते अपणी जीत मन्नी करी बड़े गरबा सिते भिरी घरे वापस इंदी।

अबे भिरी उसेरा हैंणीरा पाला थु उनी हैण पुजाणे गराहा थु पर लाड़े सोचु जे अज ओस थहुं गल जरूर कराणी। ओस जो सारी गल्लेरा पता न थु के गल करने पर उसेरी सगती गंधी रहणी। उनी लाड़े एक घिऊएरी घिधड़ी भरी करी चुल्ले पुढ़ी रखी अते अग लाई दित्ती। रागसणी अपणी तियारी करू करंदी थी। उनी हेरू जे घिउ ता उफणी गो! अते झजक्के सित्ते उनी अपणे लाड़े जो हक दित्ती "घिउ उफणी गो।"

बस उनी अज अझागते गल करी। अते अबे उसेरे लाड़ेरी जीत भोई गई पर ओस जो ए पता न थु कि एस जीता पिच्चे उसेरी लड़ी री एक बड़ी हार हा अते उस हारे रे कारण अबे उसेरा जीवन खतरे मंझ पैई गो।

अबे उनी अपणी सारी सगती खोई दित्ती थी। ओस जो अबे पता लगी गो जे हैणी जो थल्ले तांई पुजाणा अते घरे जींदे ईणा अबे उसेरे बसेरा रोग न थु। ओ अबे पछताई अत रोई बी। अबे ओ हैंणीरे रे पाले चली पर सदा बासते जुदा हूणा चांहदी थी। उनी अपणे बाल-बच्चे सिते बी गल-बात करी अते लाड़े जो पद्दु अते बोली—"ए दुद्धेरी कटोरी रखी अते एदिया जाली करी रखु अते अउं हैंणीरे पाले चली जो अबे अऊं मरी गई ता दिया बुझी गा राहा अते दुद्धा खूना करी लाल भुची गणहू जो इहा भुहा ता समझी लैणा जे अऊं मरी गई।"

ओ चली गई। हैण पई। थोड़ी बेरा जो दिआ बुझी गो अते दुध खूना सिते ला भुची गो। अबे ओ मरी गई थी।

अबे उसेरा संस्कार करना थु अते उसेरा सरीर तोपणा जरूरी थु। सब हैणीरी जगा गै। कै हेरंदे जे उसेरे बड़े-बड़े बाल बिखरूरे थिए। उसेरा सरीर न मुलु।

अबे उसेरा मंदर बणाउ अते उस जो देवी मन्नु। अज बी घटोहर बाले ओस देवी जो अपणी कुलज मनन्दे। उसेरी संतान सुंदर, गोरी, छैल अते तागतवर हा।

लोका जो बिसवास हा जो हर बारहवें साले हैण पैणोरी गीरह षुणाई दिंदी अते जो कोई उसेरे कुलेरा आदमी ओ मरंदा तां बच्चे-बच्चे करी रूंदी षुणाई दिंदी।

अज ओ बलैकरेरी देवी रे रूपा करी मसहूर हा।

शब्द	अर्थ
कोई	लकड़ी की बनाई गई एक छिणी।
षुणाई	सुनाई
पराल	बाल
इंधी	हमारी
कौंच	चीख
हैणीरे	पहाड़ से बर्फ की बाढ़ फिसलना
घिघड़ी	घी काढ़ने का मिट्टी का बर्तन।

गुग्मा कारीगर

—अमर सिंह रणपतिया

पुराणे समेरी गल हा। उलांसा एक रणोन थी। राणेरा बड़ा बोल बाला थु। एक रोज राणे जो ख्याल आ जे ओस जो एक महल बणाणा चहीदां जे बड़ा बधिया भोआ अते लोक ओस महला जो हेरी करी टच्च भुज्जी गाहन। ओ भोआ बी अपणे अनोखी बनावटे रा। ऐस महला सा ही कमीरा महल न भूणा चहीदा।

भियाग भुई अते राणा अपणी सेजा थऊं उठू। बाहर गो अते ओ अपणे पुराणे बेहढेरी दाई हेरना लग्गा। ओ ता अबे पुराणा भुची चुकूरा थु अबे ता ओ एक अनोखा बेहढ़ा बणवाणा चाहंदा थु जिसेरे चौह कनारे झरोखे भून। राणे आपणे बगारू पदे अते हुकम दित्ता जे ओ इदेहा कारीगिर तोपन जे से मेरा सुंदर बेढ़ा बणाए से. महल अनोखा भोआ। बगारु चहुं कनारे दौड़े। एक ग्रां मंझ गै ता ओ क हैरंदे जे एक कारीगिर किसेरके घरेरा कम करंदा थु। ओ कारीगिर बी अनोखा थु उसेरी चिणारी साही किसेरी बी चिणारी न थी अते उसेरे लकड़ीरे कमा साही किसेरा कम न थु। सभनीरा कम ओस थऊं उत्तरी करी थु। ओ ओस जो राणे गल्ल लई गै अते राणेरे साम्हणे पेस करी दित्ता। राणे उसेरे कम्मेरी परख करी अते ओस जो एक अनोखा महल बणाणे रा हुकम दित्ता।

गुग्गे अपणा कम सुरु करी दित्ता। मुंह मंगा समान ओस जो मुलंदा गो। कई बगारु उसेरी सौग्गी कम्म करने लाई दित्ते। ओ महल उसारंदा गो। एक थऊं एक नमूना पेस करु। दिन बिते राता बित्ती अबे बेढ़ा लगभग तयार भोई गो। महल गै थु एक नौई चीज थी। इदेहा नमूना कुनी बी न थु हेरूरा। जेहड़ा बी हैरंदा उसेरी हाखी चट्ट भुची गांधी। सारे रजवाड़े मंझ राणेरे महलेरी चरचा भूणा लग्गी। सारे लोक इची इची करी ओस महलेरी तारीफ करने लग्गे। गग्गेरा बी मतारा चढ़ी गो। ओ अबे सोचंदा जे उस जो कै इनाम मिलंदा पर अबे राणेरा दमाग फिरी गो। ओ सोचंदा जे गुग्गे जो इनाम दी करी भेजी दित्ता ता उनी चली गाहणा अते मुच्ची सकंदा ओ कमी होर राजे या राणेरा महल बणाए ता मेरे महलेरी कै कीमत। अबे ओ चिंदा मंझ पैई गो अते उसेरे दमागा मंझ फतूर पैदा भुआ जे अबे किछ उपा जरूर करना। उनी एक रोज गुग्गे जो पद्दू अते उसेरा एक हथ बढी दित्ता। अबे गुग्गा बचारा नकम्मा भोई गो अते ओ नरास भुची करी चली गो।

एक रोज गुग्गे जो सुपना पैउ जे ओ जे सगती देवी छतराढ़ी रा मंदर बणाए तां सगती उसेरे हत्था जो साबत करी देली। तिनी अबे भोई लैई जे ओह अबे जरूर देवी रा देहरा बणांला।

उनी देवरे देहरेरा कम एकी हत्थे करी करना सुरु करी दित्ता। धीरे-धीरे उनी देहरा पूरा करी दित्ता। देहरा लकड़ी रा बणाउ जे सदा अपणे गिर्द घुमंदा रहदा देवी तुट्टी अते उसेरा हथ साबत करी दित्ता।

पर गुग्गा अबे जादा जीणा न चाहंदा थु। उनी अपणी आखरी इच्छा पूरी करी लई जे भगवतीरा मंदर तयार करी दित्ता जेहड़ा शिल्प कला मंझ अपणा अनोखा नमूना थु। अबे उसेरा हथ बी लगी गो पर अबे ओ एउ अन्यायी संसारा मंझ न रहणा चाहंदा थु। अबे ओ भगवतीरे सवाए किसेरे कम्मे न ईणा चाहंदा थु। अते बोलंदे जे उनी देहरेरी छत्ता थऊं छाल लैई अते भगवतीरी सरण मंझ मरी गो। ओ मरी करी बी अमर भूची गो। उसेरी मूर्त बणाई करी देवीरे मंदरा मंझ रखी गई।

शब्द	अर्थ
बधिया	बढ़िया
कसीरा	किसीका
भियाग	प्रभात
बेहढ़ा	महल
षदे	बुलाए
चिणारी	बनाई
इदेहा	ऐसा
उपा	उपाए
त्रुट्टी	प्रसन्न हुई

ग्रौली वाली देवी

—ग्रमर सिंह रणपतिया

गल बड़ी पुराणी हा। छतराढ़ी एक जंगल थु । जंगला मंझ किता दूर दूर रागस रहंदे थी या कहें कहें देवता रहंदे थिए। ग्रज्जेरा छतराढ़ी ग्रां बड़े पिच्छे बस्सु । पुराणा ग्रां ता मढ़ी थु। मेढ़ी ना एक ो घर थिए। छतरा ी देवतेरा बासा थु ग्रते तिढ़ी सत देवी बैंहणा रहंदी थी। से सारी रली मिली करी रहंदी थी। उइयां मंझ बड़ा प्रेम भाव थु।

बगत गुजरंदा गो । दिन बित्ते, राता बित्ती। ग्रबे ग्रो सारी जुग्रान होई गई। उइयां मंझ वखीणेरी भावना पैदा भुई । एक रोज ग्रो गिट्ठी भुई ग्रते सराह करी जे ग्रबे ग्रपणी धन दौलत बंडी लैंदी । उइयां गछ सुन्ना कन्ने रुप्पा । बड़ा थु ग्रते बंडणा किहां करी। तिएं सलाह करी जे ग्रां थाऊं त्रकड़ी मंगैइया ग्रते सारी थाउं छोटी बैंहणा जो हुकम दित्ता—"तु गा ग्रते मेढ़ी गिची करी त्रकड़ी ले ग्रा ग्रणता झट गच्छे।"

छोटी बैंहणे तिग्रांरी गल पैंरे मत्थे मन्नी ग्रते न्हषंदी मेढ़ी पुज्जी। ग्रो घरेरे ग्रन्दर गेइ ता के हेरंदी जे एक बुड्डी छाह थी छलंदी। उनी ग्रोस बुड्डी जो बोलु— "त्रकड़ी चहींदी।"

ग्रो बुड्ढी उसेरी दाई हेरंदी रैही भिरी बोली—"कुलिए ग्रऊ ता छाह हा छलंदी ग्रबे कै करली—"

कुली बोलु—"छाह ग्रऊं छलंदी तु त्रकड़ी तोप —"

से जनानी त्रकड़ी तोपणा लगी। थोड़ी बेर ग्रो त्रकड़ी तोपंदी रही । भिरी ग्रो ग्रोस कुली गेछ ग्राई जे छाह किदे ही छली भोली ग्रो सियाणी ग्रौरत ता के हेरंदी जे त्रणी ता चुपड़ोतीरे मेकरा सिते भरी गई । ग्रबे ग्रो समझी गई जे ए कुली था कोई देवी हा। ग्रबे ग्रो लालचा जो परई गई। कुली दैहीं छलणा लाई रखी ग्रते ग्रप्पु त्रकड़ी तोपणेरा बहाना करंदी रही । जां ग्रो कुली छाह छल्ली बैठी तां उनी ग्रोस जो त्रकड़ी दित्ती।

दुए कनारे से छी बैंहणा छोटी बहणा जो भालदी रही । घड़ी घड़ी उटेकी करी हेरंदी जे से निक्की बैंहण किना ग्राई भोली। बड़ी बेरा ताईं भालु ग्रते ग्रबे उइए बिना त्रकड़ी रे धन दौलत बंडी लैई। छोटी बैंहणा जो किछ न रैहु।

छोटी बैंहण बी दौड़ंदी-दौड़ंदी त्रकड़ी लैई करी पूजी पर धन दौलत ता छी बैंहण ग्रपु मंझ बंडी थी चुकूरी। निक्की बहणा जो ग्रबे रूणेरे सुग्राए किछ न थु । से ग्रबे रूणा लगी । रोई रोई रोजना लाई दित्ती । ग्रो ग्रबे हढंदी गंधी थी ग्रते

रूंदी गंधी थी। चलंदे-चलंदे जो कई देर लुढ़ी कने कई बेर ग्रोस जो ठोकरा लग्गी। लुढ़ने ग्रते टोकरा करी उसेरा कई जगा रगंत पेउ । जिढ़ी जिढ़ी रगतेरी बूंदा पेई तिढ़ी तिढ़ी ग्रज बी लाल चिक पुझंदी ग्रते जिढ़ी जिढ़ी उसेरे रूणुरे टिप्पु पे तिढ़ी तिढ़ी सारी मिट्टी काली भोई गई। से काली ग्रते लाल चिक ग्रज बी मंदरा रे चौंहु किनारे फैल्हूरी हा।

जां ग्रो बड़ी रौ करंदी थी तां ग्रोस जो गणेस मुलु ग्रते तिनी दलासा दित्ता तां से चुप्प भुई तां उसेरी यादगारा तांई एक मंदर बणाउ से ग्रज ताईं बी तिढ़ी हा ग्रते 'ग्रौली वाली भगवती रा मन्दिर'' करी मन्ना गंधा ।

से सत बैहणा सत्त जगा बस्सीं ग्रते मन्दर बणे । से बहणा हिन ।

सगती देवी छतराढ़ी, चम्बे चौंड, चुराह् बैखाली, कांगड़े भवानी, लाहुल मिरकुला, भरमौर लखणा, ग्रते ग्रौली वाली भगवती छतराढ़ी।

शब्द	ग्रर्थ
थु	था
किता	या तो
कहें	कहीं
बस्सु	बसा
ग्रते	ग्रत: ग्रौर
उइयां	उन में
गो	गया
मंझ	में
भुई	हुई
रुप्पा	चांदी
ग्रणाता	लेकिन
न्हषदी	भागती हुई
दाई	की ग्रोर
तोप	ढूंढना
चुपड़ातीरे	मक्खन
मैंकरा	ढेले
सिते	के साथ
छी	छः
गंधी	जाती
रगत	खून
चिक	मिट्टी
पुझंदी	दीखती
मुल	मिला
हिन	हैं

परख

—हरि प्रसाद सुमन

इक राजा थिया तिसेरे दो जागत थिये । इक ब्राह्मण थिया तिसेरे वी दो जागत थिये। तिन्हेरा अप्पु मिचे मेल होई गेया। से सभ गिट्ठे खेलन्दे अते ईन्दे जान्दे थिये। राजे रे पुत्रे बोलेया जे मिजो पढ़ाई देया ब्राह्मणे बोलेया जे मैं किहयां पढ़ाणा हुअं बड़ा गरीब है ।

इक रोज तित्ते इक साधु आया। साधु कने ब्राह्मणे रे पुत्र बड़े प्रेमा कने मिले साधु ने गलाया जे वाह्मण तू इन्हाँ रजकौरां जो पढ़ाई दे। ब्राह्मणे गलाया जे हऊं ता बड़ा गरीब है तुसी पढ़ाई देया । तां साधू ने गलाया जे हंऊ इन्हा दोहना जो पढ़ाई देला जें खरा पढ़ी जाल्ला से मैं लेई लैणा दूआ तुसां जो देई देणा। साधु तिन्हां दोहनां जो लेई गेया । पहले साधु ने तिन्हेरी परख करणा लाई दो घड़े तिन्हा जो देई दित्ते अते गलाया जे अगासे रा पाणी लेई ईणा। निक्के जागते ने साफा बछाया अते तिस पर त्रेल वटोली करी घड़ा भरी लेया। बड्डा सारे तोप्पी रेहया पर तिसजो त्रेल नी मिल्ली । थोड़ी कर वून्दा लेई करि लेई चलेया तिनि निक्के जो पूछेया जे तैं पाणी किहआं अन्दा? उनी गलाया जे साफा पीड़ि करि घड़ा भरेया। बड्डे ने गलाया जे मैं सभ बटे झम्बे घाह झम्बेया कोई बूंद घड़े अन्दर पेई कोई नी पेई ।

फिरी साधू ने तिन्हेरी दूई पुछयाण करणा लाई दो बकरे तिन्हा जो देई करि गलाया जे इन्हां जो दोंह दिशा वखी लेई जा अते बिना अस्त्रे सस्त्रे इन्हां बकरे जो ऐसी जगा बढणा जित्ते कोई जीव-जन्तु मण्हु चण्हू न दिक्खो। हल्के ने जाई करि दिखेया जे जीव-जन्तु सभ दिक्खन्दे हिन्न दिक्खन्दे दिक्खन्दे रात होई गेई तारे निकली पे।

बड्डे ने कम्म कीता जे कुकड़ी विच बकरा लाई दित्ता बकरे ने तित्ते मुत्री दित्ता तिनि पत्थरा कने बकरा मारेया अते उचोड़ी करि घरा जो लेई आया । साधु ने उसजो पुच्छेया जे तैं क्या कीता उनी सारी गल्ल दसी दित्ती।

फिरि साधु ने हल्के जो पुच्छेया जे तैं क्या कीता। हल्के ने गलाया जे धियाड़ी जीव जन्तु, मण्हु चण्हु दिक्खन्दे थिये राती तारे दिक्खन्दे इधेरे तांई हऊं बकरे जो जीन्दा ई लेई अया तां साधु ने बड़े परसिन्न होई करि हल्का पढ़ाणा लाया ।

शब्द	अर्थ
जागत	लड़के
मेल	मिलन
गिट्ठे	इकट्ठे
ईन्दे जान्दे	आते जाते
रजकौरां	राजपुत्र
तोपी रेहया	ढूंढता रहा
पीड़ि करि	निचोड़ कर
झम्ब	झाड़े

सत्त भैणा दी कथा

—आत्मा राम

इक ब्राह्मण घरा च सत भैणां थियां। तिन्हा दी मां तां गुजरी थी गेइयो। मतेई कनैं बापू जींदे थे। सैह घरा च नौ जणे थे। तिन्हा गें इक गा थी सैह जे रोज नौ लड्डू करदी थी। सैह नौआं जो इक इक दे साहबे ने पूरे होई जांदे थे। इक दिना मां मतेइयां बोलिया तिना दे बापुए जो 'जे एह कुड़ियां नीं होण तां असां दे लड्डू सत बची सकदे'। इक दिन बरखा लगियो थी, बड़ी भारी। बापुए बोलिया कुड़ियां जो' चलो बच्चा! तुसां जो मामेयां दें छड्डी औंदा।"

सैह छत्रोडू ओडी ने तिन्हां जो लई गया। बड़ी दूर चली गए। तां इक्की रिड़िया पर तिन्नी तिन्हा जो बठाईता। छत्रोड़ू तिन्हागें देई ता। तिन्हां जो गलाया के जे छत्रोड़ रूढ़ी जांगा, उड़ी जागां, तां समझनों कि तुसां दा बापू रूढ़ी गेया। सेह तेथी बैठी रेइयां। हवा ने छत्रोड़ उड़ी गया। तां सैह कुड़ियां बोलण 'ओह गया मेरा बापू, रुढ़दा। ओह गया मेरा बापू रुढ़दा'। उतांह गाई लड्डू देणे बन्द करीते। फेरी तिन्हा भैणा जो इक तिल मिल्लेया। तिन्हे सैह सत्ती भैणी मिली ने खादेया। सारेयां ते छोटियां जो थोड़ी भुख रई गई। छीहं भैणी अपणे दंदा ते झूठ कड्डी; तिसा जो दित्ती। सैह वी रज्जी गई। फेरि क्या होया, भई, तिन्हां जो इक बेजी मिल्ली। फेरि सैह मुणी थी।

इक जगह बड़ी दूर अग सुझी बलियो। सारेयां ते बड्डी भैण गई आगी लयौणा। तेथी जाई घरा-आलिया जो बोली, "मासी! मासी! अग्ग दे"। सैह बोली "जा तेरा मासड़ है बोहड़ी। उस ते लई लै।" सैह बौहड़ी गोथी। राक्षसी बढी-टुक्की नै मुंडी अल्मारिया रखी ती। बड़ी देर होई तां दुई गई। भई मैं दिखां जाई ने कि बोबो कैंह नहीं वापस आई। तिसा दा वी एह ई हाल होया इयां छे भैणां राक्षसे बढी दितियां।

गई सतमी। सैह पुछणा लगी "मासी! मासी! एथु मेरियां छे भणां आईयां थियां?" मासियां बोलेया 'एथी नीं आइयां"। राक्सणियां तिसा जो आटे बटणे जो गलाया। जाहलु सेह आटा छाणना लगी, तेथु इक चुआ आया। सह कुड़ी तिहजो नठाणा लगी। तां तिन्ई बोलेया "जे तू मिजो आटा खाणा दिगी तां मैं तिज्जो इक गल्ल दसगा।" तिसे आटा खाणा ता। फिरी चुए बोलेया "तेरियां छे भैणां जे आईयां थियां सैह इसा अल्मारिया च हन।" फिरी तिसै अल्मारी खोली। भैणां दियां मुंडियां तिसा च थियां। कई हासण। कई रोहन। तिन्हे मुंड्डियां अपणिया भैणा जो बोलया "जे बचणा ए तां तोआ, प्रातड़ा सब किछ समान लई ने नठी जा"।

समान, लटरम-पटरम चुक्की नै सरन्हट लगाई, नठी पई ।
वास्ते राकसणी दौड़ी पई। अगौ कुड़ी कने पिच्छैं राकसणी
राकसणी तिसा जो चुक्की, घरे रखी ने फिरि जा, कुड़िया,
दियां सारियां चीजां मुकी गइयां इक इक करी । फिरि अग्गैं
इक रुख आया। इस च ढोढ था। जान बचाणे जो सह कुड़ी तिसा च लुक्की गई। ढोढा ते इक ऊंगली—चीची—बाहर रई गई । राकसणिए सैह चवाई लई । कने बोली, "सुआद तां तू बड़ी थी, पर चलीं ई गई।" सह रुख राजे दा था । तिसजो बढणे वास्ते तरखाण आए । सेह कुड़ी ढोढा ते बोली, भाखा लगाई:—

"भाइयो ! तरखाणो !
ढक्का ते बढणों
चूंडिया तै बढणों ।
गब्बे ते कोरी कोरी कढणो ।"

तरखाण डरे भई कोई भूत-चुड़ेल है इस रुखा च बड़ेया। सह राजेगैं गए। सारी वारदात सुणाई। फिरि राजा सौगी आया। राजे वी कुड़िया दी एह गलांदी सुणेया । तिया ई रुखा जो बड्डेया । तरखाणे एह ई किता । ढका चूंडिया ते तां रुक बढीता । गब्बे ते कोस्ता ने कोरी कोरी कढेया। तां रुखा ते इक बड़ी सोहणी छैल कुड़ी निकल्ली। सह राजे ब्याई लई।

दिन बीतदे गए । कई दिनां बाद तिसा दैं मुन्नू होया। मुडुए दा पंजाप करना था। तिसैं बोलया भई मैं अपणा बापू बुलाणा। सददा कुण जांगा? चिड़या ते पुच्छेया "मेरे प्योकियां दे जाई औंगी ?" तिसैं गलाया "जाई औगी ?" क्या बोलगी "चीं ! चीं ! चीं !" फिरि कौआ जो पुच्छेया "जाहंगा" ? "हां ?" क्या बोलगा "कां ! कां ! कां !" इयां तिसैं मतेयां पकसियां जो पुच्छेया। कोई ठीक सन्देस न दे । फिरि खीरे च ककूए ते पुच्छेया। " तू क्या बोलना ?" सह बोलया:—

"कूकू भाटा ! कूकू !
सत्त भैणां थियां, कूकू !
छै राक्षसे खादियां, कूकू !
सतमी राजे बचाई कूकू !
उहदै लड़का जाया, कूकू !
उन्हे अपणा बाप सदाया, कूकू!
झगू-टोपू मंगाया, कूकू !

मां-मतेइयां एह सुणेया "सह सब किछ समझी गई। सारा समान तिसैं त्यार कराया। गठड़ए च बन्नी ने बापुए जो भीआगा भेजीता। बापू राजदरबार च पहुंची गया। तिहदा कुड़ियां खूब आदर सत्कार किता। माऊ वास्ते एक पटारी भराई तीं जिस विच सरप, धरमोड़ियां, रंगड़ बगैरा भरी ते। कनै बापुए ने स्नेया भेजेया के "नौहाई धोई नै मतेई किहली ई इसा जो खोलै।" बापू पटारिया जो घरै लई आया । जालू मां-मतेइया सारी गल्ल, सुणी, सोचया "इसा पटारिया च पता नहीं क्या क्या भरेया होंगा।" सैह बड़ी

खुसी थी । तिसै नोहई-धोई करि, ओबरिया, दुराजा बन्द करि के सह पटारी खोली । फिरि क्या ? मार सप्प धरमोड़ा, रंगड़ बगैरा तिसा जो सचणा लगे । सैह रड़ाई, "खाहदी ! बाहमणा ! खाहदी !" खसम बाहर बैठेआ था । सोचै पटरिया च बबरू सुहाल् होंणे; कने सैह खा दी होणी । ताईं इयां गला दी । सैह वी जोरा नै गलाणा लग्गाः—

हऊं खाई आया, रंडे । तू खाह ।

सैह मतेई रोन्दी रई । सरपे, रंगड़े खाई छुड्डी खीरे च ब्राह्मण दुराजा तोड़ेया, अन्दर ओबरिया गया । क्या दिखिया, सै तां मरी पैइयो थी ।

शब्द	अर्थ
मतेई	बिमाता, सोतेली मां
छत्रोड़ू	छाता
रुढी गेया	बह गया
बलियो	जली हुई
बढी दितियां	काट दीं
ढोढ	खोल
गब्बे	बीच
कोरी	साबुत
छैल	सुन्दर
कुड़ी	लड़की
रड़ाई	चीखी

सीह सतैं

—शेष अवस्थी

कुसी जमानें दी गल्ल ऐ। भादरू म्हीने दे चानणे पकवे दिया सत्तीं तित्थी घ्याड़ी इक्कि ग्राएं दे मते सारे गुआल रिढ़ियां पर डंगरां चारा करदे थे। तिन्हां सारेयां देयां मथ्यां मर कुंगुए ना टिक्का लगिहा था। अपण इक्कि गुआलु दे मत्थै टिक्का नी था। होर सब गुआलू अप्पू चैं खेलणा लगि पैं। जिन्नी गआलुए टिक्का नी लाया था, सैह बी तिन्हां सोग्गी खेहलणा लग्गा ता होरनां बोल्या, "तू नी खल्हाणा असां। तैं मत्थे टिक्का नी लह्या" तिस बचारे जो चिग आई गई कनैं सैह अपणे घरे जो हटि गिआ घरैं तिस गुआलुए दी मां ई थी। तिन्नी माऊ ते पुच्छया, "अम्मां, होरनां सभनां गुआलुआ मत्थैं टिक्का लह्या कनै तैं मिजो टिक्का कैंह नी लाइ दिह्या था। मैं मिजो नी खल्हा करदे।" तिसदियैं माऊ बड़े प्यारे नै तिस दे सिरे पर हथ फेरया कनैं बोलणा लग्गी, "बच्चा, तिन्हां सभना दियां बैह्णीं तिन्हां जो टिक्के लाहयों हुंगे। अजके रोजे भैंणी भाउआं जो टिक्का लान्दियां।" तिन्नी माऊ ते पुच्छया, "मेरी बैह्ण नी ऐ कोई बी?" माऊ बोल्या, "बच्चा तेरी बेह्ण ता ऐ अपण सैह बड़ी दूर बिहाइयो।" सैह बोलणा लग्गा, "अम्मां, मैं अपणिया बेह्णी वाल जाइ करि तिसा ते टिक्का जरूर लुआणा। तू मिजो दस जे सैह कुथु ऐ?" मां देही तिस्यो समझाणा लगी, "मुन्नु, तिसा वाल जाणे ताएं बत्ता इक वण लंघणा पोन्दा। कनैं तिज्जो ते किल्हे ते तित्थई नी जाइ होणा।" अपण सैह नी मन्या तिन्नी माऊ ते अपणिया बेह्णी दे घरे दी बत्त पुच्छी कनैं ताहलू ई तित्थु जो, चलि पिआ।

सैह चलदा-चलदा बणे विच पुजि गिआ ता तिस्यो तित्थु मिरग-मोर कनैं होर कइयां भांतीं दे जीव-जन्तु मिलणा लगि पै कनैं सैह बचारा डरि गिआ। अपण फिरि बी तिन्नी हिम्मत नी हारी कनैं अग्गैं चलि ई रिहा। गांह जन्दे जन्दे जो तिस्यो इक सैर मिलि पिआ। सह् गरड़ा करदा था। तिस सेरे दिया गरजा सुणि करि कनैं तिस दिया नुहारि दिक्खि कर तिस बचारे दे धात्तु सइ गै। तिस्यो बसुआस होई गिआ जे मैं हुण नी बचया। अपण ता बी सह् अग्गैं बधदा ई रिहा। जां जे सेरैं सैह दिया ता सह् तिस वाल आइ रिहा। गआलुए दी पैह्लैं देहिया ता होस ई नेड़ैं नी रही अपण फिरि तिन्नी हिम्मत करि की सेरे जो बोल्या, "भाऊ, मिजो मत खान्दा, मैं अपणिया बैह्णी वाल चल्लिहा ऐ।" सेरैं गरजि करि बोल्या, "तू क्या बोल्ला करदा जे खान्दा मत ? मिजो तां कइयां घ्याड़या परन्त सकार मिल्ला। मैं भुक्खैं पेट्ट अपणैं घरैं आह्यो सकारे जो छड़ि दिआं? मैं ता तू जरूर खाइ जाणा कनैं अपणी भुख बकाणी। तू बैह्णी छड्डि करि कुथी जो बी चल्लिहा होए।"....

तिन्नी मुण्डुऐं दिक्षा जे हुण बचणा ता है ई नी। तिन्नी सेरे जो हत्थां जोड़ि कर गलाया, "अच्छा भाऊ, तू मिजो खाई जयां, अपण पैहलैं मैं अपणिया बैह्णी ते टिक्का

लुआइ औन्दा। मिजो पर बसुआस कर। मैं जरूर हटि करि तिज्जो बाल आई जाहं्गा।" सेर बोलणा लग्गा, "तेरा क्या बसुआस तैं काह्लु ओणा कि ओणा ई नी कनैं मिजो ता लगि भुख।" तिन्नी मुण्डुएं सेरे जो बचन दित्ता हटि ओणे दा अपण सेरे जो बसुआस नी होया। तिन्नीं बोल्या, "चल, मैं बी तिजो सोग्गी चलदा। अपण दिखयां तित्थू बड़ी हाण मत लान्दा।" कनैं सेरे तिस सोग्गी ई चलि पिआ। मुण्डुएं बोल्या, "मैं मन्दलुए सुकणे ते पैह्लें पैह्लैं हटि ओहंगा।

जान्दे जान्दे सै बह्णी दे घरे बाल पुजि गे ता तिन्नीं मुण्डुएं सेर घरे ते रुआह् देहिया ई इक्कि द्रिढ़ि दे बूटे कनैं बन्हि पाया कनैं अप्पू बैहणी दे घरे जो चला गिआ। बैहणी देहिया जो पता लग्गा जे मेरा भाऊ अह्या ता सैह फरल्होइ पई कनैं झांबड़ी पाइ करि तिस नैं मिलणा लग्गी। तिन्नैं भाउए ने माऊं दा सुखसान्त पुच्छया फिरि बोलणा लग्गी, "मिआ भाऊ, तू एड्डे घणे बणे चियैं किल्हा ई किह्यां चला आया तिज्जो मिरगां-सेरां दा डर नी लग्गा? तिज्जो अज मेरी याद किह्यां आइ गई।" तिसादे भाउएं बोल्या, "बैहणी, तू झट कर कनैं मिजो तमोल लाइ देह्। मैं सैरे जो वचन देई करि अहया जे मन्दलुए सुकणेते पैहलैं पैहलैं मैं तिज्जो बाल आइ जाहं्गा। नहीं ता सैह् ता मिजो ताहलू ई खाणा लगि पिहा था। अपण मैं टिक्का जरूर लुआणा था। इद्धे ताएं सैह् बड़िया मुस्कला ने मनह्या।"

बहणीं पुच्छया तिसने, "सैह् सेर कुत्थु ?" तिन्नी बोल्या, "सैह मिजो सोग्गी ई चला अह्या कनैं मैं तुसां दे घरे पचाहं इक्कि द्रिढ़ि दे बूट्टे नैं तिस्यो बन्हि अह्या। अपण तू झट करइ मिजो तमोल लाइ दे। तिन्नैं बोल्या, "तैं तिस नैं मन्दलुए सुकणे ते पैहलैं पुजणे जो गलह्या न? मैं दिहा मन्दलू पाणा जेहड़ा सुक्के ई नी।" कनैं फिरि तिन्नैं घीउए दा एक मन्दलू तित्थु पाइ दित्ता कनैं तिधि पर खड़ेरि करि तिस्यो तमोल लगाइ दित्ता।" फिरि तिन्नैं मते सारे पकुआन पकाए कनैं इक्कि उल्ला च पाइ करि भाउए देहे जो बोल्या, "चल, दस्स सैह् सेर कुथु ऐ। सै दोहयो कनैं घरे दे होर माह्णू कनैं तिस ग्राएं दे सब लोक पकुआन्नां दिया डल्ला चुक्कि करि सेरे बाल चलि पै। गांह् सेर द्रिढ़ि दे बूट्टे नैं बज्झेया कचालुए दे पतरे पर बैह्ठया था।

तिस मुण्डुए दी बैह्ण गई। तिन्नैं सेरे दी पूजा कित्ती। तिसदे मत्थे पर टिक्का लगाया कनैं सारे पकुआन तिसदे मुंहे बाल खाणे जो थई दित्ते। सेर तिन्हा पकुआन्नां खाणा लगि पिया। ग्राएं दे लोक तिस सेरे दे ताएं बकरयां लइ आए। सेरैं सै बी खाइ छड्डे फिरि सैह् मुण्डू सेरे बाल गिआ कनैं लगया, "लैह भाऊ, मैं आइ गिआ। तू मिजो खाइ लैह्। मैं बचने दा बद्धया तिज्जो बाल पुजि गिया। तू चल्लि करि दिक्खि लैह् जे हाल्ली मन्दलू नी सुहक्या।" सेरैं बोल्या, "भाऊ, मेरा पेट पकुआन्नां कनैं बकरुआं न ई भरोइ गिआ। हुण मैं तू कजो खाणा। दुएं पास्सैं तेरी यैं बैह्णीं मिजो तमोल लाइ दित्ता। एह् मेरी बैहण बणि गई कनैं तू मेरा भाऊ अपण इक कम करयां भई इस बणे चियैं किल्ह दुकिल्ला मत ओन्दा-जान्दा। अज ता मैं तिज्जो अप्पू घरैं छड्डी ओन्दा अपण गांह जो इसा गल्ला गट्ठी बन्हि लैह्।" तिस मुण्डुए दी बैह्ण बी खुसी होइ गई कनैं तिस ग्राएं दे होर लोक बी। फिरी सैह् मुण्डू कनैं सेर तित्थू ते चलि पै। सेर

ज ज

तिस्यो तिसदे घरे तिकर छड्डि गिआ । जां जे तिन्नीं अपणीया माऊ कनै एह् सारी गल्ल सणाई ता सैह् भचक्क रहि गई कनै तिन्नैं सैह् अपणिया हिक्का नैं लाइ लिआ । तथैड़ी ते लइ करि तिस ध्याड़े दा नां सीह् सत्तैं पइ गिआ कनै सब जणासां बिट्टियां अपणयां भाउआं जो तमोल लाणे ते पैह्लैं कचालुए दे पतरे पर सीह (सेर) पेड़ि करि कनैं तिद्धैं बक्खैं द्रिढ़ि दा बूटा रक्खी करि पूजणा लगि पइयां ।

शब्द	अर्थ
सोग्गी	साथ
माऊ	मां
मत्थैं	मात्थे पर
बिहोइयो	शादी हुई
बत्त	रास्ता
गांह	आगे
नुहारि	शकल
सकार	शिकार
वसुआस	विश्वास
सुख-सान्त	कुशल क्षेम
तमोल	विशेष टीका
मुस्कला ने	कठिनाई से
पचाहं	पीछे
थई दित्ते	रख दिए
किल्हा दुकिल्हा	बिलकुल अकेला
भच	अकस्मात

सून केसी

–शेष अवस्थी।

इक था सहुकार । तिसदे थे चार पुत्तर। तिन्हां चौहीं च बड्डे-बड्डे त्रै हो ता किछ न किछ कम कमान्दे रेहन्दे थे अपण लोहका दिहा किछ बी नी कमान्दा था । इद्धे ताएं सहुकार तिसते नराज रेहणा लगा । अपण माऊ दे मने दिया कुण बुज्झे । तिसा जो ता सै-सारे ई इक्को देहे प्यारे थे । सैह् तिम्यो बी सैहा दिहा चाहन्दी थी जदिहा बडेयां त्रीहं पुतरां जो । तिन्नै इक रोज सौ रूपैये अपणे लोहके देहे पुतरे जो दित्ते कनैं बोल्या, "बच्चा, इन्हां ढउग्रां नैं किछ बपार करि उरया ।"

सहुकारे दा लोहका पुत्तर तिस सौए रूपैये नैं इक चूहा मुल्लैं लइ आया । तिसदी मां तिस चूहे दिक्खि करि अपणे मत्थे ठोरना लगि पई । तिन्नैं बोल्या, "मिग्रा बच्चा, तू कैंस लइ आया ? अच्छा जे लइ ई आया ता इस्यो नाजे दे भंडारे च छडि देह् ।. तित्थू एह् नाजे खान्दा रैंह्गा ।" तिन्नी सैह् चूहा नाजे दे भंडारे च नी करि छड्या ता चूहा बोलणा लग्गा, "अरा भाऊ, तैं ता बड़ा खरा कित्ता अपण जाह्लू तिज्जो कोई ग्रोखी पोहंगी ता मिजो पकारि लिग्रा ।" कनैं फिरि चूहा नाजे दियां बोरियां च बड़ि गिग्रा ।

सहुकारनियैं इक ध्याड़ा भिरि अपणे लोह्के पुत्तरे जो सौ रूपैंया दित्ता । सैह् तिधी नैं इक बिल्ली मुल्लैं लइ आया । माऊ जो ता बी बड़ा दुख होया कनैं सैह् बी तिन्नैं तिसते अन्दर छडेरि दित्ती । बिल्लियैं बी जान्दियैं जान्दियैं बोल्या, "भाऊ, कोई ग्रोखी पोहंगी ता मिजो मदि लिग्रां ।" त्रीखरी माऊ ते रूपैयां लइ करि सैह् इक तोता खरीदि करि लइ आया । माऊं दुखी होइ करि सैह् बी छडुग्राइ दित्ता । अपण सैह् बी चूहे कनैं बिल्लिया साही गलाई करि ई उड़या ।

चौथी बरी तिन्नी माऊ ते सौ रूपैये लै कनैं चलि पिग्रा । गाहं इक मदारी मिल्ला तिम्यो । तिस बाल इक जबरा दिहा सर्प था । सहुकारे दे पुतरैं तिस सौए रूपैये ने तिसते सैह् खरीदि लिग्रा कनैं घरे जो हठि आया ।

घरें आइ करि माऊं सैह् सर्प दिख्या ता तिसा दे कोह्टड़े होइ गैं जलि करि । तिन्नैं सैह् ताहलू ई ट्हाइ दित्ता घरे ते । बोल्या, "इस सर्पे हुण ई बाह्र दूर दोहिया छड्डि उरया ।" सैह् तिस सर्पे जो लइ गिग्रा कनैं इक्कि ठाहरी घाए पर छड्डि दित्ता ।सर्पे बोल्या, "अरा भाऊ, इह्यां मत छड्डें मिजो । मेरे सरीरे च हुण जोर नी रिहा । मिजो ते तौलैं तोलैं हाण्डि नी हुन्दा । कुह्तकी कां घटारियां ई मिजो

ठुंगदिग्रां रैह्णा । तू दिहा कर जे मिंजो लइ चल कनैं जित्थू मैं गलाहगा तित्थू छड्डी दिग्रां ।

सहुकारे दा लोह्का पुत्तर सर्पे जो चुक्कि करि लइ चल्या । इक्कि ठाह्री इक बड़ी भारी बामी बत्ता दे बक्खैं ई थी । तिसा बामिया दे इक्कि बक्खैं इक ब्डड़ी देही भ्रोर बी थी । सर्पें तित्थू तिस्यो बोल्या, "तू मिंजो इत्थू छडि देह्, अपण मरिया पूछां जो पकड़ि ई रख्यां, छड्दा मत सहुकारे दे पुतरें मैह सर्प पूछा ते पकड़ि करि धरती छडि दिता कनैं सर्प बामिया दिया भ्रोरि जो बड़ी गिग्रा कनैं मैह् बी सर्पे सोग्गी ई भ्रोरि च बड़ि करि बुन्हें जो लोहि गिग्रा ।

सैं दोह्यो लोहन्दे लोहन्दे बड़ी हेठ लोहि गै ता गाहं इक सैहर् ग्राइ गिग्रा । सहुकारे दा पुत्तर तित्थू बड़ेयां बड़ेयां बांक्या मैहलां दिक्खि करि भचक्क रहि गिग्रा । तिन्नी दिख्या जे तिन्नी सर्पें बी अपणा कचुंग्रा लुग्राहि दित्ता कनैं अप्पू माह्णू बाणि गिग्रा । तिन्नी सहुकारे दे पुतरे जो बोल्या, "चल मैं तिज्जो अपणे राजे बाल लइ चलदा ।" कनैं सैं दोह्यो जणे मैह्लां अन्दर बड़ि गै । अन्दर बड़ियां-बड़ियां मुच्छां वाला सर्पा दा राजा संघासणे पर बैह्ठ्या था । माह्णुए दे रूपे वालैं सर्पें गाहं् जाइ करि तिस राजे जो मत्था टेक्या । राजैं बोल्या, "तू ग्राइ गिग्रा भई ? मतें रोज लाइ दित्ते तैं । क्या हाल रिहा तित्थू तेरा ?" सर्पें बोल्या, " महाराज, पुच्छा ई मत । मदारिये दे बसैं, पइ करि ता मेरी बास ई नी रही । राजैं पुच्छेया, "ग्रा तिज्जो सोग्गी एह् कुण ऐ ? "सर्पें बोल्या, "महाराज, एह् इक्कि सहुकारे दा पुत्तर ऐ । कनैं इन्नी ई मिंजो तिस मदारिये ते मुल्लैं लइ करि तिसते मेरी खल बचाई ।" राजैं सहुकारे दा पुत्तर अप्पू बाल सद्दि करि बक्खै बिहालि लिग्रा कनैं तिसदा बड़ा ग्रादर-सत्कार कित्ता । फिरि सहुकारे दा पुत्तर तित्थू ई रैह्णा लगी पिग्रा ।

तिस्यो तित्थू रैह्न्दे जो मते ध्याड़े होइ गै ता सर्पा दे राजे जो तिस दा सभाव गम्मि गिग्रा । तिन्नी सोच्या, 'मेरी इको-इक धी ऐ जे इसा जो धरती दे मनुक्खे जो बिहोइ दिग्रां ता खरा रैह्णा कनैं मुण्डू बी माड़ा नी ऐ । तिन्नी अपणे बजीर पुच्छे कनैं अपिणया धिया दा ब्याह् सहुकारे दे पुतरे नै करि दित्ता । फिरि बी सहुकारे दा पुत्तर तित्थू ई रैह्न्दा रिहा । तिसदा ठाठ बाठ राजयां वाला होइ गिग्रा । सर्पा दे राजे दी देह् बड़ी ई छैल थी कनैं तिसादे सिरे दे बाल बी सून्ने दे थे । सैं दोह्यो जणे खूब खुसी होई करि रैह्न्दे थे ।

इक ध्याड़ा तिन्नी अपणिया लाड़िया जो बोल्या," अड़िये, हुण असां अपणे घरे जो चलि पोन्दे ।" तिन्नैं बोल्या, "बापुए जो पुच्छि लैन्दे । जे सैह् मन्नि जांहगा ता चलि पोहंगे। अपण इक गल सुणी लैह् जे बापू तिज्जो ते पुच्छगा जे तुध क्या लैणा, ता तू पैह्लैं तिस दे वचन लइ लिग्रां । जे बापू वचन देइ दिहगां ता तिस दे हत्थे दियया मुदरिया मग्गि लिग्रां ।"

- -

तधेड़ी संझा सहुकारे दे पुतरें सोहरे वाल जाइ करि गाया, "महाराज, मिंजो इस लोक्के च आह्‌यो मते रोज होइ गे । हुण असां दोहयो अपणे घरे जो चलि पोन्दे ।" सोह्‌रें बोल्या, "तुम्हारी मर्जी जे चलिआं ई जाणा ता । अच्छा, तिज्जो जे किछ चाहिदा सैह मंगि लैह " सहुकारे दे पुतरें बोल्या, "महाराज, जे तुसां वचन देन ता मैं किछ मंगां ।" सोहरें वचन देइ दित्ता ता तिन्नी बोल्या, "महाराज, मिंजो तुसां दे हत्थे दी मुंदरी चाहींदी, होर किछ नी ।" सप्पां दा राजा नट्ट होइ करि तिस बखी दिखणा लगि पिआ । कनें फिरि तिन्नी अपणे हत्थे मुंदरी खोह्‌लि करि जुआइये जो देइ दित्ती कनें बोलणा लगा, " मैं तिज्जो अपणी धी ई नी, अपणा सर्वस देइ छडयाए । हुण तुसां दोहयो जणे धरती पर जाइ करि जिह्यां मरजी तिह्यां रिहा ।" दूएं रोजें भ्यागा ई तिन्नी भरोइयां हाखीं सै दोह्‌यो जणे विदा करि दित्ते । कनें सै धरती जो लोहि आए ।

धरती पर आइ करि सहुकारे दा पुत्तर अपणे घरे जो चल्या ता तिस दियैं लाड़ियैं बोल्या, "मैं ता तिस घरें नी रहणा ।" सह बचारा चिन्दा च फसि गिआ जे तिस घरें नी रहणा ता असां कुथु रहगे कनें क्या खाह्‌गे? तिन्नें बोल्या, तू चिन्दें मत ।" कनें तिसा मुंदरिया कड्‌ड करि तिनें तिसा जो धूप दित्ता कनें बोल्या, जै परमेसरिये मुंदरिये, इत्थू इक दिहा मह्‌ल बणि जाए जिस विच घरिस्ती दी सारी चीज बस्त होए ।" पलां-छिनां च ई तित्थू इक बड़ा बांका महल बाणी गिआ कनें अन्दर रोजके बर्तणे दियां सारियां चीजां रखोइ गइयां । हुण सहुकारे दे पुतरे जो तिसा मुंदरिया दे चमत्कारे दा पता लग्गा कनें अपणे सोह्‌रे दी गल्ल बी समझोइ गई । फिरि सै दोह्‌यो मजे नें तिस मह्‌ले च रहणा लगि पैं । तिन्हा जो जिसा बी चींजा दी जरूरत हुन्दी सैह तिसा मुंदरिया ते मंगि लन्दे थे ।

इक रोज सहुकारे दे पुत्तरे दी लाड़ी अपणे महल्ले दे चबारे पर बहि करि सिरे पाह्‌ग्ना लगिहां थी ता तिसा दे सिरे दे दो त्रै केस झड़ि करि उड़ि गे कनें मह्‌ले दे बक्खें वगदिया नदिया च जाइ पै । सै केस इक्की मछियैं निगलि छड्‌डे । सैह्‌ मच्छी नदिया दे पाणियें च पता नी केड्‌डी की दूर लोहि गई कनें इक रोज इह्‌कसी झीरे दे जाल्ले च फसि गई । तिन्नी झीरें सह्‌ मच्छी होरना मछियां सोग्गी राजे जो देइ घल्ली । राजे दिआं नौकरां सैह्‌ मच्छी चीरी ता तिसा दे ढिड्‌डे च सून्ने दे केस दिक्खि करि सै बस्मै होइ गे । तिन्हां सै केस राजे वाल नी करि दुस्से । राजा सून्ने दिआं केसां दिक्खि करि बकलोइ गिआ । सैह्‌ सोचणा लग्गा, 'जिसा जणासा दे केस ई सून्ने दे हन सैह्‌ अप्पू केदेही छैल हुंगी । सैह ता मैं जरूर दिखणी कनें अपणैं बेह्‌डैं पाणी ।' चिन्दि-चिन्दि करि तिन्नी अपणिया रियास्ती दियां सारियां दूतियां सदाइ लईयं कनें तिन्हां ते पुच्छया जे तुसां क्या-क्या कम करि सकदियां । तिन्हां सारियां दूतियां अपणे-अपणे करने जोग्गे कम दस्सि दित्ते । पिछूए देहिया ते दो दूतियां रहियां । तिन्हां च इह्‌कनी बोल्या, "महाराज, मैं स्वर्गे छींडा पाइ सकदी ।" दूइय बोल्या, "महाराज, मैं अम्बरे च टल्ली पाइ सकदी ।"

राजैं स्वर्गे छींडा पाणे वाली दूती किल्ही देही सद्दी कनैं तिसा जो बोल्या जे तू तिसा सून्ने दिम्रां केसां वालियां जणामा जो तोपि करि लइ उरया। तिन्नैं बोल्या, महाराज, सून्ने दिम्रां केसां वाली जणास ता म्रसा इक्को ई सुणिहो। कनैं सैह् पताले च सर्पा दे राजे दी दे ऐ। सैह् इत्थू किहां म्राइ गई हुंगी? म्रपण मैं तिसाजो तोपणे दा जतन करदी ऐ। तुमां किछ नौकर कनैं ढउए-पैसे मिंजो वाल देइ दिम्रा। राजैं तिहां ई कित्ता कनैं स्वर्गे छींडा पाणे वाली दूती सून केसिया दिया तोप्पा जो निकलि गई।

तिन्नैं दूतियैं पैह्ले ता सैं नौकर पुच्छे जिन्हां मच्छी चीह्रियो थी जे तिन्हां वाल कुण झीर तिसा मछिया दे गिम्रा था। फिरि सैह् तिस झीरे वाल जाइ रही। तिन्नैं झीरे ते पुच्छया, "तैंजे राजे जो मछियां दितियां थियां स कुसा नदिया च पकड़ियां थियां?" झीरैं सैह् नदी दस्सि दित्ती ता दूतियें फिरि पुच्छ-या, "मच्छी लुम्राहे दी थी कि कुम्राहे दी?" झीरैं बोल्या मैं जे मछियां पक-ड़ियां थियां सै लुम्राहे दियां थियां।"

दूती तित्थू ते चलि गई कनैं जाइ करि तिन्नैं इक बेड़ी त्यार करूम्राइ कनैं तिसा नदिया च उपरले पास्से जो चलदी गई। बेड़ी रात-ध्याड़ी चलदी रही। जां जे इक्कि ठाह्री दूतियैं नदिया दे बक्खैं ई एक मैह्ल दिख्या ता तिन्नैं बेड़ी तित्थू रूकवाइ दित्ती। तिन्नैं दोइयां जो बोल्या, "जाह्लू तइयैं मैं हटि करि नी म्रोह्गी, तुम्रां इत्थू ई रैंह्न्यो।" कनैं म्रप्पू मैह् बेड़िया ते उतरि करि तिस मैह्ले दे पास्से जो चलि पई। तिन्नैं रूम्रांह-पराह् पुछ-गंग करि लई जे एह् मैह्ल कुसदा ऐ कनैं कदी बाणिहा। इस बिच कुण-कुण रैंह्न्दा। इस दी मालणी कदेही ऐ? जां जे तिन्नैं एह् सुणया जे इत्थू रैंह्णे वाली जणामा बड़ी ई छैल ऐ कनैं तिसा दे बाल सून्नेदे बझोन्दे ता तिसा जो बमुम्रास होइ गिम्रा जे सैंह् पताले दे राजे दी दे सून केसी ई ऐ।

सैंह् तिसा म्हेलिया म्रन्दर चलि गई। ताह्लू सून केसिया दा घरे वाला तित्थू नी था कनैं सह् किल्ही ई थी। दूतियैं जान्दियैं ई तिसा ते पुच्छयां, "सणाह् वो मिये भाणजिये, तू इत्थू किह्यां म्राइ रही?" सैंह् तिसो जो पुछ दीं पुछ दी तिसा दे छलैपे दिखि करि हरैन बी होम्रा री थी म्रपण तिसा जो पैह्लैं ई बसुम्रास होइ गिम्रा था जे एह् सून केसीई ऐ। सून केसियैं बोल्या, "तू कद की मेरी मासी चलि म्राई? मरी ता कोई मासी ई नी ऐ।" दूतियैं बोल्या, तिज्जो नी ना पता। जदी मैं पताल लोक्के ते कोहि म्राई थी तदी तू निक्की देही थी कन्नैं फिरि मैं बुन्हे जो लोह्ती ई नी। इसा धरती जोग्ग ई होइ गई। तू तित्थू दा हाल-चाल सणाहा तिज्जो दिक्खि करि मैं ता एह् बुज्झा करदी जे मैं म्रपणिया बैह्णी दे घरैं पुजि गहियो। पताल लोक सचमुच पताल लोक ई ऐ म्रपण इसा धरती जो कोहि करि इत्थू ते बी नी खिस्कि हुन्दा। सून-केसिये पताल लोक्के दी गल्ल सुणी ता तिसा जो बसुम्रास होइ गिम्रा जे एह् जबरी पताल लोके ते ई म्राहियो कदकी कन मैं जे इन्नैं पछैणी लई ता एह् मेरी मासी

ही हुंगी । तिन्नैं अपणे ओणे दी सारी कथा तिसा दुतिया जो सणाइ दित्ती जे संझा जो सहुकारे दा पुत्तर घरे जो आया ता तिन्नैं तिसनैं बी गलाइ दित्ता मेरी मासी आहियो । फिरि दूती तित्थू ई टिकि पई ।

सूनकेसिया पर तिसा दूतिया दा जादू खरा पुड़ि गिआ कनैं सैह तिन्हां दिआं सारयां भेदां होलैं-होलैं कढ़ान्दी रही । तिसा जो ए बी पता लगी गिआ जे एह् दोह्यो जणे मुंदरिया तेई ई सब कुछ मगंदे कनैं सैह् जे मंगिये सैह् देइ दिन्दी । दूतियां जो सहुकारे दे मुण्डुए दा पताले जो जाणे ते पैह्ले दा बी सारा पता लगि गिआ कनैं चूहे बिल्लिया कनैं तोतैं जे वचन तिस्यो दित्या सैह् बी तिसा जो पता लगि गिआ ।

इक ध्याड़ा जाल्लू सहुकारे दा पुत्तर घरैं नी था ता दुतियैं सून केसिया जो गलाया, "चलमिये मुन्निये, असां हंडि-फिरि ता ओन्दियां । अन्दर रहि-रहि करि बी मह्णू अक्कि जान्दा । सून केसी त्यार होई गई कनैं सैह दोह्यो चलि पइयां । दूती अपणियां पणीहां जो अन्दर ई छड्डि आहियो थी । थोह्ड़ी देही दूर जाइ करि तिन्नैं बोल्या, "मेरी बी मत्त मरोइ गहियो । मैं नंग्यां पैरां ई चलि आई कनैं पाणिहां घरैं ई रहि गइयां । मैं झटपट तिन्हां पाई ओन्दी । सून केसियैं बोल्या, "मैं लई ओन्दी मासी ।" अपण दूती नी मन्नी कनैं सैह" झटपट खिट मरि करि चलि गई । सून केसी तित्थू ई खड़ोइ रही । दूतिया जो पता था जे मुंदरिया जो कुत्थु रखदे । तिन्नैं जाइ करि सैह चुकी कनैं पणिहां पैरैं पाइ करि पलां-छिनां च हटि आई । फिरि सै दोहयो नदिया दे बढ्डैं पुजि गइयां । त्थि द्रेई बोड़िया जो प्जो बढ्डैं लाइ करि बैंहृयो थे । दुतियैं सून केसी फणसेरी कनैं बोल्या," चल अड़िये, अज असां बेड़िया पर बहि करि बी सैल करि लैन्दिया। तिन्नैं सैह् बेड़िया पर बिहाली कनैं द्रैइयां जो सनक देइ कपरि बेड़ी दड़आइ दित्ती। जांजे बेड़ी नदिया च छंडउऐं प र करि बुहलें पास्से जो लोहन्दी गई ता सून केसी डरि गई । तिसा जो पता लगि गिआ जे इन्नैं जबरियैं मिजो नैं छल कित्ता कनैं हुण कुहतकी जो लइ चलि हो । सैह सोंच्चे जे मैं नदिया च छाल ई देई दिआं ता नदिया च पाणी बड़ा भारी ऐ । हारि फारिकरी सैहृ बेड़िया च बहि रही कनैं दूतिया जो बुरा-भला गलान्दी रही । अपण दूतिया दा ता तका-बजा ई होर होइ गिहा था । सैह कड़कि करि बोलणा लगी, "डोल बही रैह । मैं तू मारना नी चलाहियो ।" सून केसी बचारी चुप होइ गई । तिसा जो इक आस थी जे सहुकारे दे पुतरे जो जाहलू पता लगणाऐ ता तिन्नी मुंदड़िया जो गलाइ करि नैं मैं अप्पू वाल सदुआइ लैणी ऐ । तिसा जो क्या पता था जे जबरी मुंदरिया बी कढ्ढि करि लइ आहियो ।

जां जे सैह् बेड़ी तिस राजे दिया रियास्ती च पुजि गई ता दूतियैं सून केसी बेड़िया ते लुआही कनैं नौकरां-चाकरां वाल पकड़आई करि राजे दे बेहड़ैं पुजाइ दित्ती कनैं राजे बाल सम्हालि दित्ती । तिन्नैं राजे ते मता सारा धन लिआ कनैं राजैं बी बड़िया खुसियानैं सैह् तिसा जो देइ करि सैह् विदा कित्ती । दूतियैं मुन्दड़िया दी गल्ल कुसी जो नी दस्सी कनैं अपणे घरे जो चली गई ।

राजैं सून केसी अपणें बह्ड़ैं दिक्खी ता तिस्यो ता एह् बझोया जे मिंजो सारे स्वर्गे दा सुख मिलि गिआ । तिन्नी सैह् दिहा रूप न दिह्स्या था न सुणिहा था । सैह् सून केसिया दे छलैप्पे जो ई दिखदा रैह्‌ा । अपण तिस्यो तिसा नैं गलाणे दी हिम्मत न पोए । फिरि तिन्नीं हिम्मत करि की बोल्या, "सून केसी, तू डरा कजो करदी । तू इन्हां मैह्लां दी राणीऐ । मिंजो तू जे गलाहंगी, मैं सब किछ करने जो त्यार बैह्ठ्या । मेरे बड़े भाग हन जे तू मेरे मैह्ले च आई ।" पैह्ले ता सून केसी चुप-चणत्ती बहि रही फिरि तिन्नैं बोल्या, "राजा, तू मेरे गलाए मुजब करने जो त्यार ऐ ता सुण सैह् जबरी मिंजो नैं छल करि की मिंजो इत्थु जो लइ आहियो । मेरी इक सर्त तिज्जो मनणा पोहंगी ।" राजैं बोल्या "तेरिया इक्कि सर्त छड्ड करि मैं सौ सर्तां मनणे जो त्यार ऐ । तू बोल ता सही ।" सूनकेसियैं बोल्या, "सर्त एह् ऐ जे छे म्हीने तू मिंजो नैं हथ नी लाह्गां कनैं तिसते परन्त जे तेरी मरजी हुंगी सैह् करयां ।" राजे जो तिसादी एह् सर्त मनणा पई कनैं तिसा जो बसुआस था जे मुंदड़िया ता मैं झट अपणैं घरें पजाइ ई देणी ऐ ।

ओथू सहुकारे दा पुत्तर घरे जो आया ता गाहं सून केसी नी थी । तिन्नी बुझया कुह्तकी गहियो हुंगी, आइ जाणा तिन्नैं । अपण निहालि-निहालि करि सैह् संझा तिकर बी नी हटी ता तिस्यो चिन्द लगि पई । तिन्नी सोच्या मुंदड़िया जो गलान्दा सैह् तिसा जो आणि पजाह्गी । अपण मुंदड़ी तोप्पी ता सारे मैहले च तिस्यो मुन्दड़ी नी मिल्ली । ता सैह् बचारा बड़ा ई तड़फया । करे बी ता क्या करे । तिन्नी एह् बी सोच्चया जे तिसा दी मासी आंहियो थी, सैं कुह्तकी पताल लोक्के जो ई ता नी लइ हुंगी तिसा जो । जे दिहा-दिहा होया हुंगा ता सैह् फिरि नी आई ।" इन्नी दायें सोचदा-सोचदा सैह् झिकिया खट्टा पइ गिआ कनैं चूहे, बिल्लिया कनैं तोते जो याद करना लगि पीआ । सै त्रैहो ताह्लू ई तिस दे गांह् आइ खड़ोत्ते ता सैह बोलणा लगा, मितरो, "मितरो, मैं ता मरोइ गिआ । मेरिया सून केसिया जो कोहकी लइ गिआ । जे तुसां ते किछ बणदा ऐ तां तिसा दा पता करा अह्ता तिसा मुंदड़िया ई लइ आआ ता मैं तिसा ते सदुआइ लह्गा । नहीं ता मैं मरि जाणा । मेरे जीणे दा हुण कोई लाभ नी ।" इतणा की तिन्नी गलाया कनैं मुर्छत होइ करि पइ गिआ ।

सै त्रैहो तिस दिया इसा दसा दिक्खि करि अप्पू चैं गलाणा लग्गे, "जे सून केसी नी आई ता इन्नीं मरि जाणा ।" इछे ताएं तिन्हां एह् सलाह कित्ती जे सून-केसी कुथु ऐ इद्धा पता तोता चौहि पास्यां उड़ि-उड़ि करि करि आए कनैं सैह् एह् बी दिक्खि आए जे सैह् मुंदड़ी कुथु ऐ । फिरि त्रैही कठोरीई करि तिन्हां जो आणने दा जतन करगे ।

तोता ताह्लू ई उड़ि गिआ कनैं चौहिं कनारयां जाइ करि हटया ता तिन्नी तिन्हां दुहीं जो दस्सि दित्ता जे सून केसी ता फलाणे राजे दे बेह्ड़े च ऐ अपण मुंदड़ी मैं इक्कि जबरिया दे हत्थैं दिह्खियो । सैह् सूनकेसिया दे हत्थैं नी ऐ । चूहा कनैं बिल्ली तोते दे दस्यो ठकाणे पर जबरिया तोपणा चलि पै । सै तिसा

जबरिया दे घरैं बड़ि गै कनैं रात्ती हुन्दिया निहालदे रैह् । तोता बाहर कुहसकी रुकखे दिया डालिया पर बहि गिहा था । जां जे रात होई कनैं जबरी अपणे बछाणे च सोणा लगि पई ता तिन्नैं हत्थे ते मुंदड़ी खोह्ड़ी कनैं मुंहैं पाइ लई । चूहा कनैं बिल्ली दोह्यो दिखा करदे थे । तिन्नी बिल्लिया दे कन्ने च गलया, "जे जबरिया दे मुहें ते मुंदड़ी टिहरगी ता तू झट चुक्कि करि न्हठि जायां'।।" फिरि सै दोह्यो जबरिया दे सरहणे वाल जाई रैह् कनैं चूहें होलैं-होलैं अपणी लीघं-णी जबरिया दे नक्के च पाइ दित्ती । जबरिया जो छिक आई गई कनैं मुन्दड़ी तिसा दे मुंहें ते टिरि पई । बिल्ली ता ताक्का बैह्ठियो ई थी । तिन्नैं झट मुंदड़ी चुककी कनैं न्हठि गई । पचांह् ते चूहा बी बाहरे जो चला आया कनैं जबरी अछींह-अछींह करदी ई रही ।

तिन्हां जो बाहर ओन्दयां दिक्खि करि तोता बी तिन्हां वाल आई रिहा । तिन्हां दुहीं तोते जो बोल्या, "भाई तोत्या, म्हारी बत्त धरती चियैं ऐ कनैं विच नदी बी ऐ । तू दिहा कर भई इसा मुन्दड़िया मुंहैं पाइ करि लइ चल । अपण दिखया कुह्तक ट्री-ट्रीं मत करि बैहंदा ।" तोतैं सैह मुदंड़ी मुंहैं पाई कनैं ताह्लू ई उड़ि चल्या । ताह्लू तइयैं भ्याग बी होइ गहियो थी । तोता गास उड़दा जादा था । अपण जाह्लू सैह् नदियां उपरें लंघणा लगा । ताह्लू ई तोत्यां दा इक उड़ार ट्रीं-ट्रीं करदा तिचियैं लंघ्या । तोते ते बी ट्रीं-ट्रीं होइ गई तिन्हां सोग्गी कनैं मुन्दड़ी नदिया च पइ गई । तोता होला होइ करि बहि गिआ इक्कि डालुए कर कनैं तिन्हां दूहीं जो निहालना लगि पिआ ।

जाहलू चूहा कनैं बिल्ली आइ गै ता तोत्तैं दुखी होइ करि सारी गल सणाइ दित्ती तिन्हां जो । तिन्हां बोल्या, "हुण मुन्दड़ी नी मिल्ली कनैं सहुकारे दा पुत्तर बी नी बचया ।" फिरि चूहा बड़िया हाणा तिकर सोचदा रिहा कनैं फिरि बोलणा लगा," अच्छा डरा मत, मैं जतन करि दिखदा ऐ ।" तिन्नी मते सारे चूहे कठेरि अन्दे कनैं तिन्हां जो बोल्या, " तुसां धरती दुडीं पाइ-पाइ करि इसा नदिया दे बाहे जो घेरि दिआ ।" चूहे लगि पै मस्केरां देणा । नदिया दा पाणी दुड्डीं दे वास्से जो घिरि गिआ कनैं दूएँ पास्सैं नदीं सुकि गई । बिल्ली सुकिया नदिया च मछियां बड्ड-बड्ड करि तिन्हां दिआं पेट्टां दिखणा लगि पई जे कुन्नै देहियैं मछियैं सैह् मुंदड़ी निगलिहो हुंगी । मछियां कठरोइयां । तिन्हां बिल्लियो जो बोल्या, "मासी, असां सारियां जो मत मारैं । असां अप्पू ई दस्सि दिन्दिया जे मुंदड़ी कुन्नैं मछियैं निगालिहो ।" कनैं तिन्हां सैह् मच्छी बिल्लिया जो दस्सि दित्ती । बिल्लियैं तिसा मछिया दा पेट चीरया कनैं मुदंडी कड्ड लई । फिरि। सै त्रैहो भिरि कण्ढे पर आइ करि सलाह् करना लगि पै ।

मुंदड़िया ते मछिया दी मुस्क ओआ करदी थी । तिन्हां सैह् खरी की धोत्ती कनैं पथरे पर सुकणा रखि दित्ती । तितणे च ई उपरे ते इक इल्लाण पई कनैं तिसा जो लैन्दी गई । 'हुण क्या करना? सै भिरि चिन्दा च पई गै । चूहें बिल्लिया जो बोल्या, "मासी, तू चतनगी परतायां, दिहा न होए जे मैं मरोइ जां । इलणी जो

मिजो पर पोन्दिया ई तू तिसा जो बडि दिया ।" कनैं चूहा तिस ई पथरे पर पुठा होइ करि लम्मा पइ गिआ । उपरे ते इल्लणीं चूहा दिक्या कनैं सैह् तिस पत्थरे पर पई तदेही बिल्लियैं सैह् जिक्कि लई । चूहा झट सिद्धा होइ करि बक्खैं हटि गिआ कनैं बिल्लियैं इल्लणी जो चो चीरि करि तिसा दे ढिडडे ते मुंदड़ी कड्डि करि तोत्ते वाल देइ दित्तो ।

तोता मुदंड़िया लइ करि गास उड़दा रिहा कनैं हेठ बिल्ली कनैं चूहा चलि रैह् सैह् त्रैहो किट्ठे ई सहुकारे दे पुत्तरे वाल पुजि गै कनैं तिन्हां मुदंड़ी तिस वाल सम्हालि दित्ती । तिन्नीं चौका पाइ करि मुंदड़ी तिधी पर रक्खी कनैं तिसा जो धूप देइ करि बोलणा लग्गा, जै परमेसरिये मुदड़िये, मेरी सून केमी मुखे सहलैं हुण ई इत्थू जो आइजाए ।" ताहलु ई सून केमी तित्थू पुजि पई । तिन्हां जो एह पता लगा जे मुंदड़िया बी सैह दूती लइ गहियो थी कनैं तिसा जो आणने दे ताएं चूहे, बिल्लिया कनैं तोते जो क्या-क्या करना पिआ ता सैह् दोह्यो जणे हरैंन रहि गए । तिन्हा चूहे, बिल्लिया कनैं तोत्ते दी बड़ी भारी खातर कित्ती फिरि सैंह विदा कित्ते कनैं अप्पू बी सैह मुखे नैं रैह्ण लगि पै । फिरि तिन्हां कदी कुसी नैं मुंदड़िया दी गल्ल नी दस्सी न सैह् इह्यां कुथी रक्खी कनैं ना ई कोई पखला माह्णू नडोणा दित्ता ।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
त्रीहं	तीनो	मुंदरिया	अंगूठी को
मत्थेठोरना लग्गी	शोक मनाने लगी	रोहि आए	चढ़ आए
		सिरे पाहरना	बाल सवारने
लोहके	छोटे	बकलोई गया	उलझ गया
सद्धि लिआ	बुला लिया	जणास	औरत
ओखी	कठिनाई	रुआहं पराहं	इधर उधर
पकारि लिआं	बुला लेना	वसुआस	विश्वास
छडेरि दित्ती	छोड़ दी	होलैं-होलैं	धीरे धीरे
टहाई दित्ता	वापिस किया	खिट मारि करि	दौड़ लगा कर
तोलैं-तोलैं	जल्दी जल्दी	हारि फारि करि	अन्ततः
डण्डि	चलना	चौहिं कनारयां	चारों ओर
घटारियां	चिड़ियां	दुड़ीं	सुरंग या बिल
ढुंगदियां	चौंच मारना	कण्ठे	किनारे
लोहि गिया	उतर गया	पाखला	अजनवी
छैल	सुन्दर		

ढाइया ध्याड़यां दे प्योकिये

—शेष अवस्थी

कुसी ग्राएं च इक विधवा जाणास थी कनै इक थी तिसा दी कुआरी धी । सै बड़ियां गरीब थियां कनै मिहन्त-भुड़ी करि की दूंह बक्तां जोगी रुक्खी सुक्की रोटी जोड़ि लैन्दियां थियां ।

इक्कि बहिया दी गल्ल ऐ जे कात्ती म्हीनैं पंज-भीखमां दे ब्रत लगे ता कुन्हकी पड़ेसिणीं तिन्हां दूहीं माऊ-धिया जो टो टिक्कड़ बणाइ करि देणा लाइ पाए । पड़ेसण इक टिक्कड़ बड्डा पकान्दी थी कनैं इक छोट्टा, अप्पू बखुआ माऊ जो बड्डा कनैं धिया जो छोट्टा । अपण मा अप्पू छोट्टे टिकड़े खाइ लैन्दी थी कनैं बडडे देहे जो धिया जो देइ दिन्दी थी ।

इक ध्याड़ा मां कुह्तकी मिहन्ता भुड़िया जो गहियो थी कनैं पड़ेसण धिया वाल ई दुहीं टिकड़ा देइ गई । धिया जो भुख लगि हो थी । तिन्नैं सोंचया मैं इहत्त इक टिक्कड़ खाइ लैन्दी कनैं दुए अम्मां जो रैह्ण दिन्दी । अपण अम्मां खिजि करि ग्रोणा, अज तिसा जो बड्डे देहे टिकड़े रैहण दिन्दी कनैं छोट्टे अप्पू खाइ लैन्दी ।" एह् चिन्दि करि धियैं लौह्का दिहा टिक्कड़ अप्पू खाइ लिआ कनैं बड्डा दिहा अपणिया माऊ जो थइ छड्या ।

मा घरे जो आई ता धियैं सैह् टिकवड़ तिसा जो देइ दित्ता । मा बोलणा लग्गी, " धिये, अज ता तिन्हां बड़े-बड़े टिक्कड़ पका हयो ।" धियैं बोल्या," अम्मां, टिकवड़ ता बड़े-बड़े नी टिक्कड़ रोज्जे साही ई पकाह्यो थे तिन्हां । अपण मिजो भुख लगि पहियो थी कन मैं छोट्टा दिहा टिक्कड़ अप्पू खाइ लिआ ताह्लू ई कनैं बड्डा दिहा तिज्जो रैहणा दिहत्या ।" माऊं इतणा की सुनया ता बोलणा लगी, "तैं मेरा टिक्कड़ कैंह खाहदा ? मैं सैह् ई टिक्कड़ लैणा मेरे टिकवड़े देह् ।" धी तिसा जो समझाणा लग्गी "अड़िये अम्मां, तू रोज ई बड़े टिक्कड़े मिजो देइ करि अप्पू छोटे देहे खान्दी थी । अज मैं सोच्चा जे अम्मां थकि करि ग्रोणा, मैं तिसा जो बड़े देहे टिकड़े रह्णा दिन्दी । मेरा गजारा छोटे देहे नैं ई होइ गिहा । तू इस खाई लैह् ।" अपणंमा कुथु मन्नें ? सह् बोल्ले, "मेरे टिकड़े देह । मैं सैह ई टिक्कड़ लैणा । " धियें सैह् भतेरी समझाई अपण माऊं देहिया जो इको ई भणी होई गई, " धिये, मेरे टिकड़े देह् धिये; मेरे टिकड़े देह् ।" तधैंड़ी सारी रात मा इहयां ई गलान्दी रही । न सैह् अप्पू सुती न धिया जो निन्दर पोणा दित्ती । भ्याग होई गई ता बी सैह् धिया पचांह पचांह चलि रही कनैं 'धिये मेरे टिक्कड़े देह' गलान्दी रही । माऊ दिया इसा डोल्ला दिक्खि करि धी अति दुखी होइ गई

कनैं धरे ते न्हठि गई। अपण मा बी 'धियें मेरे टिकड़े दैह्' गलान्दी-गलान्दी तिसा पचांह् होइ गई।

धी न्हठदी-न्हठदी इक्कि बणे चा पुजि गई अपण माऊ तिसदा पिच्छा नी छड्या कनैं पचांह् पचांह् दौड़दी रही कनैं 'धिये मेरे टिकड़े दह्' गलान्दी रही। इक्कि ठाहरी धियैं दिख्या जे इक्कि रूक्खे च ढोड ऐ कनें तिन्नैं हटि पचांह नजर फेरी ता तिसा दी मा पचरोइ करि अड़ै रहि गहियो थी। सैह् झटपट तिस ढोड्डे च लुक्कि बैठी। मा तिसा जो टोपदी टोपदी तिस रूक्खे ते गांह् निकलि गई तां धिया जो किछ चैन पई अपण सह् तिस ढोड्डे ते इस डरे दी अझैं बाहर नी निकली जे मा भिरि हटि करि तिसा जो दिक्खि न लै।

धी ढोड्डे च बैह्ठियो ई थी ता तिन्नीं चियैं हेड़े खेलदा इक राजा निकलया । तिस सोग्गी मते सारे नौकर चाकर चल्लेहो थे। कुन्हीं नौकरें ढोड्डे च बैह्ठियो सैह् बिट्टी दिक्खि लई ता तिनीं जाइ करि राजे नैं गलाइ दिता। राजा तिस रूक्खे वाल आइ रिहा कनैं ढोड्डे च बह्ठियो बिट्टी दिक्खी ता सैह् तिसा दे छलैंपे दिक्खि करि मोहत होइ गिआ। तिनीं तिसा ते पुच्छया, "तू कुण ऐ कनैं इस ढोड्डे च कजो बैहठियो?" बिट्टियां डरदियैं-डरदियैं बोल्या, "मैं भुलदी-भुलदी इस बणे च आइ रहियो कनैं तुसां दे अोणे दे रोले सुणि करि डरे दी इस ढोड्डे च लुक्कि बैह्ठियो।" "तू कुसदी कुड़ी ऐ कनैं कुथु जो चलि हो थी?" राजैं भिरि पुच्छयां तिसा ते ता सैह् बोलणा लग्गी "मिंजो नी पता जे मैं कुसदी कुड़ी ऐं। मेरे मा-बब्ब मिंजो लोह्कियैं हुन्दियैं ई मरि गयै हुंगे।" राजैं सैह ढोड्डे ते बाहर सद्दी कनैं अप्पु सोग्गी तिसा जो अपणे मैहले जो लई गिआ कनैं अपणी राणी बणाई लई। सैह् राणी बणि करि बड़े ठाठे बाठे नैं रैहणा लगि पई। तिन्नैं सोच्या, जे हुण माऊ ते प्राण बचे हन, नहीं ता तिन्नैं मैं जीणा नी देणी थी।' फिरि राजा-राणी दोह्यो मौजा-मस्तियां च होई गै कनैं तिसा जो माउ दी याद बी भुलि गई।

इक ध्याड़ा राजे दे बेहड़े दियां झीरीयां बौड़िया ते पाणी भरि करि लई आइयां ता तिन्हां राणियां नैं गलया, "असां अज बौड़िया पर इक भतोरड़ जबरी दिक्खी, तिन्नैं इक्को ई भणी लाहियो थी जे "धिये मेरे टिकड़े देह्, धिये मेरे टिकड़े देह्'।" राणियां दिआं पैरां थल्ले ते धरत खसकोणा लगि पई। तिसा जो डर लगिपिआ जे हुण ता इत्थू बी सारयां जे पता लगि जाणा, ता क्या हुंगा? तिन्नैं चिन्दी-चिन्दी करि इक ढंग सोच्या। झीरीयां तित्थू ते चलियां गइयां ता तिन्नें आपणी इक नकरैणी सद्दी कनैं तिसा जो बोल्या, " "बौड़िया वाल इक भतोरड़ देही जणास ऐ। तू दिहा कम कर जे तिसा जो ठगि-ठग्गी करि कुहत की निर्जण देहिया ठाहरी जो लइ जाह कनैं तित्थू तिसादें मुंडे बढि करि मिंजो वाल लई उरया। मैं तिज्जो मता सारा धन दिहंगी। अपण दिखयां कुसी त्रिये माहणुऐ जो इसा गल्ला दा पता न लग्गे।" लोभ पापे दा मूल हुन्दा सैह् क्या नी करान्दा? नकरणी मन्नि गई कनैं चलि पई ता राणियें ताहलु बी किछ सून्नें-चान्दिये दे गैह्णे तिसा जो कढ़ि दिते कनैं फिरि गाया जे होरसी कुसी जो पता न लग्गे नहीं ता मुऐं खल भरोइ जाहंगी।

नकरैणी ताहलु ई तित्थू ते चलि गई कनैं पंजां-छींह घड़ियां परन्त तिसा भतोरड़ी दे मुण्डे बठि करि लइ आई। राणियें तिसा जो अपणे गलाए मुजब मता सारा धन देइ करि सैह तित्थू ते घलि दित्ती कनैं अप्पू अपणिया माऊ दा मुंड इक्कि पटारूए च पाइ थिआ फिरि सैह पटारू अपणे सोणे वाले कमरे दे इक्कि ताक्के पर चुक्कि रख्या।

मते की ध्याड़े होइ गै। तां इक रोज राजा तिसा दे कमरे च संझा देहिया दा आया ता तिस दी नजर ताक्के परथैं हो पटारूए पर पई गई। तिन्नी खरा की तिस पास्सें दिख्या ता तिस्यो बझोया जे पटारूएं च केहकी या कनैं उटका करदा। राजें राणिया ते पुच्छया, "राणी, एह क्या होआ करदा ? पटारूए च केहकी उटका करदा। क्या हुड़ि पहुया तैं इधी च ?" राणियें बोल्या, "राजा, क्या हुड़ना चूहे हुंगे पटा च बड़ि गैहो।" राजे दा मन नी मन्या। तिन्नीं ताक्के ते पटारू उतारया कनैं तिह्रा ढकण घुआड़ि दित्ता। सैह दिक्खि करि हरैन होइ गिआ। तिस पटारूए च सून्ने दा इक मोर उटका करदा था। तिन्नी राणिया ते पुच्छेया, "राणी, ए सून्ने दा मोर कुथु ते अन्दा तैं, ?" "तिन्नें बोल्या, "ए मेरयां प्योकियां देइ घल्या।" राजा बस्मैं होइ करि राणिया बक्खी दिखणा लगा। फिरि तिन्नीं बोल्या, "रानी' तू ता मैं बणे ते आन्दिहो कनैं त्याहड़ी तैं बी गलया था जे मेरे मा बाब्ब नी हन। हुण तेरे प्योकिये कुथु ते आइ गै ?" राणी ोलण लग्गी, "राजा, तथैंड़ी ता मैं डरि हो थी कनैं डरेदा पता नीं क्या-क्या गलाइ दिह त्या मैं। भला तुसां सोच्चा जे मैं बाज्झी प्योकियां ई हुंगी ?" राजैं बोल्या, "अच्छा, ता मैं तेरे प्योकिये जरूर दिखणे। जिन्हा तिज्जो दिहा-दिहा सून्ने दा मोर देई घल्या सै कदेहे की हुंगे ?" राणी मन्नि गई। तिन्नें बोल्या," अच्छा मैं तुसां जो अपणयां प्योकियां दस्सि दिहंगी।"

तिन्हां ई ध्याड़या पज भीखमा दे व्रत लगि पै कनैं राणी होरनां जणासां सोग्गी बैड़िये दे झुड़े पूजणा चलि गई। तिन्नें बैंड़िये जो पाणिये दा छिठा दित्ता, टिक्का, अच्छत, फुल्ल, द्रुभ, रूं, डोरी कनैं लाल कपड़ा चढ़ाया कनैं हत्थां जोड़ि करि मनैं मन गालाणा लग्गी'ता जे होरनां जो न सुमि जाए, "जै परमैंसरिये बरैड़िये मिंजो ढाई ध्याड़े प्योकिये देई करि मेरी लाज रक्खि लैह।" तथैंड़ी रात्ती राणिया जो सुपना होया जे बरैड़िया ते इक दिवजोत कन्या निकली कनैं राणिया जो गलाणा लग्गी, "राणी, तू राजे जो गलाई देह जे 'उत्तरे दे पास्से जो सुतएं बणे च मेरे प्योकिये हन, अपणे सारे लोए लस्करे जो लई करि तित्थू जो चलि पोह'। तित्थू सारा परबन्ध होणा ऐ। तुसां तित्थू ढाइयां ध्याड़यां ते बध इक पल भर बी मत रैहन्दें। कनैं तू इसा गल्ला बी कुसी जो मत दसदी। नहीं ता तू ताहलू ई मरि जाहंगी।"एह गलाई करि सैह दिव जोत कन्या तिस बरैड़िया दे झुड़े च ई लुप्त होई गई कनैं रानियां दी बी चपाट करदी हाख खुलि गई। घिरदियां फिरिदियां म्यागा होई गई।

म्यागा राजा न्होइ-धोइ बैठा ता राणियें बोल्या, "राजा, तुसां मेरयां प्योकियां दिखणे जो गलान्दे थे। ता अपणे लोए लस्करे लई करि चला, मैं तुसां जो अपणेयां प्योकियां दस्सि आणदी।" राजा खुसी होई करि मन्नि गिआ। झटपट त्यारियां होई गइयां कनैं सारे लोए लस्करे लइ करि राजा-राणी राणियां दिआं प्योकियां दिखणा चलि पै।

चलदयां-चलदयां तिन्हां छै बणा हण्डि छडे ता राजें पुच्छया "राणी तेरे प्योकिये केड़ी की दूर रैह हुण? असां ता थकि गैहो। हुण नी चल्लि हुन्दा।" राणि बोल्या "बस, हुण ता सारी बत हाण्डि छडी। अगले बणे च मेरे प्योकिये हन। हुण चल्लि करि तित्थू ई बसोहंगे।"

जां जे राजा-राणी कनैं होर लोग्रा लस्कर सतुऐं बणे च पुजि गिग्रा ता राजा दिक्खि करि बस्मैं रहि गिग्रा। तित्थू बड़े-बड़े मैहल बणोहे थे कनैं ज्हारां नौकर कामे कम कमा करदे थे। तिन्हां सभनां दी बड़ी भारी खातर लगि पई। राजे दा सारा खेज्जा उतरि गिग्रा तित्थू पुजदे ई कनैं सैह् अपणियां खातरा दिक्खि करि मस्त होई गिग्रा।

तिन्हां जो तित्थु ग्रहायां दुग्रा ध्याड़ा होइ गिग्रा ता राणीयैं हटि चलणै दी काह्ली लाइ पाई। राजा बोलणा लगा, "अड़िये, तिज्जो देही काह्ली कजो लगिहो? पैहलीं बरता मैं अपणायां सोहरियां नैं ग्रह्या कनैं तू बी कइयां बोहियां परन्त इत्थू ग्राहियो। किछ ध्याड़े इत्थ रहि करि हटि चल्हगे। अपणिया ई रियास्ती जो ता जाणा ऐ, नित्त इत्थू थोहड़ी रैहणा ऐं?" राणियें बोल्यां, "राजा, मते ध्याड़े कुथी बी नी रैहणा चाहीदा। बोलदें 'अज प्रोहणा, कल पच्छा कनैं परसूं घरे जो गच्छा।' असां हुणि हटि ई चलणा। तुसां जो पचांह दा बी किछ ध्यान ऐ कि नी?" राजा तिसा दे गलाए मन्नि गिग्रा।

त्रियें रोज्जें भ्यागां ई राजा लोए लक्सरे समैत तित्थु ते चलि पिग्रा। राजे दा नाई बड़ा चंदरा था। तिन्नीं राजे दी पग कनैं कपड़यां दी छड़ तित्थु ई रैहणा दित्ती कनैं अप्पु अपणियां गुछिया लटकाई करि चलि पिग्रा। जां जे सै चलदे-चलदे बड़ी दूर निकलि गै कनैं दपैंहर बी होई गैहो थे ता नाइयें बोल्या, "महाराज, तुसां दी पग कनैं कपड़यां दी छड़ ता तित्थु ई रहि गई। मैं हटि करि तिन्हां जो लई ग्रोन्दा ऐ।" राणीयें बोल्या "कपड़यां दिया छड़ा जो कनैं पग्गा जो ग्राणने दे ताएं एड़ी दूरे जो हटि जाणा? दिग्रा रैंह्णा।" अपण नाई नी मन्या कनैं राजैं बी तिस्यो इक घोड़ा देई दित्ता कनैं बोल्या "असां मजैं-मजैं चलदे तू जाइ उरया।"

नाई घोड़े पर चढ़या कनैं पचांह जो हटि गिग्रा। कनैं राणियां जो धक फुकी लगि पई जे हुण क्या हुंगा? जां जे नाई राणियां दिग्रां प्योकियां नैं पुजि गिग्रा ता तिस क्या दिखणा? सैह उलभुभुग्रां साही दिखणा लगा। तित्थु न ता सै मैहल थे ना नौकर-चाकर न होर कोई माहणू न माह्णुए दा बच्चा। चौंही पास्यां जूठे पतलू पैहो थे कनैं का कुत्ते तिन्हां पतलुग्रां दिया जूठी खा करदे थे। होर तित्थू झुड़े ई झुड़े थे। अपणा राजे दी पग कनैं कपड़ेयां दी छड़ तित्थू ई रखोइयो थी। नाइयें सैं दोहयों दा चुक्के कनैं घोड़े पर चढ़ि करि सैह राजे वल चलि पिया। तिन्नीं घोड़ा दड़काया कनैं संझा हुन्दियां जो अपणियां रियास्ती च पुजि गिग्रा। ताहलू तइयैं राजा-राणी कनैं होर लोग्रा लस्कर बी महलां च पुजि गिहा था। नाइयैं राजे दी पग कनैं कपड़यां दी छड़ राजे वाल सम्हालि दित्ती कनैं बोलणा लग्गा, "महाराज, तुसां दिग्रां सोहरियां दे महल ता तित्थू रैहो ई नी। जे तित्थू ए दोहयो चीजां नी पहियां हुन्दियां ता ता एह पता बी नी लगणा था जे

सैह् सैह्ो ठाह्र ऐ कि कोई होर।" राजा बी बस्मैं होइ गिआ सुणि करि। सैह् राणियां ते पुच्छणा लगा, "राणी, सै क्या होया हुंगा ?" राणियैं बोल्या, "राजा, मिजो क्या पता मैं कनें तुसां ता सोग्गी ई तित्थू ते ले आह्यो।" राजा गलाणा लग्गा, "नहीं राणी, तू मिजो सारे भेदे दस।" राणी नांह करे अपण राजा अपणे हठे जो छड्डणे जो त्यार नी होया। हारि-फारि करि राणियैं बोल्या, "राजा जे तुसां नी ई मनणां ता मैं सुणाई दिन्दी, अपण" फिरि जीन्दी नी रैहंगी।" राजैं बोल्यां, "तू चाही फिरि मरि जायां अपण मैं इसा गल्ला दा भेद जरूर लैणा।"

राणिये ढक्के ते लइ करि चूढियां तइयें अपणी सारी कथा राजे जो सणाई दित्ती। जदेह्ी सैह् कथा सणाई बैठी तदेहे तिसा दे प्राण बी निकलि गै कनैं सैह् घड़म्म करि कि धरती लटोई पई। राजा कथा सुणि करि कनैं राणियां दियां ल्हासा दिक्खि करि नट्ठा होइ गिआ। फिरि तिन्नीं तिसा दा दाह कर्म करि दित्ता।

शब्द	अर्थ
ऋुह्तकी	कहीं
मिहन्ता	मेहनत
थई छड्या	रख छोड़ा
पचांह् पचांह्	पीछे पीछे
हेड़े	शिकार
खसकोणा	खिसकने
सुमि जाए	सुनाई दें
बसोहुंगें	बैठेंगें
काह्ली	जल्दी

ग्वाल टीला

—ओंकार लाल भारद्वाज

ग्वाल टिलें ते हेठ बणियां स्माधि परालें अज भी ओणें जाणें आला मुसाफिर अपणी श्रद्धा दे फुल्लां दी भेंट चढ़ाई ने फिरी अपणी लप्पां गांहां पुट्टी ने बत्ता जो हुंडणे लगी पौन्दा है। कई बरसां बीति जाणें पर भी इन्हियां बझून्दा जाणे ऐ प्रेम स्माध हुणें ही बणाई ने समाही होये।

बत्तरी रोज ग्वालू बणीं-ठणीं ने कमरा च बसंरी जो लटकाई ने इन्हां खोलेयां च अपणीं भेडां होर बकरियां जो चारने लई अणदा था। माल खोलेयां च चरीने छाऊआं जुगाली करने बहन्दा कनें तांहां ग्वालू ऊच्चे टिल्ले पर नैंठी ने बसुंरिया परालें शोभली-शोभली पहाड़ी धुनां कढी ने बखेरना लगी पौन्दा था। तिसदी बसंरी दी धुना जो सुणी के माहणू तां महाणू पर पंछी भी रूकी जान्दे थे। सैंह इन्हां खोलुआं दी दुनिया च मस्त रहन्दा था। न तां उस जो एक गुमान जे सैंह इक दशणीक माहणू है।" पंचेवां दी छणछण तिसदी जिन्दड़ी च आई ने तिसदें दिला दे आखेयां च बहीं ने दिलां दी धड़कणां दे तरापेयां जो गिणनां चाहन्दी थी तिस—कने भेडां होर बकरियां जो चुगाणा चाहन्दी थी। पर सैंह तां अपणे ही गोये दा मानस था कनें अपणे नजीभे धणां ने ही मस्त रहन्दा था।

तिस ध्याड़े भी ग्वालु इस ऊच्चे टिल्ले पर बही ने बसुंरिया च छैल-छैल स्वर था कढादा। चाण चक ही तिस दे कनां च पीपणियां, होर ढोलां दी धुनां टकराईयां। थोड़ी देरा परन्त तिस दियां हाखीं, पारलिया बत्ता पर इक माहणुआं दा डुआर दिया उत्तरदा भालेया। माहणुआं ते गांहां करनाल, ढोल, नगारें, नरसिगा, डफले होर पीपणीयां जो बजान्दे किछ बजन्तरी डोली कनें सुखपाल भी उत्तराईयां पेहो थे। इसा छेड़ा-छणका ने तिस दी बांसुरी दी आवाजा जो लुकाई लिया ग्वालु इक टक लाई ने वियाही औन्दियां जनेती जो भालने लग्गेआ। पता नी कजा अज तिदियां हाखीं डोलिया च पड़ाया डाई नैं बैठिया मुटियारा ने किछ गलाणा चाहा दिया थी, पर रेशमी झमणे ते तिस दियां हाखीं छुटकी जांदी थी। सैंह मना चइन्हियां चिन्दणे लग्गेया, "ऐ कुण हुंगी भला? ऐ कदेयी हुंगी? इस जो मेरे आली औणा पौणा।" इन्हां सोचां ते तिस जो ऐ भजोया जे "सैंह तिसदी ग्वालुयें जोरा नें हैयां गलाया, "ऊआर बराड़ी पार बराड़ी लाले झमणें च मेरी लाड़ी।"

लाड़े ऐह सुणायां तां तिसजो पैरां च लग्गी कनें सिरे च लूऐना निकलेया। तिन्हीं ग्वालू जो गुस्से ने गलाया, "जे एह तेरी लाड़ी है, तां मार छाल। लाड़े हो हाले गलाई समाहया कनें ग्वालूयें छाल मारी दित्ती।

ग्वालू दी देह टिले बुट्टन हिच्चल होई फलाहा बणी शान्त होई गई। जनेतड़ कनें लदहड़ रूकी गैय। तां डोली तेइ इक सुन्दरी उत्तरी कनें तिन्हे बाहां च पहनेयां लाल चूड़ा भन्नी दित्ता, मत्थे दा सिन्दुर मेसी ता। मुटयार ढाहां पाई ने रोणे-पिटणे लगी पई। ग्वालू दे देही त्याग दी गल्लां दी रूल चुफिदे पई गई। थीड़ो देरा च ग्वालू दे सक्के सम्बन्धि आई गैय। तिन्हां चिता बणाई कनें ग्वालू दी लोथा जो लाम्बू लाई दित्ता कनें सैंह मुटयार भी छाल मारी ने सती होई गई। दोयो आपू च मिली गैय कनें प्यारा दी पवित्र अग्नि कुंड च तपी ने कुन्दण बणी इन्हां खोलेयां दी दुनिया च अमर होई गैय।

मैं भी ऐ लोक कथा सुणी कनें हृत्य जौडीं ने सिद्धा खडोई गिया। मैं आपणी श्रद्धांजलि तिन्हां दुन्ना जो समर्पित करी दिती। मेरे हाखीं ते आसुआं दी निर्जल झड़ी लगी पई। ऐ आंसु गम्मियां दें नी, बल्कि खुशियां दे थे। कैंह मैं सोचा दा था करदा उस प्यारा दे बारे जेढ़ा उन्हां दुन्नी रूहां निभाया कनें जेढ़ी अज कला दी रूहां निभान्दियां।

ऐ स्थान म्हारे प्रदेशा च कांगड़ा घाटी दे पालमपुर छेत्र च, पालमपुर-आलमपुर सड़का दे बख्लें, थुर्ल कसबे ते ऐ ही कोई चार की किलोमीटर हेठलें पासें हन। इस घटना जो विविध जनश्रुतियां दे अनुसार मता पुराणां मन्नैयां जान्दा है।

शब्द	अर्थ
लप्पा	पग
पुटी ने	बढ़ा कर
छाऊंआं	छाया में
गुमान	अभियान
चाणचक	अचानक
भाल्लया	देखा
मुटियारां	युवतियां
छाल	छलांग
लद्हड़	दुल्हन की तरफ के व्यक्ति
चुफिर्द	चारों ओर
बख्लें	किनारें

सौतिह डाह

—स्वर्ण लता महाजन

साड़े बजुर्गां दा गलाणा है कि जियां इकी म्याने बिच दो तलवारी नी रही सकदियां तियां ही इकी घरे बिच दो सौकणीं नी रही सकदियां चाहें सै सकियां भैणी ही कैं नीं होन। सै अपु पिछे लड़दियां ही रैंहदियां । एह लोक कथा भी इसी सौतिया डाह दा इक अंश है :–

इक राजा था तिस दियां तिन राणियां थीयां। दुं राणियां ने तां सै बड़ा प्यार करदा था पर बडीया रानियां ने सै कदी कदायें ही बोलदा था। भगवाने दी लीला, तिसां जो दो जोड़ मुडूं जमें। तिन्हा दुं रानियां जो बड़ा दुख होया भई राजा कुतकी इसा रानियां जो हुण पटराणी ही नी बणाई दैं कनें असां जो बाहर निकलना पौए। तिन्हा अपणे अपणे मने विच बुरे-बुरे विचार किते। तांहि ता बोल्दे––'भई सौंकणीं जाया कुन्हीं भाया।' अपणे सुखे विच ही सुख है कनें अपणे खादयो ही भुख चुकदी । सै दोनों रानियां तिन्हा दुंई बचयां जो मरवाणें दे उपाये सोचणा लगियां।

तिन्हां दुई राणियां मिली ने इक बड़ा अजगर मंगाया कनें तिन्हां बच्चेयां दे बिस्तरे पर सुटआई दिता। भगवाने दी लीला तिनीं सर्पे तिन्हा मुंडुआं जो कुछ नि गलाया कनें जिस रस्ते ते आया था डोल मुड़ी ने चला गया। जाल तिन्हां रानियां मुंडुआं जो जिन्दा दिखया तां बड़ी दु:खी होइयां भई म्हारी स्कीम तां फेल होई गई।

पर तिन्हां अपणां जतन जारी ही रख्या । हुण से तिन्हां मुंडुआ जो मरवाने ताईं होर उपाय सोचणां लगियां। तिन्हां दुईं बच्चयां जो दूर जंगले विच छटबाई दित्ता। सैह बड़ीया खुश होईयां भई चलो साड़े रस्ते दा कण्डां तां दूर होया।

होनियां जो कोई नीं टाली सकदा। जालु आदमिये दे बुरे दिन औंदे तां सै भगवाने ते वी नि डरदा। सै यह नी सोचदा भई जिस जो भगवान रखना चाहे तिस जो कोई नि मारी सकदा ।

जंगले विच तिन्हां मुंडुआ जो कि साधु चुकी ने अपनिया कुटियां विच लई गया। सै बच्चे तिस साधुए दिया कुटिया विच पलना लगे। इसा गल्ला दी चर्चा सारे शहरे विच होणा लगी। तां लगा तिन्हा रानियां जो डर भई यह तां सै ही बच्चे हन । तिन्हां आपणियां दासियां बल्ला लड्डू भेजे जिस विच जहर था पाया। तिन्हां मुंडुआं सै लड्डू खादे कनें खांदयां ही तिन्हां दे प्राण निकली गे। जालु साधु कुटिया विच वापस आया तां तिन्हीं दुई मुडुआं जो मरया दिखया तां सै पछाड़ खाई ने पइया।

तिनीं साधुयें तिन्हां मुंडुआं जो चुक्या कनें अपनेयां कुटिया बखे ही दो गड्ढे करी ने तिन्हां जो दबी दिता। थोड़ेया दिनां बाद तिन्हां दुई गड्ढेयां ते दो बूटे उगी पे। जिन्हां बड्डे बड्डे दरखतां दा रूप धारण करी लिया। मौसमै औणै पर सै दरख्त खूब फूले। सै इक दिन इक कौउआ आई ने तिस दरख्ते पर बैठा कनें इक फुल तोड़ी ने लैई गया। सै कउआ उड़दा-उड़दा राजे दे महले ऊपर पुजा ता तिनी दिखया भई राजा अपणे महले दे बगीचे विच घुमा दा है। तिन्हीं सै फुल राजे दे बखै सुटी दिता। राजे दी नजर तिस फूले पर पैई तां तिनीं सै फुल चुक्या कनें सींगणा लगया। तां राज्यो तिस फुले दी बास बड़ी ही खरी कनें अनोखी लगी। तिनीं सै फुल सारे शहरे विच तपवाणा शुरू करी दिता।

राजे दे सपाई तिस फुले जो तोपदे तोपदे-तिसा कुटिया बखे जाई पुजे तां तिथु तिन्हा फुलां दे दरक्तां जो दिखी ने बड़े खुश होए। जियां ही सै फुलां जो तोड़णे तायें अपणा हथ ऊपर करदे फुल खूब ऊचें होई जांदें। तिन्हां कितनी ही देर जतन किता पर हर बारी ही इहां होए। सै जतन करदे-करदे थकी गे तां राजे जो दसणा चली पै। तिन्हां जाई ने राजे जो सारी गल दसी दिती। राजा भी इसा गला जो सुणी ने बड़ा बचक्त होया। सै अपु तिन्हां सपाइयां ने तिन्हां फुल्लां जो दिखणा चली पया।

जालु राजा तिसा कुटिया बला पुजा तां तिन्हां फुल्लां ने भरयां दरख्तां जो दिखि ने बड़ा ही खुशी होईया। जियां ही राजै फुल्लां जो तोड़ने तायें हथ बधाया तियां ही सै फुल ऊंचे होई गे कनें राजे जो तिन्हां दरख्तां तेइक बड़ी ही मीठी अवाज सुनाई दिती— भई राजा जे तूं माता रानियां जो ऐथु सदी लयौंगां तां ही तेरी साध पूरी होई सकगीं। नी तां कदी नी। राजा इसा गला जो सुणी ने कुछ झिझन्या कनें अपणियां त्यागिया (छड़िया) रानियां दी तिस्यों याद आई। तिनीं सपाइयां दे हथे रानियां जो सदी भेजया। रानी राजे दे सदे ते बड़ी घबराई कनें सोचणा लगी पई पता नीं हुण राजे मिजो क्या गलाणा हुंगा कनें क्या सजा दैंणी हुंगी। पर राजे दे हुकम्मे जो टाली भी कियां सकदी थी सै तियार होई कनें पालकियां विच बैई ने राजे बला चली पेई।

चलदे-चलदे रानियां दी पालकी तिन्हां दरख्तां बला पुजी गई तां सै दरख्त अपु ही इक दम नीठे होई गे कनें तिन्हां दरखतां ते बड़ी मीठी आवाज सुनाई देणा लगी। रानियां दीयां समझा विच कुछ नि था ओआ दा। पर तिसा दी ममता तिसा आवाजा सुणी ने उभड़ी पेई। तिसा जो अपणयां मुंडुआं दी बड़ी याद आई। कनें सै जोरे-जोरे रोणा लगी पेई।

तालु तिनी राजें अपणेयां सपाइयां जो गलाया भई दिखा तां सैई क्या गल है इन्हां दरख्तां विच। सै सपाई राजे दीया गलां सुणी ने दरख्तां दिया जड़ा ते मिटी चुकणा लगे। जियां ही तिन्हां जरा कि मिटी हटाई ता क्या दिखदे हुण भई दो बच्चे अपणे मुंहा विच अंगुठेंयां पाई ने हसा दे कनें अपु पिछे इकी दुए जो दिखी ने खुश होआ दे। रानी तिन्हां बच्चेयां जो दिखि ने बड़ी भारी खुश होई कने झट पट तिन्हां बच्चेयां जो चुकी लेया। तिन्हा दुई मुडुआं राजे जो अपणी सारी कथा सुनाई। राजें महलां विच आई ने तिन्हां दुई रानियां जो राज महले ते कढी दिता कनें अपणेयां दुई मुडुआं जो कनें रानियां जो महलां विच लई जाई ने सुखे ने रहणा लगा।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
कुतकी	कहीं	बखे	निकट
ढोल	चुपचाप	जतन	कोशिश

चड़िया दी कुल्ह

—स्वर्ण लता महाजन

चढ़ी साड़े कांगड़े दा एक छोटा दया ग्रां है जिस विच बड़े पहले राणा परिवारे दा राज था। तिथु सदा पाणिये दी बड़ी कमी रहदीं थी। कई राजे तिस पर अपणा राज करी गे पर कुसी ते पाणियें दी यह कमी पूरी नि होई सकी। कई सालां बाद राजे जो बुढ़ापे विच सुपना होया कणे तिस जो सुपने विच कुल्ह सुझी कणे तिस्यो सुझया भई मैं कुल्ह है कनें तेरे राजे विच औणा चाहंदी। राजा बड़ा खुश होया। भ्याग होई कने तिनि पण्डते जो सदी भेजया। पण्डते लग्न कडी ने राज्यो दसया। कनें राजे तिस मूहेर्ते विच चड़िया दे ऊपर एक छोटे दे जंगले विच जिथु कि ऊबड़-खाबड़ ज़मीन थी कम शुरू करवाई दिता। मिस्त्री (राज) तिसा कुल्हा दी चनाई करदे जाण कणें पिछे ते सै ढेंदी जाये। तिन्हां कई बारी तिसा जो चिणया पर सै हर बारी ढेई पोये कने तिथु पाणी नी चढ़ी सकया।

इसा गलां दा जालु राजे जो पता लगा तां सै बड़ा दुःखी होया। तिन्हीं जगह-जगह ते पण्डत सदवाई भेजे। तिन्हां राजे जो दस्या भई राजा यह कुल्ह तां बल्ली मंगा दी। राजे झट हुक्म दिता भई कुल्ह जो बकरे दी बली देई दया। पर कुल्हा जो तां बुहार बोंकरी गा, बिल्ली, घोड़ा, राज कुंबर (टीका) या राज कन्या इन्हां विच इकी दी बल्ली चाहिन्दी थी। राजा हुण बड़ा परेशान होया। सै बुहार (बोंकरी) दी बल्ली तां राजा देई नी था सकदा सै तां घरे दी लक्ष्मी हुंदीं। बिल्लीया जो मारना तो बड़ा ही बुरा मनदे जिसने तां ब्रह्म हत्या लगदी। कनैं घोड़े तां भला राजेयां दी शान हुंदे तिस दीं राजा कियां बल्ली देई सकदा था। कने राज कुमार (टीका) तां भला कुले जो चलाणे वाला होया। तिस दी भी कियां बल्ली दिंदा कनें राजकुमारी तां भला देविया दा रूप होई, इस करी ने इन्हां चीजां दी ता बल्ली नी दयोई सकदी। कनें इन्हां दे बदले होर जे भी कीज कुल्ह मंगदी तिस दी बल्ली देणे जो मैं तियार है। तां तिन्हां पण्डतां बोल्या भई राजा जे तुसां अपनियां बड़िया नूआं दी बल्ली देई देण तां ठीक है। फिरी तुसां बल्ला नूआं दी निशानी तिसा दा मुंडू कणें कुड़ी तां रही जाणे। कनें टीके दा तां दुआ ब्याह भी होई सकदा। राजे जो भी यह गल ठीक लगी कनें तिनि अपणे खजांचिये जो हुक्म दिता 'तूं जा कणें रानिये जो बोल भई राजा बोला दे भुई कुल्हा दी प्रतिष्ठा (मुहुंत) तेरेयां हथां करवाणा है कनें तू सताबी-सताबी चली उरया।

खचानची बड़िया मुस्कला कनें तिसा बल्ला पुजा कनें राजे दी गल तिसा जो सुनाई दिती। रानी बड़ी खुश होई। कनें तिनें सिरे पारने ताई नैणीं जो सदी भेज्या, जालु नैणा सिरैं पारी चुकी तां कुनकी छीकी रखया। रानिया दे दिले विच बुरा विचार

प्राया तां तिने बोल्या जालु मैं कुल्हेते हटी श्रौंगीं ता तिजो महलां ते डोलिया विच भेजगी जियां ही सै संजी बणी ने बाहर निकली ता दूरे ते गीदड़ा दे रोणे दी आवाज सुणीं तिने बोल्या जालु मैं कुल्हा ते हटी श्रौगीं ता तुसां जो बकरे कटवांगी। अगे जाले तिसा सदी पालकी परोली ने बजी तां तिने बोल्या भई मैं तिजों हटी ने पक्की करवाई दिंगी। जालु कउए तिसा दिया पालकिये पर फिरना लगे तां तिने बोल्या भई जे मैं ठीक-ठाक हटी श्रौगी ता तुसा जो घ्योए विच चुरी कुटी ने खुम्रांगी। पुजदे-पुजदे सै तिसा कुल्हां बखे जाई पुजे जिथु राजा कणें होर लोक तिसा जो निहाला दे थे।

राज परोतें पूजा शुरु करवाई दिती तां राजें मिस्त्रीयां जो बोल्या भई हुण तुसां अपणा कम शुरू करी दिया। तां तिन्हां मिस्त्रियां रानियां दे पैर बदें कनें तिसा दया पैरा बखे बड्डा पत्थर रखी दिता। राणी झट समझी गेई भई ऐथु मिजों पुजा तायें नी बल्कि बल्लियां तायें आंदया। तां सै गलाणा लगी भई मेरेयां पैरां जो मत दबदे, मेरयां भाऊआं आई ने मेरेयां पैरां जो बन्दणा है। जालु गोडे जो चिनणा लगे तां सै बोली मैं सूरज देवता जो अरग देणा है, जालु पेटे दी बारी आई तां सै बोलणा लगी--भई अजे मेरे भाउआं औणा कनें मिजों पैहनणे तायें घघरा लयौणा है कनें सै मैं पैहनणा है। जालु कन्ध छातिया बखे पुजी तां तिने बोल्या--मेरियां छातियां मत चिनदे मेरे मुंडुएं धुंघरुए कनें कुड़िया कुण्डला दूध पीणा है। पर सै ता कन्धा जो चिन्दे ही गये। जालु कन्ध तिसा दे मुण्डयां-मुंण्डया तक पुजी तां तिनें करी गलाया--मेरियां बाईं मत चिन्दे मेरे भाउआं मिजो ने आई के गले मिलना है। इहां ही जालु तिसा दियां मुंहा कणे आंखी जो चिनणा लगे तां तिनें गलाया--मिजो मत चिणा मैं अपणे खसमे जो दिखणा है कणें उस कनें गलां करनियां हण। पर तिसा दिया गलां कुण सुनदा। कन्ध तिसा दे सिरे तक चिणी दिती।

सारे लोक इस तमासे जो दिखी ने अपणेयां-अपणेयां घरां जो हटी गे। पर जालु राणी घरे नी हटी तां तिसा देयां बच्चयां तिसा दी तोप पाई। जालु तिन्हा जो पता लगा भई मारी मां तां कन्धा विच चिणी दितियो तां सै दोनों रोदें रोदें अपणे नानक्यां दे घरे चले गए। जालु राणियां दे भाउआं वारी गल सुणी तां तिन्हा झट अपनियां फौजा ने चढ़िया दे जंगलें पर चढ़ाई करी दिती। तिथु पुजदेयां ही पहले तिन्हां अपणी बहण तिसा कन्धा ते कढ़ी कनें तिसा दे गल्ले मिली ने बड़े भारी रोये कनें बोलना लगे--'असां जो जरा कि पहले पता लगी जांदा तां असां तिजो कदी नी मरणा देणा था। फिरी तिन्हा सारे कुलीयां पण्डता, मिस्त्रिया कनें खजानचिया जो सदया। कनें राजे (सोरेह) जो पकड़ी ने तिस दा सिर कटी दिता कने बाकियां जो हेठे ते पैरां बल्ला ते कटी दिता इहां तिन्हां दे सारे कुल्ले जो खत्म करी दिता। कनें बाकी तमास गिरियां जो कैद करी लिया।

तां फिरी तिन्हां तिथु चनणे दिया लकड़ियां दी चिता बणाई कणें अपणियां बहणीं दा दाह संस्कार करी के अपणे राजे जो हटणे ते पहले तिन्हां अपने भानजे धुंघरुये जो राजे पर बठालयां कणें अपणिया भानजियां कुण्डला दा ब्याह किता।

सुणने विच औंदा भई कुल्ह रानियां दिया बल्लीया बाद पणिये ने खूब भरी ने चली कनें सै ढाई दिन खूने ने चलदी रही थी। अज भी सैह कुल्ह सारिया चढ़िया जो पाणी दिदी। अज जितणा कभी राणा परिवार है सैह सारे इसी घुघरूए दी औलाद है।

अज भी यह कथा गाणे दे रूपे विच सुनणे जो मिलदी। डुमने इसा कथा जो बड़े चाये ने गांदे। पर राणे इसा कथा जो सुणना बुरा समझदे। सैह इस कथा जो नी सुनदें।

शब्द	अर्थ
सुझी	दिखाई दी
उबड़ खाबड़	ऊंची-नीची
सदवाई भेजे	बुला भेजे
सताबी सातबी	जल्दी जल्दी
पुजदे पुजदे	पहुंचते-पहुंचते
तोप पाई	खोजना आरम्भ किया।
चाये नें	शौक से

पुटुए दी कथा

–बी0 आर 0 भारद्वाज

इकी गांवा च इक मुंडु अपणियां बहणीं सौगी रहंदा था। तिस दा नां पुटु था तिन्हां रे मां-बुढ़े मरी गई रे थे, तिन्हां रे चाचा कनें चाची बी थे पर से जुदे रहंदे थे। से इन्हां दुई बहण भाउए जो खरा नी समझदे थे। तिन्हां री सदा ए ई नीत रहंदी थी जे कदी इन्हां दा बी उकलो तां कदी इन्हां रे चार चुहलु असां रे हत्थे औणा से पुटुए जो कियां न कियां पटणा चांहदे थे। जगा-जमीनां रे नां पर बी पुटुऐ गें पंज चार ही खेतरू हुंगे, होर तां तिसरे बड़े खड्यातर ही पाई री थी। से दोनों बहण भाऊ बड़िया मुसकला ने अपणा गुजारा करां थे पर था, पट्टू "पुट्टू ई"।

डंगर पसुआं रे पासे ते भी पुट्टू नकैंसां ही था। बरस दो बरसां पहले तिननी कुस की ते इक कटु अंदा था। ध्याड़ी से दुध, चैंघदा जौआ ई थी, पर हुण मन्नो जाणा घा खाणे ते हटदा ई नी था। पुट्टू ऐ जो घा पुगाणा बड़ा मुस्कल होई गया। तिनीं इक विध सोची। तकांलां परन्त नधुप न्हेरा होणे पर तिसं सह कट्ट छडणा कनें अपणें चाचे रिया कमांदिया च हक्की औणा। स्यागा मुंह न्हेरे ही तिस सह कट्टू ली औणा। कट्टए गड़दिम होई ने औणा। चाचा कमांदिया दिया जुआड़ा जो देखी ने रहान था जे राती जो रोज ही कुस दा माल औंदा हुंगा, कनें गानेयां खाई जांदा हुंगा। हारी फारी ते तिनी बी इक विध सोची कनें एक कुहाड़ु लेई ने कमांदियां रे खेतरा च लुकी बैठेया। कुछ ही रात बीती हुंगी तां जे पुटु अपणे कटुए जो ओथी छुडी गया। पुट्टए जो चाचे रा कोई पता नी लगेया। चाचे जो बड़ी जलणी आई कनें तिनी औ देखेया मा ती, कुहाड़ ऐं ने कटु बढी दिता।

तां जे दूए दिन स्यागा ई पुट्टु कटुए ल्योणा गया तां तिनी देखेया जे कटु तां बढी दिती रा। सैह रोया करलाया बड़ा पर क्या करदा, कुसी जो कुछ नी गलाई सकेया, अप्पू बी तां चोरी ई करदा था, इस करि ने क्या गलांदा सैह चमारा वाल गया कनें कट्टूए री खल घड़ाई कनें घरा जो ली आंदी।

कुछ दिनां परन्त, पता नीं, पुटुए जो क्या सुआन आया कनें तिनी सैह सुक्की री खल सिरा पर चक्की कनें स्यागा ही सैहरा रे पासे जो चली पेआ। सारा दिन हंडदा रेहा, जंघा रे छब बणी गए। दिन घरोणा लगेया कनें सह इक्की पिपला दे ढकें तिसरे पठ्याले बेही गया। हुंन्दे हुंदे दिन घरोई गया, झुमियां पेई गइयां, तां गेखरा न्हेरा होणे लगी पेआ, तां तिसजो डर लगणे लगेया। अपर सह हुण जाओं तां जाओ कुती जो बस्सों कुती नेड़े नी, करदा ता क्या करदा। आखर तिनी पिपला पर कौःणे दी कोस

कीती कनें खला लेई कनें सह पिपला पर, बांके जेहे त्रेखे पर खल रखी कनें अप्पू तिसा गास बैठी गया। पर जलो, तौदियां बी राती ठंड होई जान्दी। इक तां नबौगी, दूए भूतां-प्रेतां रा डर त्रिए, कोई डाण-बछाण नी, पुट्टुए जो नीन्द्र कुती आओ, बैठी रा बचारा कुंगुड़ होई ने। अजे थौड़ो जेही रात गई होणी कि ओथी तिक आदमी आए पुट्टुए चन्दा दिया मकड़ चानणियां च देखेयां जे तिन्हे ओथी धूप बालेया कनें अरदास कीती जे हे देवी ! असैं मता सारा माल लेई औंगे तां तिज्जो सौ रुपयैं चढ़ांगे एह गलाई ने से चली गए।

दोतका जुन था। चानणी घरोई गईरी थी। पुट्टु बचारा सारे दिना रा खिज्जी रा था दुए सारिया राती रा निन्दरे, तिस जो बैठी रे बैठी रे जो दुलणी लगी पई कनें औंद-औंदे निन्द्रा री सहेल पई गई। इतने च थल्ले से ई चोर आई पूजे कनें देवी जो चढ़ीआं चढ़ाणे लगी पए। तिन्हां रिया गल्लां सुणी ने पुट्टु एढ़ा बजा गेया जे सैंह भेखे परा ते रूढ़ी गया कनें तिसरे रूढ़ने ते खल बी टुआटरी होई ने खड़ाखाड़ करदी पौणौं लगी पैई। न्हेरा था, चोरां जो कोई पता नी लगेया जे एह क्या होणे लगेया। तिन्हां खा त कोई भूत-प्रेत ही लौहणे लगे। चोरां जो समलहोणे नी मिलेया कनें सारा माल ओथी ही छड़ी ने नठी गए। कुछ बेर तां पुट्टु बी अपणे बक्खां जो झसदा ई रेआ, पर काफी बेरा बाद तां जे कुछ झुल मुलाबीं होई पैआ, पुट्टुए जो स्वांत आई कनें तिनी मता सारा मता देखेया तां तिसरे कुलफ खिड़ी गए। तिनी बुजके खोले कनें रुपैए रुपैए गठी च बन्हें माल कनें अपणे घरा जो चली पेया। सैंह घरें पूज्जी गया कनें अपणियां बहणीं जो बोलेया जे चाचिया ते तकडियां-बटिया ली औ असां रुपैए तोलणे कुड़िये। जाई ने चाचिया ते तकड़ी बट्टी मंगी तां चाचिये पुच्छेया जे बच्चा कैत लाणी तू तकड़ी-बट्टी कुड़िए बोलेया जे भाउए मते भारी रूपैय अंदीरें, रूपैयां रा नां सुणी ने चाचीये रे कालजें हौल पई गया। तिसा तैं नी रही होया। सैंह कुड़िया सौगी सौगी चली आई कनें रपैयां रै ढेरा देखी ने बड़े फफड़े करने लगी, सह बोलने लगी, बच्चा पुट्टुआ तें इतणें रूपैए कुती ते अंदे मिया बच्चा ! ताहीं तां हेऊं तेरे चाचे जो बोलदी जे असां एह मुन्नु कनें मुन्नी कठे रखणे। पर जलो एह भाग, मेरी सुणदा ई कुण ? बच्चा तू दस तां सई जे तें कियां कियां कमाए एह इतने रुपैयें ? पुट्टु था तां छोटा पर था बड़ा चलाक तिन्नी बुरा जेहा मुंह बणाई ने बोलेया, "चाची ! क्या करदा हांऊ ? कुनकी मेरा कट्टु ई बढ़ी ता था क्या करना, छोटी जेही खल थी तिस दी 'सह ई बेची जाई ने सहरा। हुण बलदु लैयगां तां करसाणी करगा।

दूआ भाग

चाची घरे पूजी चुकी री थी तपर तिसा रे दिला च एढ़ी खबराहट पई री थी तियां जे बरसाती खड़ा च घुमणू फिरदा। तिसारे दिला रा इक फुआण बैठो कनें दूजा उठो। संझा खाई पी कनें लगी, पेई खसमा जो ताहनेयां "मारनें, दिक्ख तां 'कल का जम्मी रा छोरू, इक खल बेची सह बी तिन्ना बरसां रे कट्टुए री कनें मुलखां रा धन ली अंदा कट्टा करी ने। पर जलो मेरे भाग, मैं मरी जाणा इआं ई इस जुगें रे भुड़े च, न कदी खरा खादेया न कदी लाया। तू आ इक, सह बणी रा चुल घुसड़ू। कजो पाली रा इतना

चौणा ? कैत लाणा एह ? जे धन मिली जांगा तां होर खरदोई जाणा। बढ इन्हां म्हैंसी जो कनें बेच फेरी खलां जो सहार जाई ने।"

जोरो रा जराणा जियां जे त्रोलो तिम्रां कमाणा। तिस दा दिल तां नी मनदा था पर क्या करदा म्हैंसी बढणे पइयां। दू चौं दिना परन्त तां जे तिन्हां रिया खलां सुकी गइयां तां सिरा पर चक्की ने चली पैया सहरा दे रसते। रात कुतकी बाटा कट्टी ने दूए दिन म्यागा ई बड़ा तड़का लगाई ने दिना सिर दे सिर सहरा च पूजी गेम्रा। ओथी पूजी ने तिनी सोचेया जे पुट्टुए दिया छोटिया जेम्रा खल्ला रे इतने रूपैये मिले तां मेरिया खलां रा मुल्ल तां कोई बड़ा सैठ ई दैई सकदा। एह सोची ने सह बड़ियां-बड़ियां कोठियां रे पासे जाई ने लगी पैया बड़ियां नकरढने, "खलां लेई लम्रो, बड़ियां म्हैंसी दियां खलां लैई लम्रो"। सेठ लोक म्यागा ई घुमणे निकली दे थे। तिन्हें म्रासे पासे दियां नौकरां जो बोलेया जे इसा जो बोलां जे कुसी होर सी पासे जो चली जा तिन्हें तेढ़ा ई कीता। पर चाचा तां म्रापणे म्राप जो सेठां ते बी बड़ा समझां था। बस खलां बिकणे दी बेर थी, फैरी सैठ तिस दा क्या मुकाबला करी सकदे थे। इस करी ने सह बी कुछ तमकोया, बड़ी करेड़ दस्सी कने बोलणे लगेया," म्रोए पिच्छे हटी जा। तुसां नौकरां ने मेरी क्या गल्ल? जां म्रपणे सेठां जो बोला जे से म्राई ने गल्ल करन पुठिया-सिदियां गल्लां सुणी ने नौकरां जो बड़ी जलणी म्राई पर चाचा बी कुती घट था। सह बी सरहेर होई पेम्रा। नौकर मते थे तिन्हें सह छैल करी ने चुक्केया। चाचे जो तिन्हां ते जान बचाणी मुमकल होई गई। खलां म्रोथी ई छड़ियां कनें नठी न म्रपणे घरा दे पासे जो नठी गया।

चाचा घरे पूजेया कनें म्रपणियां घरा म्रालियां ने सारी बारदात सुणाई। तिन्हां रे घरा दा हुण घराखड़ा बणी गया था। तिन्हें दुई सलाह कीती जे इनी म्रसां रिया म्हैसी बढाइयां म्रसां इस दा हुण घर ई फूकी देणा। एह सोची ने तिन्हें राती जो तिसरे घरा म्रग लगाई कनें सह फूकी दित्ता।

त्रिया भाग

पुट्टू कनें तिस दी बहण हुण गोढ़ा रहंदे थे। रुपैये तां पुट्टुए दब्बी दे थे। खाणे-पीणे दी कोई मुसकल नी होई। पर जली दे घर री भुबल म्रजे बी तत्ती थी। तिसा खा देखी ने दोनों बहण-भाऊ इकी-दूए खा देखदे कने फेरी रोई पौंदे। पंज-दस दिन बीते होणे। पता नी, पुट्टुऐ जो क्या स्वप्न म्राया। तिनी म्रपणे बलदां जो इक गूण बुणाई कनें तिसा विच जली रे घरा री स्वाह भरी कनें सहरा रे पासे जो चली पेम्रा। बल्द मठ-मठें चला दा था। बाटा रात पई गई बाटा दे कंढे तिनी क्या देखेया जे म्रोथी चुल्हे पर रसोंबणा दी कनें पंज-सत म्रादमी गप्पां मारा दें। इकी पासे गूणी रा ढेर लगी रा कनें खच्चरां बझी रिया। एह राजे रा खजाना लेई ने जा करदे थे। पुट्टुए ललल्हांदे होए तिन्हां जो बोलेया, "जी मैंह बी एथी रात कटणी थी"। तिन्हें सिद्धे सभावें बोली ता रैंह लै भाई, म्रसां कुती एह जगह सिरा पर नैणी चक्की नें"। पुट्टुए बी म्रपणी गूण तुम्रारी ने तिन्हा दियां गूणी बाल रखी दीती कनें इकी पासे म्रपणा बल्द बन्हीं दिता।

पुट्टए दी तिन्हां कनें गल बात होणे लगी। तिन्हें पुच्छेया जे तू कुती ते आया, कुती जाणा कनें गूणी च क्या माल पाई रा पुट्टुए बोलेया जे हऊं इक्की सेठा रा नौकर आ। सेठ घोड़े पर अगे चली गया। पिछे ते मेरी खच्चर मरी गई कनें होर खच्चर कुती नी मिली। मिंजो चुगदा-चुगदा एह बल्द मिली गया, मैं इस पर ई गूण रखी कनें आई गया। तिन्हें फेरी पुच्छेया, ओए गूणी च माल क्या भरी रा। तिनी दसेया जे इसा च मोहरा (अशर्फियां) भरी रियां सह बी अपणे सिगा कढणा चाहंदा था। एह सुणी ने सह लोक इकी दूए खा देखणे लगी ए। पुट्टु खिजी रा था, छोड़ ई निन्द्र आई गई। भ्यागा तां जे पुट्टु जागेया तां तिनी देखया जे ओथी न सह आदमी न गूणी कनें न ई खच्चरां। सह पुट्टुए रिया गूणी जो लेई गई थे कनें अपणी एक गूण ओथी छड़ी गई रे थे। पुट्टुए तां जे गूण टोही तां बड़ा खुसी होया। बड़िया मुसकला नें गूण बल्दा पर लदी कने अपणे घरा जो चली पेआ।

पुट्टू घरें पूजी गई रा था तिनी आपणी बहण फेरी चाचिया बाल भेजी दित्ती जे तकड़िया बटिया मंगी ने ली औ। तां जे कुड़िये तकड़ी बट्टी मंगीं तां चाचिया जो फेरी रपैयां रा ई छरोला गया। तिसें पुच्छेया जे क्या करना तकड़िया बटिया जो? क्या अंदी रा पुट्टुए। कुड़िए दस्सी दिता जे भाउएं इक गण भरी ने रपैयां री अंदी रे। चाचिया दे दिला पर हौल पेई गया। चली आई पुट्टुऐगें कनें लगी पेई पुच्छणे बच्चा किया कमाए मेया ते इतने रपैये। पुट्टू भला महा चलाक। लगी पेआ उआरलियां-पारलियां मारने सह। बोलणे लगेया, "भाई वो चाची क्या करूं। कुनकी मेरा घर ई फूकी दिता था। छोटा जेआ टपरू था, कितनी कर धूड़ होणी थी तिस दी कनें कितनी कर मेरे बलदा ते चकोणीं थी? इक फेरा धुड़ी दा लैई गया था, एह लेंई अंदें थोड़े जेहे रपैड़ू तिसा जो बेची ने," चाची जरा निधी पिट्ठी होई ने फैरी गलाणे लगी, "मेया बच्चा क्या करूं? ध्याड़ी बी मैं तेरे चाचे ते दोनो म्हैंसी बढाइयां, खलां बेचणे भेजेया ता मार ई खाई ने आया। बल्दे जे पंज दिते तिन बट्टे, मार खादी उठी नठे। पर इनीं ता तिन बी नी बट्टे। एह तां मार खाई ने धूई खलां बी गुआई आया।" पुट्टू निहारों जेहा होई ने बोलणे लगेया, "भाई बो तां हुण हऊं क्या करूं। भाई जे चाचा बोलदा तां हऊं बी सौगी चली पौंदा, फेरी देखदा, भला रपैयां जो कुती रखदे तुसे। चाचियें फैरी बोलेया," मेया बच्चा जे हऊं अपणे घरां फूकी देऊं तां तूं अपणे चाचे सौगी जाई ने धूड़ी बेची औगा। पुट्टुऐं बोल्या, "बाह चाची तू इक बारी अपणे घरां तां फूक, दूई बल्दा पर दो गूणी नैणियां, दो गूणी रपैयां दियां आई जाणियां। हऊं चलगा चाचे सौगी, फेरी देखदा जे कियां नी बिकदी सुआह।

चाचियां औ देखया न तौ, घरा जो अग भड़काई दित्ती। मालका औणे ते पहलें ही घर फूकी छडी रा था। मालकें आई ने गालीं-गूलीं बी कढियां पर जनाना बी तां कड़े दम थी, तिसा जो तां पलैजां बेही रा था। तिसें बोलेया, "अज अच्छा जा जा तू गूणी बुणा जाई ने पहलें भेजेया था तां आई गया था नखट्टू बणी ने, हां हुण जाई ने दखेयां भला पट्टुए जाणा हुण तू सौगी देखेयां फेरी सुआह बिकदी कि नीं।" मालक समझी गया जे पुट्टुए रा जादू फुरी गई रा था पर का करदा घर ता जली चुकी रा था, सह तां बणने ते रेआ। पर पुट्टु कुण हुंदा मैंह सौगी जाणे आला? सह कोई बड़ा ई सत्यागर आ? हऊं क्या कुछ जाणदा ई नीं?

खैर तिनीं गुणी बुणाइयां कनें दूई बल्दा पर घूड़ भरी ने सहरा जो बैचणे चली गया। सहरा पूजेया लगी पैया म्यागा ई बोलणे घूड़ लेई लग्रो, सुग्राह लैई लग्रो। हूण बी तिस जो पहले साई मार ई पई। बचारा पसड़ग्रां जो झसदा-झसदा घरें, पुजी गया। हुण तिस जो एढ़ी जलणी ग्राई जे तिनीं पुट्टुए जो मारने दा पक्का हठ करी लेग्रा तिनी सोचेया भई एह् राती ई बढी देणा।

जनाने फेरी समझाया भई जे तें एह् बढी दिता तां राजे तेरा कोहलुए धाण पीड़ी देणा। इस ते तू एढ़ा कर जे इस जो किग्रां न किग्रा बन्ही ने दरचाए च रुढ़ाई ग्रौ। सर्प बी मरी जाग्रो कनें सोठा बी बची जाग्रो।

पुट्टू राती सुती रा था। चाचें तिसदें मुंहग्रा च कपड़ा तूहीता कनें सह जुट्टी ने बोरिया विच बन्द करी दिता। तिनी बोरी पर चक्की कनें दरचाए रे पासे जो चली पैग्रा। पुट्टू चाहे उमरा रा छोटा ही था पर था तां आदमी । ग्रादीए रा भार बुरा। खिज्जी गया चाचा तौंदिया रे दिन थे। बोरी बाटा रे कंढे डंगे पर तुग्रारी दिती कनें ग्रप्पू थोड़ी' जेही दूर इकी डाला रिया छौग्रां बैठी गया रोटिया रा टुकड़ा खादा। पाणी पीता कनें ससतोणे लगी पेया। पौणे री बेर थी कि तिस जो निन्द्र ग्राई गई।

परमात्में रा भाणा, इतने च तिस रस्तै इक गदी ग्रपणे गोठा लैई ने ग्राई गया। तिनी देखेया जे बन्ही री बोरी खड़यां करदी । तिनी लेई तां बोरी खोली दित्ती। पुट्टू सावधान करी ने खड़ा करी दिता। गदिए तिस ते बन्हणे री सारी बारदात पुच्छी। पुट्टएं बोलेया, "क्या दस्सू भाई! इन्हीं चाचें पिछलें साल हऊं ब्याही दिता था, पर हुण बोलदा जे तेरा दुग्रा ब्याह करना। घरें मेरी जनाना रोग्रा दी। एह् मिजो बोरिया च बन्ही ने नौंए सोहरियां रे ब्याणे लेई चली रा ।" गदी कुग्रारा था, तिनी बोलेया "ग्रोए ग्रारा मितरा, तू नी कराणा ब्याह तां हऊं करांदा । सम्हाल मेरियां बकरियां कनें मिजों बन्ही दे बोरियां च"। पुट्टुएं मौका तकाया कनें बोलणे लगेया', "मितरा देख! हऊं तिजों बन्हीं तां दिंदा, पर ब्याह कराई ने हटी ने इयां ग्रयां जिग्रा जे माखी फुलां परा जो ग्रौंदी । मैं ग्रपणे घरा जो जाणा, ग्रोथी रोहा-दी होणी सह मिजो" । गद्दिएं बोलेया, "ग्रोए मितरा तू झट पट कर, क्या मिजो फिकर नी ग्रपणे धणा रा।" पुट्टए सह बोरिया च बन्हीं रिता कनें ग्रप्पू बकरियां लैई ने झट पट उरें परें होई गिया। चाचा बचारा फलोई ने जागेया कनें चक्की लेई बोरी। हुण भार बड़ा था। पर तिनी सोचेया जे सै पुट्टू मरी गया होण तां ही इस दा भार बधणा लगी पया। ग्रगे दरयौ ग्राई गया। चाचे परा ते खड़ी ने बोरी दरयौग्रा च सटी दिती कने ग्रप्पु घरा जो हटी ग्राया। सह घरे पूजी गया। दोनों खसम जुग्राजस निपरचिन्दे होई गई रे थे पुट्टुए खा ते तिस जो रौंदी थी तां सिरफ बहण तिसदी।

पर चाचे पूजी रे ग्रज्जे चार-पांच ई दिन होई रे थे जे पुट्टू बकरियां-भेडां रा एक बड़ा गोठ लेई ने घरे पूजी गया चाचे-चाचिया जो छलेडा ही होई गिया, बो जलीए कमाइए, एह दरयौग्रा च ग्रप्पू रुढ़ाया, फेरी बी बची गया, बकरियां-भेंडां होर लेई ग्राया। चाचिया ते मन नी मरोया। सह पुट्टए बाल पुजी गई कनें पुच्छणे लगी, "बच्चा पुट्टुग्रा!

तू इतने दिन कुती रेआ कने इतनिआं बकरियां-भेंडा कुती ते आंदियां।" पुट्टू सब कुछ जाणदां होया बी बचला बणी ने बोलणे लगेया, "चाची का दस्सू, कल्ला था कितनिया कर ल्यौदां हऊं।" चाची बी घेसली जेही होई ने बोलणे लगी, "बच्चा तू सारिया गल्ला जो दस जे कियां कियां आदियां ? । पुट्टुए बोलेया" "चाची इक दिन न, कुनकी मेरा मुंह सुती रे दा बुजी दिता कने बोरी विच जुट्टी ने हऊं दरयाओ रूढ़ाई दिता। तां जे हऊं दरयोआ दे ढुगे पाणिऐ च पुजी गया, तां मिए चाची कजो पुच्छदी तू बन्दिए। बड़ियां भारी बकरियां कनें भेडां। गद्दिएं खीर कनें भत बणाई रा कनें कढ़ी बी थी बणाई री। तिन्हें हऊं खोलेया, हऊं नुहाया धुहाया कनें फेरी मिंजो रोटी खुआई मिए नो मैं दो थालु खादे खीरी दे, बड़ा मजा आया। फैरी तिन्हें हऊं पुच्छेया जे बोल तू एथी कजो आया, कनें तिजो क्या चाहिन्दा। पहले तां हऊं कुछ डरी गया, पर तिन्हें हऊं ओगड़ुए च लेई ने बड़ा पत्याया कनें बोलेया जे कैह नीं गलांदा जे तिजो क्या चाहिन्दा। हनो, ओथी मिंजों होर तां कुछ नी दिसेया। मैं, भाई नो, बकरियां-भेंडा ही मांगियां। बस फेरी क्या था। तिन्हें गोठ कनें हऊं तिसा धारा पर कुआही ते। तां भाई हुण हऊं घरें पुजेया।

गल्ल चाचिया रे हुंडु-रची गई थी। तिसा जो साफ पता लगी गेया, जे पुट्टुए दा कोई कसूर नी हो, नलैकी ई तां सिरफ तिसा रे खसमा दी। तिसें बोलेया" बच्चा, हऊं तां पहले ही बोलदीं थी जे तू साही मुंडू तां होणे ते रेआ। गलतियां तां तेरे चाचे दियां हुन। पैसा खोटा अपणा ता सन्यारे जो क्या दोस ? बच्चा हुण तू कन्नै मैं जाणा, मैं ल्यौणियां बकरियां? फेरी मैं कने मुनियां (पुट्टुए दी बहणा) चरानियां दुई जाणियां मजे कनें। चल मेरा बच्चा असां भ्यागा ही चली पौणा तैयार होई जायां जरूर"। पुट्टुए मौका तकाया कनें बोलेया, "चाची तैं बिल्कुल ठीक गलाया। अपर मिए नो तू कजो जाणा कधकी हऊं लेई औंगा, मैं जाणा तां हा इआ ओथी पर क्या करूं तिन्हें मुठ कर कोल्थां री दाल मंगी थी, तिन्हों जो कुती ते उआड़गा, ताहीं जाणा होणा मेरा। इस गल्ला जो सुणी नें चाचिया जो होर बी बड़ा मच्छी लगी पैई, सह बोली "ना बच्चा ना, तू हुण खिज्झी ने आया, हुण मिंजो ई जाणे दे।"

भ्यागा ई चाचिए हल्ला पाई दिता, झट पट करा, बेर होई गई। पुट्टु कनें तिसरी चाची चली पए तां चाचा होरा नी मन्ने। तिनी बोलेया जे मैंह बी सौगी जाणा तिस जो कुछ सक बी था पुट्टुए पर। तां जे चाचा चली ई पेआ तां पुट्टुएं फेरी बोलेया, "अच्छा एढ़ा करा जे तुसां चली पौणा तां इक छज्ज मुगाई तिन्हें, सह जरूर सौगी नैणां" चाचिए छज्ज बी लई लेआ, बट्टी भर कोल्थ बी बन्ही ले। जांदे जांदे तिन्नों जणे दरयोआ पर पूज्जे। पाणिऐ दे इक्की घुमणुएं गें पूजी ने पुट्टुए बोलेया जे गदिए एथी लेयाई ने कुआहया था हऊं एही आ रस्ता आ ओथी दा। चाचियें कोल्थां री गठ कनें छज्ज लेया कनें छाल दैई दिती दरयौआ बिचा जो। बचारी घुमणुएं च फसी गई बडियां देरा बाद सेह दूए कंढे दिस्सी छज्ज अजे बी तिसा रे हत्थें ई था। तिआं जे सेह गासा जो उभकी भी तिसें छज्ज लेई नें निकलनें री कोस्त कीती हुंगी पर पुट्टुएं बोलेया, "चाचा ! चाचिया जो बकरियां मिली गइयां, एह सदी दी तुसां जो बीं।" चाचे ते समल्होई नी होया। इक तां जनानां रे जाणे रा दुख, दूए पुट्टुएं बकले री दित्ता ओ तिनी बी छाल मारी दिती कनें दोनो छोहरू गद्दियां बाल पूजी गए

(मरी गए) पुट्ट घरा जो चली आया कनें अपणियां बहणीं सौगी मजे नै रहणे लगी पेया ।

शब्द	अर्थ
सौगी	साथ
खेतरू	खेत
घरोणा	सूर्य डूबना
गास	ऊपर (आकाश से)
तौंदियां	गर्मियां
फफड़े	बनावटी बातें
भुबल	चूल्हे की गर्म राख
मठे-मठे	धीरे-धीरे
बाणा	रास्ते में (बाट-रास्ता)

चार अनमोल गल्लां

—बी० आर० भारद्वाज

इक बारी इक पंछियां दा डार उडदा-उडदा, अपणिया मस्तियां विच, कदी हेठां जो, कदी उपरा जो हुंदा होया इयां ही बिना किसी लक्ष्य ते जा करदा था। भौंएं इन्हां रा कोई घर नी था, कोई बार नी था, इन्हां जो अन्न कट्ठा करने री या होर चीजां कट्ठियां करने री कोई चाहना नी हुंदी, पर पेट वैरी तां कन्ने लगी रा, इस जो किती ख्वन ? ए पेट इस जीवा ते क्या नी करांदा। ए जितने बी पुन और पापां री गठड़ी बन्हदा, ए सब कुछ ए वैरी पेट ही करांदा और कदी-कदी ए पेट इस जीवा जो धोखे विच लियाई ने मरने पर मजबूर करी देंदा।

ठीक ए ई हाल इनां पंछियां रा था। उड़ी रे थे, स्वतन्त्र थे ए, किसी रा डर नी था इन्हा जो जिस पासे जो अगला पंछी मुंह मोड़ी देंदा था, उसी पासे जो सारे मुड़ी जांदे थे। कोई बी इन्हां रे रस्ते जो रोकणे आला नी था, इन्हां रे रस्ते कोई कंडा नी था, कोई उथल-पुथल नी थी, हम्वार था, साफ था होर निर्विघन था इन्हां रा जीवन रस्ता।

बगतां भौंदें देर नी लगदी। पंछियां री नजर जमीनां पई गेयां दाणियां पर पेई। लालच बुरी बला हुंदी। दाणेयां जो देखदेयां ही तिन्हां रे मुंहआं विच पाणी भरी आया, पेटा विच चूहे नचणे लगी पये और पंछियां रा अग्गू धरती खा जो उतरने लगी पेआ।

बैठदे-बैठदे पंछी बैठदे गये कने आपणिया भुखा जो मटाणे वास्ते दाणेयां जो चुगणे रा प्रयत्न करने लगी पए। पर अजे बी इक पंछी भुइयां तिक नी पूजी सक्या था। ए कमजोर था कने छोटा था। इस री चाल हल्की थी। इस करी ने ए अपणे साथियां ते काफी पिच्छे रेई जां था। ए कमजोर पंछी बी अपणिया जानी री बाजी लगाई ने, अपणे टुंडुआं जो छड़ी नै कनें फंगां जो नरेड़ी ने, नढ़ाल होई ने दाणेयां रे नेड़े पूजणा चांहदा ही था कि जमीनां पर पैई रा जाल बंद होई गया और सारे पंछी चीं-चीं करदे होये सकारिये रे जाला च फसी गये। ए देखी ने ए कमजोर पंछी बी अपणे साथियां कनें जाणे री इच्छा करने लगेया। तिसजो पता था कि कल्हे रहणे ते तिस जो किन्हां-किन्हां मुश्कलां रा सामणा करने पौणा। पर हुण तां जाल बंद होई गया था। शिकारी अपणिया सफलता पर मुसकड़यांदा होया जाला जो कट्ठा करा दा था।

कमजोर पंछियें झट अपणे टुंड नरेडी लये, फंगा जो ताणी ने फड़-फड़ाणे लगी पेआ और इक पासे जो चली पेआ। अपणे साथियां जो जाला च फसदेयां देखी ने भौंए इस जो बी मरने री इच्छा होई थी, इस रे दिला च त्यागा री भावना पैदा होई गई थी पर हुण सेह भावना खत्म होई चुकी री थी। दूए रिया मौती जो देखी ने इस किसमा री भावना

औणा कुदरती गल्ल है पर थोड़िया ही बेरा बाद जीव अपणे सांसारिक धंदेयां विचा आई ने मोह माया विच फसी जांदा होर फेरी मरना तां बड़ा मुश्किल हुंदा। बोल्दे हन जे सौणे बराबर सुख नी हैं कने मरने बराबर दुख नी है।

ए पंछी कुछ ही दूर गया था कि ए थकी ने इकी डालिया पर बैठी गया । इतने विच इकी कौए री नजर इस पर पेई गई। कौ सबी ते चलाक पंछी हुंदा। इनी ताड़ी लेआ जे ए पंछी कुछ कमजोर है। इस करी ने कौ इस पर झपटेया। पंछिये जो अपणी जान हुण बड़ी प्यारी लगणे लगी थी। तिनी उड़ी ने अपणी जान बचाणे चाही पर क्या करदा इक तां कमजोर दूए अपणेया साथियां ते बिछड़ने रा दुख तिस जो उडणे नी दिंदा था। थकी ने सेह इकी डालियां पर बैठी गया। पर कौ तां पिच्छै-पिच्छै लगी रा था सेह फेरी आई ने झपटी पेआ। पंछियें बाल कोई चारा नी था, नढाल था, बेबस था सैह। तिनी भुंइयां जो छाल देई दिती या बोली सकदे जे सेह पेई गया। दूये पासे कौ कड़ां-कड़ां करी ने समझा रा था कि काहली किया इस रा स्वाद चखुं। सह फैरी झपटेया। हुण पंछी किती जांदा, क्या करदा। सैह बेबस होई ने अपणिया जानी जो बचाणे खातरतथी ही बूटेयां विच बड़ी गया। ए बूटड़े बड़े घणे थे, मते सारे थे। कौआ रा इन्हां विच बड़ना मुश्किल था। कौए कड़ां-कड़ां करी ने होर बी मते कौ अपणिया मजती जो सदी लये। तिने पंछियें जो टोलणे री काफी कोसत कीती पर ए सारियां कोशसां आफल रैंइयां ।

कौ हारी फारी ने चली गई रे थे। पंछिये जो ए बूटड़े कनें बांका घर मिली गया था। सेह रोज बाहर निकली ने थोड़ी बौत चोग चुगदा कनें फेरी झट पट तिन्हां बूटड़ेयां च बड़ी जांदा था।

इन्हां बूटड़ेयां रे बखा इक छोटा जेआ बःरड़ा था, इस बःरड़े पर बड़ी बांकी हरी-हरी घा थी कनें गब्बें इक छोटा जेआ पिपला रा पपलोटु था। जिस दिन कमजोर पंछियें इन्हां बूटड़ेयां री शरण लेई थी तिस ते दूए दिन ही इक महात्मा अपणेयां चेलेयां कनें तिस पपलोटुये हेठ बैठी गया। पंछियें देख्या जे दिन भर चेले बाहर चली जांदे कनें संझिकियां भिच्छा लेइ ने हटी औंदें, रसो बणदी होर खांदिया बारियां परमात्मे रे नावां पर कुछ भोजन रखी ने सटी देंदें। सेह पंछी झट निकलदा, तिस भोजना जो खांदा होर तृप्त होई ने फेरी अपणे घरां विच बड़ी जांदा।

भोजन पाई ने महात्मा उपदेश देणा शुरू कर्रा देंदा कनें चेले ध्यान मग्न होई ने सुणनें लगी पौंदे। इस तरीके ने कई दिनां तिक ओथी उपदेस हुंदा रेआ कनें चेलेओं सौगी-सौगी पंछियें रे दिलां च वी ग्यान बसी गया, सेह बी आदमियां री बोली बोलणे लगी पेआ कनें बड़ा तर बणी गया। ए कुसी दी गल्ल सच्ची होई गई कि लकड़ियां कने लोहा बी तरी जांदा। चेलेयां कनें पंछिया रा बी कल्याण होई गया। सच्च बोलदे जे जैसा खाये अन्न वैसा बणे मन, जैसा मन बणे तैसी होये बुद्धि, जैसी होये बुद्धि तेढ़ा करे कर्म और जेढ़ा जे करें कर्म, तेढ़ा ही भोगे फल। हुण पंछी चतर बणी गई रा था । चेलेयां कन्नें

पंछिया रा बी कल्याण होई गया। कइयां दिनां बाद से साधू ओथी ते चली गये। हुण पंछिये रा बी ओथी दिल नी लगदा था। तिन्हां गयां ते बाद बी सेह कुछ दिन ओथी रेआ पर उदास होर बेचेन। हुण तिस जो जोर बी होई चुकी रा था इस करी ने सेह इक दिन लाचार होई ने ओथी ते उड़ी गया।

कई दिनां तिक पंछी अपणा जीवन बतीत करदा रेआ और इक दिन घुमंदा-घुमांदा लालचा विच आई ने ए पंछी बी इक शिकारिये रे जाला विच फसी गया। शिकारी तिस जो अपणे घरा जो लेई गया। घरें जाई ने तिनीं अपणिया जनाना जो बोल्या जे अज्ज इक्को ई पंछी मिलेया इस करि ने इस दी ही सब्जी बणाई लेआ।

मौत सामणे देखी ने पंछिये रा दिल कम्बी उठेया। क्योंकि सेह तां आदमिये री बोली जांणदा था, समझदा था कनें गलांदा था। तिनी इक विध सोची होर शिकारिये जो बोलणे लगया "कि हे शिकारी! मेरे टके भर मासा जो खाई ने तेरा क्या बणनां? तू ए कितने कर दिन खाणा? जे तू मिजो छड्डी देयो तां तिजो हऊं चार ऐसियां अनमोल गल्लां दस्सूं सेह जे सारियां उमरा तेरे कम्मा औणियां, तू तिन्हां ते नाम पाणा, धन कमाणा। तेरे ही नी बल्कि तेरेयां बच्चेयां वास्ते बी कम्मा औणियां, इन्हां ज्ञाना रियां गल्लां जो सुणी ने शिकारी बड़ा रहान होया। ए पंछी होर ए ज्ञाना रियां गल्लां? शिकारिये रे टबरा रे होश ठिकाणे आई गये। तिन्हें पंछी फेरी पिंजरे विच बन्द करी दिता कनें तिस जो शिकारी बोलणे लगया कि हे ज्ञानी पंछी मिजो तेरी गल्ल मंजूर है तू कम्मा औणे आलियां चार गल्लां सुणा फैरी हऊं तिजो छड़ी देंगा। पंछी बोलणे लगया :–

(1) होई बीती रिया गल्ला पर क्या पच्छताणा?

यानीः–सेह जै घटना होई चुकी हो, सेह जे गल्ल बीती चुकी हो तिसा ते सबक तां लैणा चाइंदा, पर तिसा पर कदी बी पच्छताणा नी चाइंदा।

ए बोली ने पंछी चुप होई गया। शिकारिये जो सुणने री उत्सुकता बधणा लगी। तिनी पंछियें जो बोलेया जे हे ज्ञानी पंछी तू छोड़ चारे होर तिन्ना गल्लां जो बी दस्स ताकि हऊं तिजो छड्डी देऊं। ए सुणी ने पंछी अग्गे बोलणे लगया : –

(2) सेह जे गल्ल समझां विच नी आओ तिसा पर क्या विश्वास करना ?

(विश्वास नी करना चाइंदा)।

हे मेरे प्यारे भाई! सेह गल्ल बात जे समझा विच नी बैठो, तिस पर कदी बी विश्वास देखेयां करदा, नई तां खता खांगा ।

(3) हत्थें आई री चीज कदी बी छडणी नी चाइंदी।

हे संसारी मनुख ! जो चीज़ परमात्मा तिजो देई देयो तिसा पर ही सतोख करी ने तिसा जो ही स्वीकार करेयां । एड़ा देखेयां करदा जे थोड़िया जो हत्था ते गुआंदा कनें मती हत्थें औणे ते रैंदी (हत्थे नी औंदी) और दुई पासेयां ते जांदा ।

पंछी फेरी चुप होई गया । शिकारी प्रार्थना करने लगेया जे हे ज्ञानी पंछी तू चुप मत हुंदा, बोल्दा जा । तेरियां गल्लां ते मिंजो बड़ा आनन्द औआ दा । इस करि ने तू झट पट चौथिया गल्ला जो बी गला ।

पंछी बोलणे लगया कि हे मेरे प्यारे शिकारी देख ! मैं अपणे वचनानुसार तिजो तिन्न गल्लां सुणाई दितियां । पर चौथी गल्ल बहुत ही अनमोल गल्ल है, तिसा विचा ते ज्ञान चुड़ी-चुड़ी ने पौआ दा । सेह गल्ल इतनी पवित्र है कि इस लोहे रे पिंजरे अन्दरा ते या किसी रे बंधना रे अधीन होई ने सेह गल्ल नी सुणाई जाई सकदी । इस करी ने पहले तू मिंजो आजाद करी दे तां तिजो हऊं चौथिया गल्लां जो सुणाहंगां । इसा गला जो सुणी ने तू अमर होई जाणा । सुणने वालेयां तेरेयां बाल बच्चेयां सबीं अमर होई जाणा, मरने-जमणे रे झगड़े ते छुट्टी जाणा । इस करी ने जे तूं सुणने री इच्छा रखदा तां मिजों पहले छडी दे तां हऊं सुणागा ।

ए सुणी ने शिकारियें पिंजरे रा दुराजा खोली दित्ता । पंछी पिंजरे अन्दरा ते निकलेया कनें जाई ने नेड़े ही इकी डालियां पर बैठी गया । शिकारियें फेरी बिंती कीती कि हे ज्ञानी पंछी तू अपने वचना जो पूरा कर होर चौथिया गल्ला जो सुणा ।

ए सुणी ने पंछियें बोल्या, हे शिकारी ! तू मूर्ख है, अज्ञानी है । ऐसे मूर्खा गें ज्ञान सुणाणे रा मिजो कोई अधिकार नी आ और ना ही तिजो सुणी ने कोई फल मिलणा । इस करी ने हऊं हुण जांदा ।

शिकारियें फेरी प्रार्थना कीती कि हे धोखा देणे आले ज्ञाणी पंछी ! तू ए दस्सी जा जे हऊं मूर्ख कियां है जिस रे कारण मिंजो ऐसा ज्ञान सुणाणे रा अधिकार नी है । पंछियें बोल्याः– तिजो मैं तीजी गल्ल दस्सी थी कि हत्थां आई री वस्तु कदी छडणी नी चाइंदी, पर तैं तिसा पर कोई विचार नी कीता, कोई अमल नी कीता और तेरा कीता है, जे पंछी मारो और अपणेया बच्चेयां रा पेट भरो । अज्ज तिजो परमात्मे सिर्फ हऊं इक पंछीं दित्ता था । पर तैं हऊं बी छडी दित्ता । हुण तू दस्स जे अपणा और अपणे बच्चेयां रा पेट केस कनें भरना । इस रा ए मतलब होया कि तू सिरफ ज्ञान सुणना चाहंदा पर तिस ज्ञाना पर विचार करने री तू विच लोए नी है । हे मनुख ! हऊं ए जाणदा था कि जे तैं ज्ञान प्राप्त करी लेआ या इस पर अमल करी लेआ तां तू हऊं नी छडणा यानी मेरा मास खाई ने तू अपणा और अपणेयां बच्चेया रा पेट भरी लैणा और मेरी जान जाणी । पर मेरे गुरूए दस्सी रा कि असली साधु या सच्चा साधू ओ हुंदा सह जे अपणे प्राणा री बाजी लगाई ते, अपने प्राणा रा मोह त्यागी ने दूये रा भला करो । मैं अपणे प्राणा री बाजी लगाई ने तिजो ज्ञान देणा शुरू कीता था । जे तू विच अक्ल हुंदी तां तू सारी उमर मिंजो कैद करी ने ज्ञान सुणदा रहन्दा, पर तू विच तां सेह सोचणे री लोये नी है इस करी ने तू ज्ञान सुणने रा अधिकारी नी है ।

हुण मिजो बी कुछ दिन जीणे रा मौका परमात्मे देई दिता, हांऊ इस मौके जो अपण हत्थां ते नी छडी सकदा। मैं उस परमात्मे रा धनवाद करदा तिनी जे मेरी उमर बधाई ने राम-राम बोलणे रा मिजो मौका दिता। ए बोली ने पंछी राम-राम करदा होया उड़ी गया कनें शिकारी अपणियां मूर्खता पर सोचदा रैई गया।

शब्द	अर्थ
फंग	पंख
ताणी ने	फैला कर
झपटेया	उछल कर पकड़ा
भुंइयां	नीचे (भूमि पर)
छाल	छलांग
भिच्छा	भिक्षा
कोसत	कोशिश

अक्लबंद नूंह

—बालक राम भारद्वाज

इकी दिनां री गल्ल ई जे इकी गावां च इक आदमी रहंदा था, खरा सिर कढ़ पैसे आला था। लोक तिस जो साह जी बोलदे थे। पैसा तिस बाल इतना था जे सेह अड़ेसा पड़ेसा रे सारे गरीब गुरबयां रियां जरूरतां जो पूरा करदा था, भौंए म्हीने रा साढ़े बारह रूपैये ब्याज ही लैंदा था। बोलणे-चालणे च बड़ा मिट्ठा कुसी बाहर के ने बी गलाणा होए तां बी बच्चा, कुत्तु कनें भाऊ करी ने बोलदा था। कदी कदाई धरमा रा कम्म बी करी दिंदा था। पर सिर कढणे वास्ते ही हुंदा था। जिमींदार बी बड़ा था पर खेतरा रे कम्मा जो साझी ही रखी रा था। क्या करदा बचारा, अप्पू जो तां लैणे देणै ते ही बैहल नी औंदी थी। चिट्टा कुर्त्ता कनें चिट्टी मलमला री धोती लगाई ने होर मत्थे जो लाल प्युले करी ने राम-राम बोल्दा होया तां जे कुसी सामिआं गे पैसेयां मंगणें जांदा ता बस एढ़ा लगदा था जणता प्रोहत ब्याह पढ़ने चली रा हो। पूजा पाठ इतना था जे रोज पैया भ्यागा-संझा घंटी बजाणी, धूप धुखाणा, आरती गाणी कनें संख बजाणा तिस दा नता नीम था। एह गल्ल जुदी ई जे आरती गादें-गांदे बी तिसरा दिल स्हाबां कताबां च फसी रहंदा था।

इक दिन साह जी भ्यागा ही अपणिया पूजा पर बैठी रा था कनें तिस री नूंह बाहर सूहण सोत देणे लगी री थी। दिन सिरो गई रा था कि इक साधू-महात्मे आई ने अलख जगाई दित्ती। तिनी बोलेया "धरम सहाई" नूहएं अपणे लम्मे घूंडा विचा तेही बोली दित्ता, "एथी नी आ भाई"। साधुएं बोलेया, "खांदे क्या ? " नूहएं बोलेया, "बाही साही"। साधुए बोलेया, "कल्ला जो क्या"? नूहएं, बोलेया "तू साही"। एह सुणी ने साधू चली गया।

साह जी तां धूप धुखाई ने माला जपां रे थे, पर इंद्रियां अपणा ही कम्म करने लगी रियां थियां साधुए रियां गल्लां री कुछ भिणक तिसरे कन्नां तिकर बी पुजी गई थी। सह सुणी ने ही बजाहगी गया था। भौंए गल्लां ता तिस जो सणहोई गईयां थियां, पर तिसरे पल्ले कुछ बी नी पैया था जे क्या साधुएं पुछेया क्या नूहएं गलाया। तिनी झटपट पूजा मुकाई कनें राम-राम करदा होया अरग देणे चली पैआ। तिस जो इक इक पल कटणा औखा होई गई रा था। तिसरे दिला च एह ई घोल मथोल लगी रा था जे नंहआं कनें कुस दी क्या गल्ल होई। इक ता तिसरी नूंह, दूए जुआन कनें तीए कोई मरद एढ़ी ऊट पटांग गल्ल करी जाओ-एह ही चीज घुण बणी ने तिसरे दिला जो खाणे लगी री थी। जियां कियां तिनी अरग दित्ता कनें हटी ने अणदेखेयां-ई जलनिया च भरोई ने, गलसीड़ां फुलाई ने नूंहआं जो हक्का पाणें लगी पैआ, "लाड़िए-ओ लाड़ी"। नूंह सेह जे हुण अन्दर कैतकी लगी री थी, अपणे घूंडा जो होर लम्मा करदी

होई झट चारे दुराजे ते निकली आई कनें सुणदी होई बोली, "हां जी, क्या बोला दे तुसे ?"

साह् जी जरा अकड़ी ने बोलेया, "तू कनें गल्ला कुण करा दा था।" नूंह जरा हल्की होई ने बोली, "जी एथी इक साधू जेहा आई रा था" । तिस रिया गल्ला सुणी ने तां सौहरे जो तवार नी होया पर ससें हामी भरी कनें बोली, "हां एथी इक डंडा जेहा गला रा था कुछ की" । जबरे जो कुछ घरेठ जेहा आया। सेह कुछ सान्त होई ने बोलेया, "ता सेह क्या था गला दा ?" नूंहएं बोलेया सेह भिच्छा मंगा था। साहैं कुछ आद करदे होऐ बोलेया, भिच्छा ? न तिनी तां कुछ (आद करदे होए) होर ई बोलेया था खबनी जे "धरम हो सहाई" कुछ एढ़ा जेहा बोलेया था।

नूंह : अच्छा हां तिनी बोलेया था "धर्म सहाई"

सेठ : ता क्या मतलब होया इस दा ?

नूंह : दान पुन करी ने तुसे कुछ धरम कमाई लेआ तां जे लोड़ भीड़ पोणे पर, औखे भारी औणे पर कमाई रा धरम तुसां रा सहाई बणो।

गल्ल कुछ गम्भीर बणी गई। जबरे री धार्मिक कृति जागी उठी तिनी जरा पोले जेहे मुंहएं पुच्छेया,

सेठ : फैरी तें क्या बोलेया ?

नूंह : एथी नी भाई।

सेठ : इस रा क्या मतलब ?

नूंह : एथी धरमा रे नौआं पर कोई कुछ नी दिंदा।

सेठ : (मत्थे पर त्रयोठां पांदा होया) तिनी फेरी ता नी कुछ बोलेया ना ?

नूंह : तिनी बोलेया, "खांदे क्या" ?

सेठ : इसा रा क्या मतलब ?

नूंह : जे तुसे धरम नी करदे, दान नी देंदे तां तुसे इतने मीर कियां बणे। तुसां रा घर दाड़ए साही कियां भरोई गया ?

सेठ : तें क्या जवाब दिता ?

नूंह : बाही-बाही ।

सेठ : इधी रा क्या मतलब।

नूंह : इस रा मतलब होया जे असे पिछले जन्मां च कीते रे करमां री कमाई खांदें। सह जे असें पहले धरम कीती रा, तिसरे सहारे अज्ज खरा खांदे कनें खरा लांदे ।

सेठ : फेरी तिनी क्या बोलेया ?

नूंह : कला जो क्या ?

सेठ : इसा गल्ला दा क्या मतलब होया ?

नूंह : इसा गल्ला रा मतलब होया जे पिछले जन्मा च तुसे खरी कमाई कीती थी, बांके करम कीते थे, दान-पुन कीता था, तिस रा फल तां अज्ज भुगता रे,

खा-पीआ करदे । पर हुण तुसें दान-पुन करना छडी दित्ता, तां तुसे कला जो (अगले जन्मा च) क्या खांगे।

सेठ : बच्चा फेरी तें क्या गलाया ?

नूंह : मैं बोलेया जे, "तू साही"।

सेठ : इसा गल्ला रा क्या मतलब होया ?

नूंह : जी इसा गल्ला रा मतलब होया जे जिया जे सेह साधु अज्ज दर-दर रूला दा, सबीं दे दुराजे अग्गे अपणे ठूठें जो अग्गे करा दा तियां ही अगले जन्मा च तिस साही असां जो बी झोली पाई ने मंगणा पौणा।

जबरा इना गल्लां ते बड़ा प्रभावित होया तिनी अपणियां जनाना जो कणें नूंहां जो बोलेया जे पेड़ूआं हेठां ते सूही-साहीं ने जेढ़े थोढ़े बहुत दाणे कट्ठे होण—तिन्हां जो भिख भ्यारुआं जो देई देआ करा।

धरमा री कुछ रीत तां घरा अन्दर चली पैई थी पर जरो बी नूंहा रे दिला जो सान्ती नी मिली कइयां कर दिना परन्त तिसें पेड़ूआं हैठा ते दाणे सूहें कणें पीह कनें तिन्हा री रोटी बणाई के इक दिन अपणे सौहरे रे मुंहां अगें रखी ती। पहले ता सौहरा रोटियां देखी ने कुछ रहान जहां होई गेया पर फेरी बी सह खाणे लगी पेया। इक दो ग्राह ही खादे होणे, कि तिस ते हई नी रैई होया, तिनी बोलेया, "एह आटा कुनी घराटिए पीहती रा"? तुसां ते गलाई ने होया था तिस जो जे ए अन्न रा कुअन्न कुस खाणा " ...... इतने च ससें गल बढी दिती, तिसें बोलेया, नां एह् ता, लाड़िए अज्ज आपू पीहती। जबरें बोलेयां कांह घराटी मरी गई रे थे' जे कम्म नी कमाणे आओ ता कमांणा ई कजो जलेया। कुनी बोलेया था इसा जो आटा पीहणे जो? कुस खाणी हुण एह रोटी ? "

नूंह कुछ डरी गई पर फेरी बी दिल बट्टी ने गलाई ई दिता। जी मैं एह् आटा तिन्हां दाणेयां रा पीहती रा, से जे पेड़ूआं हेठा ते कठे कीती थे "। "तां कांह एढ़ा? कांह कीता ? जबरें बोलेया। नूंहए जवाब दिता, "ध्याड़ी तिनी साधुए बोलेया था ना जे इस जन्मा रा कीती रा दान-पुन्न अगले जन्मा च मिलदा कनें तांही तुसे बोलेया था जे पेड़ूआं हेठा ते दाणेयां सूहीं ने मंगतेआं जो देई देआ करा। ता जेड़ा जे असे हुण देंगें तेढ़ा ही अगले जन्मा ने असां जो मिलणा। तां हुण गल्ल पक्की होई जे असां जो अगले जन्मा च एढ़े आटे री रोटी खाणा पौणीं, अज्ज तुसां ते इस आटे रिया रोटिया दे दो ग्राह नी खाई होए तां अगें कियां निरभा एढ़े आटे रिया रोटिया ने। जे तुसे हुण ही एढ़ी रोटी खाणे रा सभाव पाई लेंगें तां तुसां जो फेरी मुसकल नी हुणीं इस करी ने हुण तिन्हां दाणेया रे आटे री रोटी बणाई ता जे तुसां जो फैरी मुसकल नी हों"।

सौहरा सुणी ने बड़ा सर्रामदा होया कनें बोलेया जे अज्जा ते परन्त भिख भख्यारूआं जो बांका छंडी रा, फड़ाकी रा नाज देआ करा। इस तरीके ने तिस घरा अन्दर धरमा रा बासा होया।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
प्युले	पीले	भ्यागा-संझां	सुबह-शाम
धुखाणा	जलाणा	बाही साही	बासी
अरग	जल चढ़ाना	जबरा	बूढ़ा
पीहणा	पीसना		

सुतेला पुत्त

—रूप शर्मा निर्दोष

एक ग्रांएं च इक रमाकान्त नां दा ब्राह्मण रैहंदा था। सैह बड़ा इ धर्मात्मा था। तिदा इक पुत्र था तिहदा ना था चंचल। किछ सालां परन्त चंचले दी मां मरी गई। चंचल छोटा इ था। रमां कान्ते दूआ ब्याह कराई लिया। दूई जनानां बड़े तिखे सभाने दी थी। तिसा दे किछ सालां परन्त तिन चार न्याणे होई गये। स्है अपणें न्याणियां जो तां कणका दी रोटी दिन्दी थी कनै चंचले जो बूरे दी रोटी पकाई देणी। थोड़ियां दिनां परन्त रमा कान्त वि मरी गिया कनैं तिस ते परन्त सैह चंचले पर होर जुल्म लगी पई ढाणा। तिनां सैं डंगरियां चारना भेजी देणा कनैं तिस जो बूरे दी रोटी भेजी देणी।

इक दिनां ऐंकलू पकाए कनैं अपणियां न्याणियां जो खुआई दिते। तिसा दिया कुड़िया इक ऐंकलू लुकाई चंचले जो दैई दित्ता। चंचलें सैह ऐंकलू जमीनां च दब्बी दिता। थोड़िया दिनां परन्त सैह जमी पिया। किछ दिनां परन्त तिसा ऐंकली ऐंकलू लगी पये। चचलें रोज ऐंकली पर चढ़ी नै ऐंकलू खाणे कनैं बूरे दी रोटी गाई जो खुआई देणी।

इक दिन चंचल ऐंकली पर चढ़ी करी ऐंकलू था खा दा तित्थु इक राक्षणी बुढ़ी आई बोलणां लग्गी बच्चा मिजो बि ऐंकलू खुआई दें। तिनीं इन्कार कीता। तां जे बुढ़िए बड़ा इ जोर पाइया तां चंचलें उपरे ते इक ऐंकलू सटी दिता लग्गी बोलणा बस्ता जे तू देणें तों थल्लें आई करी देह। सैह भनि गिल कने थलें आई करी देणा लग्गा। बुढ़िए झट सैह चुकिया कनें झोले च पाई लिया अग्गें जाई करी बुड़िया झोली रखी दित्ती कनैं गोहटियां लगी पई चुकणां। चंचल झोले बिचे ते रड़ाया कनैं बोलणा लग्गा भाई मिजों कहड्डी लिया कनैं बिच पत्थर भरी दिया। तिनां लोकां स्है कहड्डी लिया कनैं बिच पत्थर भरी दित्ते। तां जे बुड्डी घरैं पुजी तां बिच पत्थर निकली सैंह बड़ी दुखी होई।

कईयां दिनां परन्त स्है बुड्डी फिरी आई कनैं चंचले ते ऐंकलू मंगे। सैह बोलणां लग्गा चल खसम खाणी फफे कुटणी तिहाड़ी बि मिंजो झोल च पाई नैं लैई गियो थी। बुड्डी लग्गी बोलणां न ओऐ बच्चा सैह मरी रंड कुण थी मैं नि ऐ सैह। चंचलें दे दिले च दया आई गई सैह बुड्डिया जो ऐंकलू लगा देणा कनैं बुड्डिया झट चुकया कनैं झोले च पाई लिया। लगी बोलणा जे बच्चा हुण निकल कियां निकलदा हण। हण तां लूण लाई नैं कनैं तली नें खागी तिज्जो। बुड्डी तिजो घरे जो लई गई।

घरे जाई नैं बुड्डी अपणी धीया जो लग्गी बोलणा बच्चा तूं कड़ाइयां च तेल गर्म कर कनैं इहदे टुकड़े टुकड़े करी नैं तली सट। तां जे बुड्डी चली गई तां तिसा दी धी तिसा

जो पुच्छणा लगी कि भई तेरे बाल लम्मे कियां होइयो। चंचलै बोलिया तिज्जो खरे लग्गा दे। तां तिनां बोलिया हां। तिन्नी बोलिया मेरिया मेंऊ ऊखलीया च पाई नैं कुटियों। तिनां कुड़िया बोलिया मेरियां बि कुटी नैं लम्मियां करी दे। तिनीं कुड़ियां दा सिर उखलिया च पाइया कन्नै झट पट ऊपरे ते मारियां कुड़ी मरी गई। तिन्नी सैंह बहड्डी कनैं तली सटी अपु उसा कुड़िया दे कपड़े लाई लए। तां जो बुड्डी आई ता बोलणां लग्गी बच्चा तली सट्टिया तां सैंह बोलणां लग्गा हां। बुड्डी खाणा लग्गी कनैं बोलै बड़ा भारी सुआद रो लग्गा दा। खाई पी नैं सै चंचले जो बोले बच्चा मेरैं सिरैं जूं तां दिख। तिनी बोलिया उसा रिड़िया परे जो चल ओथु दिखदा ऐ चली नैं। बुड्डी चली पई। तिनीं रिड़िया पर बठाई बुड्डी कनैं धक्का दैई दित्ता। बुड्डी थल्लै पई कनैं मरी गई। चंचल मजे नैं घरे जो आई गिया।

शब्द	अर्थ
तिखे	तेज
न्याणे	बच्चे
सटी दित्ता	फैंक दिया
रड़ाया	चिल्लाया
खांगी	खाऊंगी
धीया	लड़की
बड्डी	काटी
रिड़िया	ऊंचाई

अपणां अपणां भाग

—रूप शर्मा निर्दोष

इकी राजे दियां छे राणियां थीयां । तिनीं इक बरी इकी जंगले च राक्षशा दी सोहणी कुड़ी दिखी कनैं तिसां नैं ब्याह कराणे दी चाह प्रकट कीती । राक्षश बड़े खुशी होये कनैं तिनां तिसा कुड़िया दा ब्याह राजे नैं करी दित्ता । तां जे स्है ब्याह कराई नैं राजे दैं घरे पुज्जी तां तिसां जो मास खाणे दा ढब था । तिनां राजे दे घोड़े कनैं होर माल खाणा कनैं लहु राणियां दैं मूंहें लाई देणा । इक दिन राजे पुछिया तां बोलणां लग्गी सैंह राक्षणी राणी भई तुहाड़ियां छे राणियां खांदियां जे झूठ ऐ तां दिखी लिया तिनां दैं मूंहें खून लग्गिया । तां जे राजे दिखिया तां सचमुच इ खून था लग्गिया । राजे जो बड़ा क्रोध आइया कनैं तिन्नी छेओ राणियां मुक्के खूए च तुआरी दितियां । तिन्नां सारियां दैं न्याणे होणे थे । सह बथेरा राजे जो गलाई रियां पर राक्षणीयां दा जादू तेजथा ।

तां जे स्है छे राणियां खूए च तुआरी दित्तियां तां तिनां दैं बारी-बारी न्याणे होए तिनां सैं न्याणे बढ्ढे कनैं बण्डी करी खाई लए । छोटी राणियां दैं न्याणा (मुन्डु) होइया तां तिनां तिस जो बढ़णे ते इन्कार करी दित्ता । तां सैंह बाकी दियां राणियां बोलणां लगियां तू जेहड़े सारे न्याणे खादियो तिनां देह । तिनां राणियां सैंह लुकाइयो थे सैंह झट कहड्डे कनैं देई दित्ते ।

सैंह मुन्डु हुंदा हुंदा बड्डा होई गिया । तिस जो गुआलूएं बाहर कहडणां कनैं तिनीं फिरना तुरना कनैं संझा जो फिरी तुआरी देणां । इक दिन राजा तिस पासैं आइया तां तिनीं तिस मुन्डुए जो पुछियां तू कुस दा मुन्डु ऐ तां तिनीं बोलिया राजे दा । राजा हैरान होइया कनैं राक्षणी राणी घबराई गई सैंह बोलणां लगी एह नि होई सकदा जे एह राजे दा मुन्डु ऐ तां मेरियां प्योकियां दे बागे बिचा इक नार लिया । सैंह मुन्डु चला गिया । तां जे सैंह गांह पुज्जा तां इक साधू था बैठिया तिस पर जाड़ बूटे थे जमियो । तिनीं मुन्डुए स्है पुट्टे कनैं तिस दी सेवा कीती । तिनीं साधूएं बोलिया बच्चा मंग क्या मंगदा ऐं । तिनी सारी गल सुणई दिती । साधूएं बोलिया लैं मैं तिज्जो तोता बणाई दिंदा हां तू दौड़ी नैं जा कनैं नार मुहैं च पाई करी लई आ । सैंह गिया कनैं लैई आइया । तिस दैं पिछैं राक्षस दौड़े ता झट साधूएं नार तिस ते लई नैं लत्तां थलैं लुकाई लिया कनैं तिस जो मक्खी बणाई दिता तां जे राक्षस दिखी नैं चले गये तां सैंह नारे लैई नैं महलां देणा गिया । राक्षणी राणी सोचणजा लगी एह बच्ची नैं किहां आई गिया तिनां बोलिया जा अच्छा जे तू राजे दा मुन्डु ऐं तां मेरियां प्योकियां दिआं मेरे पिंजरे लिया सह चला गिया ।

फिरी सह तिस साधूए बल जाई रिया कनैं सारी गल सुणाई दित्ती । साधूएं बोलिया तू जां दा इ राक्षणीयां दी माऊ जो बोलियां नानी नानी मैं आई गिया बस तिनां सब अपु

दसी देणां ऐ । सैंह चला गिया । तिनीं तियां इ कीता । तिस दी नानी खुश होई कनैं तिस जो बोलणा लग्गी बच्चा एह पिन्जरे हन एह मेरा एह तेरिया माऊ दा कनैं सबनां दे । दसी दित्ते । कनैं एह चक्की ऐ इसा जो पुट्ठा फेरन तां असां सब मरी जांदे । तबां जे तिह्दी नानी पाणिएं जो गई तां तिनी सैंह चक्की पुट्ठी फेरी दित्ती । सैंह सारा इ टबर मरी गिया । तिनी पिंजरा चुकिया कनैं आई गिया ।

तां जे सैंह पिंजरे लैई करी महलां गिया तां सैंह बड़ी हैरान होई भई एह कियां लई आइया । राजा बड़ा खुशी होइया राक्षणी राणी तिह्जो खाणा दौड़ी । जियां इ सैंह दौड़ना लग्गी तां तिनी मुन्डुए राजे साहमणें तिस पिन्जरे दी इक लत मरोड़ी दित्ती । स्है इकी लता दैं भार दौड़ी तिनी सैंह बि मरोड़ी दित्ती कनैं होले-होले सारी मरोड़ी दित्ती । राजा दिखदा रिया एह सब क्या ऐ । तिनीं मुन्डुए सारी गल सुणाई दित्ती । राजे मुन्डु गलै लाई लिया कनैं झट राणियां खूए चे ते बाहर कढाई लैइयां सबनां जो लई करी घरे जो चली पिया ।

शब्द	अर्थ
सुक्के	सूखे
बथेरा	काफी
लुकाइयो	छिपाए हुए
होले होले	धीरे धीरे
झट	जल्दी
पुट्ठी	उल्टी
टब्बर	परिवार

सच्ची साधना

—रूप शर्मा 'निर्दोष'

इक राजा था तिस दिआं सत राणियां थीआं । कई जतन करणे दे परन्त त्रि राजे दे घरे कोई बच्चा नि होइया । राजा सोचदा था जे इक मुन्डु त्रि होई जांदा तां मेरा खानदान ता रेहदा । राजा रात-दिन इसी फिकरे बिच सुकदा रैहदा था । जिस बेला राजे दी सोच गहरी होई गई तां राजा कमजोर हुंदा गिया । राजे दी कमजोरी दिखी करी राणियां बि बड़ी दुखी होई गइयां । तिन्हां सोचिया जे राजा ज्यां इ दुखी रिया तां हो न हो इक दिन असां जो छड्डी करी न चला जाए । तिन्हा राणियां इक दिन अपु चै गलोई फैसला कीता जे झूठ मूठ इ राजे दा दिल रखणे जो एह गल फलाई दित्ती जाए जे छोटियां राणियें दे न्याणा होणा ऐ । होई सकदा जे राजे दा दिल पकड़ोई जाए । तिन्हाँ एह गल फलाई दित्ती सुणी नैं राजा बड़ा खुशी होइया । राजे दे चेहरे दा रंग दिन प्रति दिन बदलोणा लगी पिआ ।

ठीक नौं महिनीयां ते परन्त तिन्हां राणियां खबर फलाई जे राणियां दे मुन्डु होइया । राजे दी खुशीया दा कोई ठकाणा नि रिआ । तिन्हीं पण्डित सदिआ कनैं तिस जो मुन्डुए दे ग्रह दिखणे जो बोलिया जिस बेला पण्डित अन्दर गिया तां राणियां पण्डित सदिआ कनैं तिस जो सारी गल समझाई करी बोलिया जे तू राजे जो झूठ मूठ बोली दे जे 18 साल तांई तैं मुन्डुए दा मूह नी दिखणा जे राजे जो मुन्डु करड़ा ऐ । पण्डित बि सनी गिया कनैं राणियां तिस जो मता सारा नाम दिता कनैं बोलिया जे एह राज कुमी जो पता नि चलणा चाहिदा ।

दिन गुजरदे गए । हुन्दे हुन्दे अठारा साल बीती गए तां राजे पण्डते जो सदी करी बोलिया जे मुन्नुएं दी कड़माई करी आ । पण्डित कड़माई करी आइया कनैं आई नैं राणियां जो पुछिया जे हुण क्या करना । राणियां बोलिया तुसां कोई फिकर मत करा कने राजे जो बोलिया जे जिस बेला तांई मुन्डु व्याह कराई नि औगा तुसां सेहरा नि दिखणा ऐ ।

मुन्डुए दे व्याए दा दिन आई गिया । राणियां इक आटे दा छैल बुत बणाई करी पालकियां च बठाई दित्ता कनैं पण्डते जो बोलिया जे लोकां जो गलाई देणा कोई जनेती जा आदमी लाड़े दे सेहरे नि दिखगा । जनेत चली पई कनैं इकसी राती इकी जंगले बिच पड़ा पाई दित्ता । तिस जंगले बिच इकसी जग्गा नागां दी सभा थी होआ करदी । तित्थु नाग राजे दा लड़का नागणु राज बि था बैंठिया । जिस बेला जिनी पालकिया बिच आटे दा बुत दिखिया तां अपणे पिता जो बोलणा लगा "पिता जी किनें दुखी हन एह लोक बिना बच्चे ते जे इन्हां आटे दा लाड़ा बणाया । पिता जी जे तुसां

इजाजत देण तां मैं थोड़ियां दिनां तांई इन्हांदा पुत्र बणि जांदा आं कनै घुमी फिरी बि औंगा । तिस दैं पिता ने इजाजत दैई दित्ती । नागणु राजे झट पट तिस बुते दे कपड़े पहनैं पालकियां च बैंटि दिया । जिस बेला कहारां दिखिया तां बड़े खुशी होई गये ।

ब्याह होइया कनै राज कुमार ब्याह कराई नैं राज कुमारी ब्याही नैं लैई आइया । पिछे राणियां प्रण था कितिया जे राज कुमार ब्याह कराई ने आई जांगा तां असा कोठे परा फुल बरसांगियां कनैं भेद खुली जांगा तां सबनां असां छाल मारी करी मरी जांणा ऐ । जिस बेला तिनां बाजा गाजा बजदा कनैं पालकियां औन्दिया दिखियां तां सह बड़ी खुशी होइयां । तिन्हां फुल बरसाए कनैं बड़ी खुशियां मनाइयां ।

जिस बेला राज कुमार आइया तां तिनी औंदें इ आपणे पिता जो बोलिया जे मेरे तांई बखरा महल पुआई दिआ कनैं कोई तित्थु न औए । राजे एह गल मनी लैई कनैं बखरा महल पुआई दिता । तित्थु कड़ा पहरा लाई दित्ता जे इत्थु कोई न औऐ ।

दिन बीतदे गये । जिस बेला नागणु राजे जो गियो मते दिन होई गये तां तिस दे पिता जो याद आई कनैं तिनीं दो गोलियां सदियां तिनां जो बोलिया राज कुमारे जो ऐसे तरीके नैं चेता कराणां जे कुसी जो पता नि लगैं । पहलै इक गोली राज कुमारे दिआ महलां गई तां दरबानां जो बोलणां लगी जे बच्चा मैं राणी दिखणी कदेई हुंदी । दरबाना बोलिया राजे दा सख्त हुक्कम ऐ अन्दर कोई नि जाहंगा । तां जे तिनां गोलिया बड़ी अड़ी कीती तां इक दरबान बोलणां लगा जरा जाणें दे इनां क्या करी देणा राणियां जो । सैंह अन्दर गई तां राणियां जो बोलणां लगि जे अपणें राजे ते पुछिआ जे तुसां दी जात क्या ऐ ? सैंह गलाई नैं आई गई । संझा जो राजा सकार खेली करी आया तां राणी पुछणां लगी तुसां दी जात क्या ऐ ? राजें बोलिया फिरी कदी दसगे कनै बाहर आई दरबाना जो पुछिया जे अन्दर कुण था आइया। तिनां बोलिया जे इक बुड्डी थी बोलै मैं राणी दिखणी । राज कुमारें गुस्से च आई करी तिन्हां जो बड़ा मारिया ।

थोड़ियां दिनां परन्त दूई गोली फिरी आई तिन्हां बि दरबाना जो पुछिया जे मैं राणि दिखणी । दरबानां बोलिया जे चल नठ राणियां दिखणें दी बच्ची तिहाड़ी बि पता नि क्या गलाई गैइयो सांजो राजें ते मार पुआई दित्ती । गोली बोलणां लग्गी ने बच्चा मैं नि ऐ सैंह । सैंह पता नि कुण थी । इकसी दरबान जो तरस आइया कनैं तिन्हीं अन्दर भेजी दित्ती, अन्दर जाई करी सैंह राणियां जो बोलणां लगी जे भला अपणें राजे ते जूठ तां मंगियां खाणें जो कदी तिनीं जूठ बि दित्ती । राणी बड़ा हैरान होई तिन्हां बोलिया जूठ तां मिजो कदी बि नि दित्ती । अज संझा जो औहंगे तां जूठ मंगणीं ऐं ।

संझा जो राज कुमार आइया तां सैंह पई गई पिछै जे मिजो जूठ दिआ तुसां मेरे कदैए पति हन । राज कुमार सोचणां लगा एह गोलियां जरूर मेरे पिता नैं भेजियां होणिया हन मिजो जाणां चाहिदा । सैंह सोचणां लगा जे जूठ कियां दियां मेरे अन्दर तां जहर ऐ । तिनें राज कुमारियां जो बोलिया चल कल तिज्जो प्योकियां दैं छुड्डी औआं तित्थु

जूठ दिगा । पर खरा एह इ ऐ जे तू जूठ मत मंगें । राज कुमारे दा बि तित्थु दिल था लगी गिया तिसा दा दिल बि जाणें जो नि था करा दा पर स्हैं मजबूर था। राणी जठ मंगणे जो मजबूर थी करा दी ।

दूएं दिन प्योकियां दें चली पए । राणी पालकिया च कनैं राजा घोड़े पर । राज कुमारे दा दिल बि बड़ा दुग्रास था। सैंह बार-बार राणियां ते पुछें भाई जूठ मत मंगें पर सैंह नि मन्ने। जांदे-जांदे सैंह इकसी दरयाए पर जाई रए । तित्थु राज कुमार बोलणा लग्गा मैं न्हौई लैंदां ग्रां । सैंह न्हौणां लगी पिया । राज कुमारे फिरी पुछिया—ग्रजें बि जूठ मत मंगें । पर राणी नि मन्नी। राज कुमारे इक चुभी मारी कनैं बड़ा भारी नाग बणी नैं पाणिये पर तरिया रती क सुहञा कनैं ग्राखीं ते ग्रोझल होई गिया । राणियां दिखिया तां सोचिया नाग मेरे पत्तिये खाई लिया ।

कहारां पालकी चुकी कनैं तिसा जो प्योकियां दें छड्डी ग्राए । तित्थु जाई करी राज कुमारी पत्तिये दे बियोगे च पागल होई गई। सैंह चुरसते पर बैठी करी ग्रौंदियां जांदियां लोकां जो पुछणा लगदी जे तुसां मेरा पति बि दिखिया मेते रुसी करी चला गिया । मैं हुण जूठ नि मंगदी ।

इक दिन सैंह बैठियो कनैं इक गुग्राला ग्राइया सैंह तिसा ते पुछणां लग्गा तुसां मेरियां गांई तां नि दिखियां तां स्हैं राज कुमारी बोलणां लग्गी तैं मेरा पति तां नि दिखिया । गुग्राला बोलणां लग्गा जे मिजो तेरा पति मिलगा तां मैं दसहगा तिज्जो मेरियां गाई मिलगियां तां तू दसी दियां । तिन्हां ग्रपणे पत्ति दियां सारियां पछाणां तिहजो दसी दित्तियां।

जांदा-जांदा सैंह गुग्राला इकी बण बिच गिया तां तिस जो रात पई गई । सैंह इकसी बड़ी पर चढ़ी गिया । तां जो ग्रधी रात होई तां तिसा बड़ी थल्लै लौ बली । ताहली इक ग्रादमी झाड़ मारना लग्गा। इकसी पाणी छिड़किया इकसी गलीचे बछाए कनैं फिरी तित्थु बड़ी बड़ी मठियाग्यां रखोई गइयां । फिरी क्या होइया जे किछ नाग ग्राए बचाह सैंह नाग थे कनैं बड़ी थल्लै ग्राई नैं ग्रादमी बणी गये । तिनां तित्थु बैठी करी मठियाइयां खादियां कनैं इकसी जनाना नृत्य किता । बड़े नाग राजे दै खब्बै पासें बैठियो नागे पर नजर गई तां स्है गुग्राला बड़ा हैरान होइया । स्है सोचणा लगा । एह तां स्है इ राज कुमार ऐ जेहड़ा तिसा राज कुमारिया दा पति ऐ । तां जे भयाग होणां लग्गी तां स्है सब छपन होई गये।

सैंह गुग्राला उठिया कनै जाई करी राज कुमारीया नैं सारी गल दसी । सैंह राज कुमारी बि जाई करी तिसा बड़ी पर बैठी गई । तां जे ग्रधी रात होई तां सह कार्यक्रम होइया तां जे तिसा दी नजर ग्रपणे पत्तियें पर पई तां तिसा दियां ग्राहखीं छम-छम बरसी पियां। सैंह बिलकुल ग्रपणे पत्तिये ते सिधि उपर थी बैठियो । जिसा दिग्रां ग्राहखीं दे ग्रथरू तिसा दे पत्तिये दे हत्थे पर पये । तां जे तिन्हां ऊपर दिखिया तां राज कुमारी पछाणी लैई । तिनीं तिसा जो परां चलणे दा इशारा कीता । सैंह बड़ी परा

उतरी कनैं थहलै जाई रैई । सैह राज कुमार बि तित्थु पुजी पिया । राजं कुमारियां दिख सुण किछ नि कीती कनैं राज कुमारे जो जफ्फी पाई दित्ती कनैं इ बिलखी-बिलखी नैं रोई पैई बोलणा लग्गी तुसां मिजो छड्डी करी कैंह चले आए मैं जूठ मंगी मेते बड़ी गलती होई । तां राज कुमारे सैह समझाई बोलिया रोई नैं किछ नि बणना हुण तिजो पता लग्गा मैं तिजो जूठ कैंह नि था दिया दा । मैं नाग हां । मेरे अन्दर जहर । राज कुमारी बोलणां लग्गी—तां मिजो बि नाग बणाई दिया मैं तुहाड़े बगैर जिंदी नि रैई सकदी कैंह तां तुसां मेरे नैं चली पौआ । हुण मैं कोई अड़ी नि करहगी।

"एह नि होई सकदा राज कुमारी पर मैं तिज्जो इक तरकीब दसी सकदा" राज कुमारे तिसा जो समझाया ।

'सैह क्या ?" राज कुमारी रुआंसियां आहखीं तिस बखीं दिखिया ।

"सैह एह भई जो किछ प्रबन्ध तैं अज साड़ी इसा सभा दा दिखिया कल तू सारा एह कर कनैं इस ते बि बधी नैं कर । फिरी मेरे पिता नैं खुश होई पुछणा जे एह कुहनीं कित्तीया कनैं तिज्जो दो बचन देणे । जेहड़ा तैं मंगणां हुंगा मंगी लियां ।"
राज कुमारी खुशी होई कनैं अच्छा गलाई नै घरे जो चली गई ।

दूएं दिन सारा प्रबन्ध राज कुमारिया बड़े अच्छे तरीके नैं कीत्ता । बड़े-बड़े अच्छे गलीचे बछाए । बड़े-बड़े खाणे आले व्यंजन वणाए । एह सब करी नैं राज कुमारी बड़ी पर चढ़ी गई । नाग राज एह सब दिखी बड़ा खुशी होइया कनैं तिनी बोलिया जिनी बि एह प्रबन्ध कित्तिया सैह साहमणे औऐ । राज कुमारी उतरी कनैं माहमणे जाई रई । नाग राज बोलणां लग्गे असैं बड़े खुशी हन बेटी मंग क्या मंगदीं ऐ । राज कुमारी बोलणां लग्गी महाराज तुसां क्या दैई सकदे ? जो किछ मैं मंगणां तुसां नि देणां । नाग राज बोलणां लग्गे नहीं तू दुनियां दी कोई चीज मंग असां दिगे । राज कुमारीया झट राज कुमारे पर हथ रखी दित्ता कनैं बोलिया मिजो एह चाहिदा । नाग राज बौखलाई गिया बोलणा लग्गा एह तां मेरे कलेजे दा टुकड़ा ऐ तू किछ होर मंग । तां राज कुमारी बोलणां लगी महाराज एह मेरे सिरा दे ताज हन कनैं तिनां सारी कहाणी सुणाई दित्ती । नाग राज जो मजबूर होणां पिया । तिन्हां बोलिया—बेटी असैं तेरी सच्ची साधना दिखी करी बहुत खुश हन लैह तू मूहएं पराह कर । नाग राजें राज कुमारे दे गले च मुच्च मारिया कनैं सारा जहर कडी करी बोलिया लैह बेटी अजे ते इस कनैं साड़ा रिश्ता खत्म । तिन्हां दूइं नाग राजे जो प्रणाम कीता कनैं खुशी-खुशी अपणे रस्ते चले गये । सदा बासते इक दूए दे बणी करी ।

शब्द	अर्थ
जतन	यत्न
तिहाड़ी	उस दिन
ताहली	उसी समय
अथरू	आंसू
तिस बखी	उस की ओर

गोकरण होर धुन्दकारा

—देवराज शर्मा

किसी जगा किसी जमाने च इक ब्राह्मण कने ब्राह्मणी रहयां थे । तिहनां गे होर तां सब कुछ था पर संतान नी थी । इस करी के स्यो अप्पू तां उदास रह्यां ई थे पर लोक ताहने मीहणे लगाई के तिह्नां रीआ उदासिया जो होर बधां थे । लोग तिहनां जो औत्तर बोलां थे । ब्राह्मण तां चलो परवाह भी नी करदा था पर ब्राह्मणी बड़ी जलहं थी जे लोग असां जो औत्तर बोलाएं । उमर बी हल्लां तक तिहनां री खास नी थी हुई री । इस करी के ब्राह्मणिए ब्राह्मणा जो बोल्या, "तुह भौंएं कुछ कर, मेरे पुत्र हूणे रा इंतजाम कर—कोई बूटी ल्याओ, किसी साधु ने जाह-पर घरा जो तांहीं आयां तां जे मेरे पुत्र हूणे रा इन्तजाम करी के औह्गा ।"

ब्राह्मणा बचारे जो मुश्किल फसी गई। तिने दो-चार रोटियां गठी बहन्नी होर चली पया किसी किनारे। जांदा जांदा सै इकी बांई रे किनारे बैठया—बड़ी रमणीक जगा थी। तिने तित्थी रोटियां रा टुकड़ खादया, पाणी पित्या कने बांई रे किनारे बैठी गया । तित्थी तिसरी जरा कर हख लगी गई । तां जे सै सुत्ती रा उठया, तिने अपणा समान चक्कया होर अग्गे चलणे लग्गा । हल्ली तिने दो कदम बी नी थे पट्टी रे कि इक साधु औंदा सुझ्या । सै फेरी हटी गया कने साधु रेयां पैरें पई गया जे इहां इहां तिसरे कोई औलाद नी ई, लोक तिस्सो तंग करां ए । साधु लें तिने औलादी रे खातिर फल देणे री प्रार्थना कित्ती । साधुए बोल्या जे तिह्नां रीया किस्मती च पुत्र नी आ । जे फल देई के होई गया, तिस स्यो बड़े तंग करने । ब्राह्मणे बोल्या जे कुछ बी हो, सै फल देई देयो। साधुए ब्रह्मणा जो फल देईता कने बाह्मण फला जो लई के खुशी-2 घरा जो आई गया।

तिने घरें आई के फल ब्राह्मणीया ले देई ता कने तिसा जो सारी गल्ल बात बी सुणाई दित्ती सै जे साधुए दस्सी री थी । ब्राह्मणीए पहले तां फल खाणे लाया पर फेरी तिसा जो ख्याल आया जे बच्चा रहणे ने 10 महीनेयां तक तिसों पेटा च चक्की रखो, फेरी तिसरा गुह-मुत चक्कणे पौणा—सै कुण फसो सियापे च । तित्थी तिसारी इक बहण बी आई री थी तिसारे ताजा ताजा ई गर्भ ठहरी रा था । तिसा कने ब्राह्मणीए सारी गल्ल बात कित्ती । तिसे सलाह दित्ती, "बहणी तुंह एहड़ा करजे इस फला जो तूं अपणीयां गाई जो खुआई दे । मेरे बच्चा हूणा, तिस हउं तेरे ले पुज्जाई देहंगी—मेरे अग्गे ई बथेरे ऐ । तुहं पेटा गुद्दड़ बहन्नणे शुरु करी देणे, ध्याड़े जे मेरे बच्चा हूंगा, तिस्सो हऊं तेरे ले चुपचाप पुज्जाई देंहगी । तुंह गुदड़ा खोहली के सारे दस्सी देआं जे भई तेरे बच्चा हुई गई रा ।" ब्राह्मणिया जो एह गल्ल पसंद आई गई । तिसे तेहड़ा ई किया फल गाई जो खुआई ता कने तिन्नां महीनयां बाद पेटा थोड़े थोड़े गुद्दड़ बहन्नणे शुरू करी ते ।

उत्थका ताज़े तिसा रीआ बहणी रे मुन्नु हुआ, तिसे चुप चाप अपणे मालका ते तिसा ला लो भजुआई ता । ब्राह्मणिए बोली ता जे तिसारे मुन्डु हुई गया । मंगल गाए गए, बधाईआं मिलीआं । लोके तिहनां जो औतर बोलणा बन्द करीत्या । मुन्डु बड़ा हुणे

लग्या पर तिसरीआ हरकतां एहड़ियां थी जे सारा भई सै दिन ब्राह्मण ब्राह्मणया जौ इकी मिटां रा बी बैठणे रा टैम नी देंदा था—सारा दिन नेरा ई नेरा करदा रह्यां था । इस करी के तिसरा नाओं तिह्ने धुन्दकारा रखी दित्या ।

थोड़ेयां दिनां ते बाद गाई रे भी इक बच्चा जम्म्या, तिसरा मुंह आदमीआं रा था होर शरीर गाई रा । तिसरा नाओं गोकरण रख्या गया ।

धुन्दकारा जिहां जिहा बडा हूंदा गया, तिसरी यां हरकतां खराब हुंदियां गईआं । सै शराबी, कबाबी, होर रण्डीबाज़ बणी गया । तिसरीआं हरकतां तां ब्राह्मणा ते नी सही हो तां तिने तिस्सो रोकणे री कोसस कित्ती पर धुन्दकारे सै बी पिहणा शूरु करीता । ब्राह्मण बेचारा इह्नां गल्लां जो सहन नी करी सक्कया होर तिने गमा च प्राण ई छड्डी दित्ते । ब्राह्मणी बी थोड़ेयां दिनां बाद अगले रस्ते पई गई । हुण धुन्दकारे रे खूहल हुई गई तिने पंज सत रंडा रखी लयां होर ऐशां करने लग्या । पर आखर ब्राह्मण रा कमाई रा धन कितने कर दिन चलणा था । सै छोड़ ई खत्म हुई गया । हुण तिसरा गजारा चलणा मुश्किल हुई गया होर तिने चोरी करना शूरू करीती । हुण तिसरा गुजारा चोरिया रे माला कने चलणे लग्या ।

पर तां जे सै दिन भर फक्ती ई हुन्दा गया तां तिसरीएं जनानें सोच्या जे इक तां इस मुए ते हुण खाणे जो कुछ नी रहया दुज्जे इस किसी दिन असें चोरिया रे मुकद्दमें च फसाई रखणियां । स्यों असल बिच थी तां कंजरीआं । तिह्नें, तिसरे छुटकारा पाणे री गल्ल सोचणी शुरू करीती । इक दिन तिह्नें सारिएं जणिएं स्कीम बणाई जे राती इस्सो मारी दित्या जाओ । तांजे तिस्सो निन्दर आई गई तां स्यो सब जणियां कठी हुई होर तिह्नें तिस्सो सबनी किनारियां ते मंजे पर दबाई दित्या । पर फेरी बी सैह जोरा औला था । सै नी मरया । तां इकी तिसरे मुहां च बली रा म्याल ई तुही ता होर तिस्सो मारीत्या । फेरी कमरे अन्दर ई खड्डा खुणी के तिह्नें तिस्सो दबाई दित्या होर अप्पू नह्ठी गईआं ।

हुण सै प्रेत जुणी च पई गया होर सुपने च रोज गोकरणा जो नजर आओणे लग्या । गोकरणे तिसने पुच्छया जे तुंह कांह मेरे ले आओआं—पहले तां तु मेरे ने गलांदा बी नी था । तिने बोल्या जे हउं बेगता मरी राअ, तुंह मेरा भाई आ । तुंह मेरा कर्म धर्म कर होर मिजो भागवत करी के सुणा । तां मेरा कल्याण हूणा होर मांह प्रेत जुन्नी ते छुटी जाणा । गोकरने तिसरा कर्म धर्म बी कित्या होर तिस्सो भागवत बी सुणाया । सै प्रेत जुन्नी ते छुटी गया होर बैकुण्ठा जो चली गया । इहां गोकरणे धुन्दकारे री गति कित्ती ।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
गट्ठी बहन्न नी	गांठ से बान्धी		
बांई	बावड़ी	मयाल्	जलती हुई लकड़ी
सुझया	दिखाई दिया	खुणी के	खोद कर
जिहां जिहा	जैसे जैसे	नठी गईयां	चली गई
बलीर।	जलता हुआ		

नटराजा रा खेह्ल

किसी जमाने री गल्ल ई—इक बड़ा विद्वान राजा राज करां था । तिस ले कई किस्मा रे लोग आओआं थे—सै सभनी रा बड़ा आदर सत्कार करां था कने हरेकी रे गुण जो जाणने री कोसस करां था । इक दिन इक नटराज अपणीया नटणियां सौगी तिसरे राजा च आया । राजे तिस ले अपणा खेह्ल दस्सणे री फरमाइश कित्ती । नटराज खेह्ल दसस्सणे जो तां तैयार हुई गया पर तिने राजे ले इक शर्त रखी दित्ती जे भई खेह्ल दस्सदे दस्सदे जो तिस्सो कोई घाटा बाधा हुई जाओ तां तिसरीआ नटणीआ जो, सै जे बड़ी ई खुबसूरत औरत थी, कोई आंच नी औणे पओ कने तिसारी पूरी जम्मेदारी राजे ले रही—एहनी हो जे राजा अप्पू ई तिसा रे धर्मा जो छीण करने री कोसस करो । राजे तिस्सो इस बारे च पूरी तसल्ली दित्ती होर अपणा खेह्ल दस्सणे जो बोल्या ।

नटए जां नटराजे अपणा खेह्ल दस्सणा शुरू करी दित्या । सै डग डग डौरू बजाणे लग्या । थोड़ीया देरा ते बाद सै डौरू बजांदा बजांदा-थोड़ा-थोड़ा धरती ते उठणे लग्या होर धीरे-धीरे आस्माना च गायब हुई गया । सब हैरान हुई गए । कुछ देरा बाद पहले खूनां कने मंडी रा इक बाजू पया, फेरी दुज्जा, फेरी जहंगा होर बाद च सारा धड़ ई । तिस्सो देखी के नटणी रोणे चिल्लाणे लगी—तिसे तिसरा शरीर कट्ठा कित्या होर राजे जो बोल्या जे चन्नणा री चिता जला कने मैं वी इस सौगी सती हुई जाणा । राजे जो बड़ा अफसोस हुआ पर तिने नटणिया रे बोला मुताबिक चिता चणाई ती । नटणी नटा सौगी सती हुई गई । राजे तिसारा रस्मा रे मुताबिक दाह संस्कार कराईता ।

पर चिता जली रिआ जो हल्ली थोड़ी ई देर हुई थी कि नट हत्था डौरू लई के राजे रे हाजिर हुई गया । राजा होर सारी जनता अचम्भे च पई गए । नटराजे ते अपणीआ नटिया जो मंगे पर राजे तिस्सो सारी गल्ल बात सुणाई ती जे नटी तां जली गईरी पर नट कित्थी मन्नो । नटे बोल्या जे राजा तु बेईमान आ । मेरी नटणी बांकी थी होर सै तैं अपणे महलें छपाई लई । राजा बोलो जे सै महलां री तलाशी लई सक्कांह्ए । नट सारीआ जनता सौगी महलें गया होर नटणी तिने राजे रेयां महलां ते कढी ती । राजा होर जनता सब बड़े हैरान थे जे ऐ नट केहड़ी विद्या जाणा आ । राजे तिस्सो खूब धन दित्या । कन्ने इस इच्छा प्रकट कित्ती जे सै तिसा विद्या जो जाणना चाहं । नटराजे जो दस्या जे हऊं तां इसा तुसां जो तेसा जो वि दस्सी नी सक्कदा कांह जे मेरे गुरूए रीआ तरफा ते मिजो इसरी इजाजत नी ई पर जे तुसे जाणना ही चाहें तां हिमालय रे पहाड़ां च फलाणीया जगा मेरा गुरु रहूंयां । तिसते जाई के तुसे इसा विद्या रा ज्ञान हासिल कर सक्काए ।

राजे दिला च पक्की ठाणी लई जे एह विद्या जां मन्त्र जरूर सिखणा । तिने इस करी के जे जंगलां च जाणे पौणा, तिने अपणे नाई जो सौगी लया होर नटा रे गुरू ला जो चली पया । जांदे-जांदे स्यो नटा रे गुरू ले जाई पुज्जे । राजे प्रणाम कित्या होर अपणे औगे रा मकसद दस्स्या । गुरुए राजे जो सै मन्त्र सिखालने रा वायदा कित्या ।

राती तांजे नाई सई जां था तां गुरु राजे जो मन्त्र सिखालां था । नाई असल विच सौणे रा बहाना करां था होर जाहणी जो ई घुराड़ुए पई जां था कने रह्या था जागदा । सै बी राजे सौगी मन्त्रा जो, तिहां जे गुरु दस्सदा जां था, पूरा कंठस्थ करदा जां था । राजे सौगी-सौगी ई तिने बी पूरा मन्त्र सिखी लया पर इसरा नां ई राजे जो पता था होर नां ई गुरू जो । जिस बगत गुरुए राजे जो पूरा मन्त्र सिखालीत्या तां राजे गुरु जो गुरदछणा दित्ती होर नाई जो सौगी लई के वापिस अपणीआं राजधानियां जो चली पया ।

रस्ते च नाई रे दिला च बेईमानी पैदा हुई गई जे इतना मन्त्र सिखी के बी जे सै नाई रा नाई री रही जाओ तां सै नाईए रे घरा जम्मा ई कहजो आ । तिने राजे जो सलाह दित्ती जे महाराज, तुसें मंत्र तां लया पर दूसरी परीछा तां कित्ती ई नी—हुई सक्कांह, जे कोई कमी रही गई हो तां हल्लीं बी वापिस हटी के गुरू ते पूरी कित्या जाई सक्कांई—फेरी राजधानियां ते वापिस औणा मुश्किल आ । राजे रीया बी एह गल्ल समझा पई गई । राजे हथियार तां हमेशा ई सौगी रखां थे । राजे इक तोता इकी डाला पर बैठी रा देख्या । बन्दूका कने तिस्सो मारया, अपणी आत्मा अपणे शरीरा ते कहडी होर तोते रे शरीरा च प्रवेश करीती । बस एही नाई जो मौका था । तिने झट मंत्र पढ़्या, अपणी आत्मा कड्डी होर राजे रे शरीरा च दाखिल कराई ती । राजा, तोते रे रूपा च फसी हुण पच्छताणे लग्या जे भई नाई धोखा करी गया पर हुण सै करी क्या सक्कां था । तिसले इक चारा था जे भई नाई रे शरीरा च बड़ी जाओ पर तिसरे बणाए तिने तोता बणी के रहणा ई ठीक समझया । राजा बणी के नाइए तिस तोते जो मारने जां पकड़ने री कोसस कित्ती पर तोते रे रूपा च राजा सब कुछ समझी गया होर झट उड़ी के इकी तोतेयां रे डारा च बड़ी गया ।

नाई वापिस राजधानिया च पुज्जी गया । आई के तिने दस्सीया जे नाई मरी गईरा कने राज करना शुरु करीत्या । कन्ने ई तिने एह ढिंढोरा पिटवाईत्या जे तोते फसला जो बर्बाद करांए—इस करीके सारे राजा च इहना जो मारया जाओ—हर आदमी सै जे ज्यूंदा तोता ल्याहोंगा तिस्सो पंच रुपैइये इनाम मिलणा होर से जे मारी के तोता ल्याहोंगा, तिस्सो हर तोते रे तिन रुपइये मिलणे । लोग ज्यूंदे होर मुईरे तोते धड़ाधड़ ल्याई के राजे ले पेश करने लगे ।

तोते रे छौंहड़े च राजे जो बी पता लगी गया जे तिने बेईमाने हुण तोते मरुआणे शुह्रु करीतरे । इस करी के सै इकी सहूकारा रे घरा चली गया । सहूकारा जो तिने बोल्या जे तुह किसी वी लालचा च मिजो किसी रे हथा दिख्यां देंदा कने

हऊं जो तुंह चांहगा, सै कम्म करहगा । सहूकारे सोच्या जे एह कोई समझदार तोता आ । इस करीके तिने तिस्सो अपणे घरा अन्दर रखी लया । तोता सहूकारा री फसला च इमदाद करने लग्या । इकी फसला जो भुआणे ते बाद तोते सहूकारा ते बीज भुआया होर घा री राख कराई के खेतां च सट्टाई दित्ती । सहूकार सोचो वी जे एह तोता कराया क्या कराहं । पर फेरी वी तिने तेहड़ा ई करी दित्या । थोड़ेयां दिनां बाद मानसरोवरा ते राजहंस आए, तिहनें राख बदली, दाणे खाई लै कने बदले च मोती उत्थी सट्टी दित्ते । हुण तोते सहूकारा जो तिसा राखा जो धोणे जो बोल्या । सहूकारे राख धोई तां तिसा च मोती मिलणे लगे । सहूकारा ले मोतियां रे ढेर लगी गए । हुण तां सहूकार तोते री सगंद नी खाओ ।

नाई राजा वी उत्थका हुण राजा रे प्रसादा च अपणिया शादिया रा इन्तजाम करने लगया तिने इकी राजे री लड़की अप्पू जो बरी लई । तोते जो वी इसा गल्लां रा पता लगी गया । तिने सहूकारा जो समझाया जे तं मिजो फलाणे राजे जो एह बोली के जे एह कीमती होर समझदार तोता आ, बेची दे होर तिसो दस्सणा जे इस तोते देउआ वी काफी अच्छी तरहा ते पढाई देणी । सै राजा स्यों ई था, सै जे नाइए राजे रा मौहरा बणने वाला था कने देउआ स्यो ई थी, सै जे राणी बणनी थी ।

साहूकारे तोते रे गलाणे रे मुताबिक तिस्सो तिस राजे जो बेची दित्या । हुण तोता देउआ जो पढ़ाणे लगया । देउआ क्या तां राजा क्या तोते ते बड़े खुश हुए । तोता देउआ जो कई किस्मा रे ज्ञान जो मंत्र पढ़ांदा रहया ।

उत्थका देउआ रा व्याह वी आया करां था, तोते तिसा जो इक अच्छी औरत, इक अच्छी बहु, एक अच्छी मां आदि बणने बारे च वी बड़ा कुछ ज्ञान करवाया । तिहां तिहां जे व्याह रे दिन नेड़े औंदे गए, तोते देउआ पर अपणा ज्यादा ते ज्यादा प्रभाव जमाणा शुरू करीत्या । देउआ तोते रीआ बुद्धिमानिया होर ज्ञाना ते इतनी प्रभावित हुई जे हुण सै तोते रि सलाह लै बिना इक कदम वी नी चलो । तोते जो वी पुरा विसुआस हुई गया जे हुण सै तिसा पर पूरी तरह ते हावी आ ।

व्याह रे दिन नजदीक आई गए । इक दिन व्याह रा वी आई गया । नाई राजा वड़ीआ धूमा धामा ने बरात लई के देउआ जो व्याहने जो पुज्जी गया । बराती रे बड़े आदर सत्कार हुए । नाई री तां हालत ई बदली गई री थी काह, जे सै राजा बणी चुकी रा था । व्याह वाले दिन तोते देउआ जो कन्ना च ई कुछ गल्लां समझाईआं होर तिसा जो तिहना पर अमल करने जो बोल्या । देउए तिहनां पर अमल करने रा वायदा कित्या ।

व्याह रस्मा रूआजां रे मुताबिक पूरा हूणे लग्या । बाकी सब कमकार होर लगचार हुई गए । जिस बगत लगना रा टैम आया तां देउए जिहां जे तोते

समझाई रा था, बोल्या, "लग्न लगाणे ते पहले मेरी एक शर्त ई। राजा लग्न तांही लगाई सक्कांह जे सैं पहले तिसा शर्ता जो पूरा करो । शर्त एही जे मेरे ले इक बकरा आ पहले इस बकरे जो मारना, फेरी इस्सो ज्यूंदा करना । जे तां राजा एह कम्म करी सक्को तां माह इसने लग्न लगाणे नहीं तां नी । " सारे बराती होर बाकी दुनिया हैरान हुई गई जे एहड़ा किहां हुई सकांह । पर राजे बोल्या जे मिजो एह शर्त मंजूर ई। तिने बकरा मंगुआई लया। राजे पहले तिस बकरे जो गला घुट्टी के मारया होर फेरी मन्त्रां रे जरिए अपणा शरीर छड़ी के तिसरे शरीरा च बड़ी गया। तोता मौका देख्या ई करां था, तिने झट अपणे प्राण कढे होर अपणे पुराणे राजे रे शरीरा च घुसी गया। नाई सब कुछ समझी गया होर बकरे रे शरीरा च पई भोरां मारो होर पच्छताओ । पर हुण क्या हुई सक्कां था--तिसरी अपनी करनी ।

चलदी बार राजे सैं बकरा वी दाजा च लई लया तिस्सो महलां रे बाहर बह्न्नी ता होर हुक्म कित्त्या जे हर औंदा जांदा आदमी तिस बकरे दो जुत्ते री मारो । जुत्ते रीआं चोटां ने ई बकरे रे पानी नाई रे प्राण निकली गए । फेरी राजे देउआ कने होरसी लोगां जो सारी कहांणी दस्सी । इहां राजे नाई ते बदला लया होर फेरी सुखा कने राज करने लग्या ।

शब्द	अर्थ
कोसस	कोशिश
मंडी रा–	लतपथ
मन्नो	माने
जम्मया	पैदा हुआ
सौगी सौगी	साथ साथ
सगंद	कस्म
नेड़ै	निकट
बसुआस	विश्वास
ज्यूंदा	जीवित

लालची मन्त्री होर नाई

—देवराज शर्मा

किसी जमाने री गल्ल ई, इकी गांओआं च इक घमार रह्यां था । तिसरे बाल-बच्चा वी कोई नी था । पर किस्मत वी बेचारे री एहड़ी थी जे मैं चहे कितने ही भांडे-बर्तन बणांदा पर तिसो तिह्नां जो बेची के मंआ गुजारे जोगी ई पैसे बणा थे ।

आखिर तिने इक दिन सोच्या जे चलो इस शहरा च ई शायद तिसो बरकत नी हुंदी हुंगी, इस करी के किसी दुज्जे शहरा च जाई के ई बर्तन बेचांह् । तिने बर्तनां री पंड बहन्नी होर दुंह दिना री रोटी गठी लई के चली पया । रस्ते च इक जंगल आंओआ था । तिस जंगला अग लगी री थी । सारे जीव जन्तु जंगला ते बाहरा जो नठया करां थे पर आबादीआ च वी तिहनां जो लोगां ते डर लगां था । जंगला ते थोड़ी दूर इकी बांई रे किनारे घमारे भांडे तुआरे कने आराम करने बैठी गया । आराम करी के तिने फेरी भांडेयां री पंड चक्की होर रस्ते चली पया । जांदां जांदा ता जे सैं कुछ दूर जाही रहया तां तिसो आवाज आई जे तुंह मिजो उत्थी ई छड्डी आओ तित्था जे नैं मिजो चक्कया था नहीं तां मांह् तुंह खाई लैणा । घमार अगे देखो-पिछे देखो पर तिसो कोई पता नी चलो जे एह आवाज कुत्था रे आया करां ई । मैं थोड़ी देर खह्ड़ी के फेरी चली पया पर अगे जाई के तिसो फेरी मैं ई आवाज आई । तिने भी अगे-पिछे देख्या पर फेरी कोई पता नी चल्या होर सैं चली पया । थोड़ी देराते बाद तिसो फेरी सै ई आवाज सुहणी कने बोल्या जे हुण तरबाच ई होर जे हुण वी सै अगे चलदा रह्या तां मांह् खाई देणा । घमार बड़ा हैरान-परेशान हुआ जे गल्ल क्या ई कने तिसरी बदकिस्मती तिसरा पिच्छा ई नी छड्डया करदी। तिने भांडेयां री पंड सिरा पर ते तुआरी होर सिरा पर हत्थ रखी के बैठी गया जे गल्ल क्या ई । इतनियां देरा जो इकी घड़े विचा ते काला नाग निकल्या होर घमारा सामणे खड़ी गया । घमार बड़ा भारी डर्या पर नागे तिसो जे डरो नी कने हऊं तिज्जो कुछ नी बोल्दा कांह जे तिने तिसो जंगला रीआ अगी ते बचाईरा । नागे तिसो दस्स्या जे हऊं बासुकी नागा रा पुत्तर आ । हऊं बिना बुलाए ई मात लोका रीआ सैरा जो निकली आया था । इत्थी जंगला च अगी च फसी गया । तित्था जे निकल्या तां बस्तिया च लोकां मिजो मारी देणा था । तेरे च मिजो शरण मिली । इस करी के तुंह मेरी जान बचाणे वाला आ होर तेरा एहसान हऊं कदी वी नी भुली सकदा । पर तुंह हुण एहड़ा कर जे मिजो तित्था ते जे बांई नेड़े ते तैं चक्कया था, तिसते अगे इक तलाओ आ, तित्थी छड्डी आओ । तेरी बड़ी मेहरबानी ई ।' घमारे सोच्या जे एह तां मौत ई । चार पैसे कमाणे रे लालचा रा दुज्जे शहरा जो चल्या था पर किस्मत इनी आ, इस करी के वापस चलां होर इसो उत्थी छड्डी आओह ।

तिने फेरी बर्तना रा बोझा चक्कया, नाग घड़े च भरया होर तिस तलाओआ लै पुजाई ता तित्थी जे नागे बोल्या । नाग बड़ा खुश हुआ । तिने घमारा जो बोल्या, "तैं मेरी जान बचाई री । इस करी के चल तिज्जो हऊं अपणे कबीले कने मलांहा तुह हखीं मिट्टी लयां । तित्थी जे हऊं बोल्हगा, तित्थी हखीं खोहल्यां । तिज्जो बड़े बड़े नाग कने सर्प नजर आओणे, तु डरदा दिख्यां । फेरी मेरे पिते बामुकी नागा भानस गंध लगांदे औणा-तिमते बी तु दिख्यां डरदा । तिसकने मांहअप्पूं गल-बात करनी । मेरी गल्ल बात करने ते बाद तिम तुह पर बड़े खुश हूणा होर तिज्जो तिस दो बार वचन मंगणे जो बोलणा । पहलिए बारिए तां तुह बोल्यां जे महाराज दी कृपा ई कने मिजो कुछ नी चाहीदा पर तांजे दुज्जी बार फेरी बोलणा, तां तु पक्का वचन लया होर तिसते तिसरीआ चारपाइया ने बहजी रीआ कुत्तिया जो मंगी लयां । तिसा कुत्तिया तेरे सारे दुःख दरिद्र दूर करी देणा । फेरी हऊं तिज्जो कने कुत्तिया जो इत्थी ई पुज्जाई देहगा ।

घमार तां सोचो जे मेरी जान इहां ई छुटी जांदी तां खरी गल्ल थी पर नाग तां तिसो अपनी मौत नजर आओआं थी । तिसरा गलाण मै नी मौड़ी सकदा था । तिने हखीं बन्द कित्ती, नागा रीआ पिट्ठी पर बैठया होर तिस सौगी पताल लोका च उतरी गया । तित्थी मै सर्प ई सर्प देखो । सारे सर्प तिस नागा ने आई के सिर झुकाओ। आखीर विच फण फलाई के इक बड़ा भारी नाग आया । तिहो देखी के घमारा जो लगाणे वाला नाग वी खड़ा हुई गया होर हत्थां जोड़ी के बिणती करने लग्या–"महाराज हउं मात लोका च मया था–तित्थी अगी च फसी गया पर इने घमारे मेरी जान बचाई । इसरी जान बख्शी दित्ती जाओ कने इसो इनाम दित्या जाओ । एह नी मिल्या हुंदा तां महाराज मैं मरी रे हुणा था ।

अपणे पुत्तरा री गल्ल-बात सुणी के बामुकी नाग बड़ा खुश हुआ कने घमारा जो बोलणे लग्या जे तु जो वर मंगणा, मैं मंग होर मां इ पूरा करना । घमारे बोल्या जे महाराज मिजो तुसां रे दरसण हुई गे, एही सब कुछ आ कने इहां मिजो किसी चीजा री जरूरत नी । बामुकी फेरी खुश हुई के बोल्या जे कुछ न कुछ मंग । तां घमारे बोल्या जे महाराज पहले वचन देयो जे मेरिया मंगी रीआ चीजा जो देणे ते मुकरहगे नी । बामुकिए सोच्या जे मुआ धन दौलत मंगहगा, सै मैं सब कुछ देई देणा । इस करी के तिने वचन देईता । घमारे, तिहां जे दस्सीरा था, नागा ते कुत्ती मंगी ली । नागा रे होश गुम हुई गे कांह जे कुत्ती तिसरी राणी पदमनी थी । पर वचन तां सै देई चुकी रा था । इस करी के तिने कुत्ती घमार रे हुआले करी दित्ती । घमारा जो तां कुत्तिया रे बारे च कुछ भी मालूम नी था–इस करी के तिने सोच्या जे फायदे रे बजाए होर इक जानवर पालने पौणा । अपणा तां गुजारा नी हुंदा होर हुण सै वी पालने पौणी पर सपां जो देखी के सै नित्था ते फटाफट निकलना चाहो । तिने कुत्ती पकड़ी होर नागा रीआ पिट्ठी पर बैठी के तलाओआ ते बाहर पुज्जी गया । नागे तिसो बोल्या जे मैं कुत्तिया जो सम्हाली के रखे होर जे कदी किसी मुसीबता च फसो तां तिसो याद करी लौ ।

घमारे कुत्तीया रे गला रस्सी पाई अपणे वर्तना रा बोझा चक्कया होर घरा जो चली पया । घरें रूखी-सुखी रोटी बणाई—इक अप्पू खाहदी होर इक कुत्तिया जो खुआई दित्ती । दुज्जे दिन सवेरे ई सैं कुत्तिया जो दस्सी के शहरा च भांडे बेचणे चली गया । पर अज्ज तिस्सो दुगणा मुनाफा हुआ । सैं खुशी हुई के घरें आया । आगे पुज्जी के तिने क्या देख्या जे भई दो थाल सजी रे–तिहनां च कई किस्मां रे व्यंजन सजी रे । तिने इक थाल कुत्तिया जो देईता कने इक अप्पूं खाईला । एही प्रोग्राम कइयां दिनां तक चलदा रेया ।

इक दिन घमारे तां जे भांडे बेची के आया तां अपणियां झोंपड़िया रीआ जगा तिथने इक स्वर्ग महल बणी रा देख्या । झोंपड़िया रा कोई नाओं नशाण नी मिल्या । सैं बड़ी देर देखदा रहया पर तांजे तिसो होर कुछ नी नजर आया तां सैं मिथा महला अन्दर बड़ी गया । कुछ कमरे टप्पणे ने बाद तिसो अपणी झोंपड़ी सुझी । इको किनारे खा कुत्ती तिहांई बज्झी री थी होर पहले साही ई खाणे रे थाल सजी रे थे । तिने होर खाणा खाहदया होर फेरी सैंह सई गया । एह सिलसिला वी कई दिन चलदा रहया । घमारा रीआ समझा कोई गल्ल नी आओ । कुछ दिन तां सैं सोचदा रइया जे शायद नाग आई के तिसो खाणा छड्डी जांदा हूंगा पर इक दिन तिने इसा गल्ला री तसल्ली ई करनी चाही । तिने कुत्तिया जो बोल्या जे सैं भांडे बेचणे शहरा जो चल्या पर असल विच सैं तित्थी ई महला अंदर छुपी रा रहया । कुछ देरा बाद तिने क्या देख्या जे भई कुत्ती खंडलिया ते छुट्टी, तिसे अपणा कुत्तिया रा छौहड़ा बदल्या होर सुन्दर नार बन्नी के स्वर्णी महला च खाणा बनाणे लगी गी । खाणा बणाई के तिसे दुह थालियां च पाया होर झोंपड़िया च ल्याई के रखी दित्त्या । इतनिया देरा जो घमार झट अन्दर बड़यां । तिने तिसा रा कुत्तिया वाला छौहड़ा छुपाई लया । हुण पदमनिया जो नारा रे रूपा च तिसरे साहमणे औणा पया । तिसे तिसो फेरी दस्सी ता जे इहां सैं पदमणी ई होर अज्जा ते बाद सैं तिसरी जनाना ई । घमार बड़ा खुशी हुआ । पदमणिया रे बोलणे ते तिने झोंपड़ी चकी ती होर हुण यों स्वर्णी महला च रहणे लगे । घमार अपणा कम वी करदा रहया होर ऐश वी ।

पुराणे जमाने च राजेयां रे राज हुआं थे । इक दिन तिसा रियास्ती रे राजे रा वजीर कने नाई घमारा रे महलां रिए कित्थी गुजरे । महला जो देखी के तिह्ना रे होश ई गुम हुई गए । हल्लीं स्यो महला जो ई देख्या करा थे कि तिह्नां री नजर चबारे पर पई । तित्थी तिह्नें बड़ी ई सुन्दर नार देखी तिसा रा मुंह् जे सूरजा साही चमक्या करां था होर सिरा रे बाल स्यूने साही । तिह्ने तांजे पता किरया तां पता चल्या जे एह महल घमारा रा आ कने सैं जनाना वी घमारा री ई । नाईए वजीरा जो सलाह दित्ती जे राजे जो इस महला होर जनाना रे बारे च दस्या जाओ । जे एह राजे री राणी बणी जाओ होर एह महल राजे रा हुई जाओ तां तिस असां जो बड़ी भारी धन-दौलत देणी । वजीरा रीआ वी एह गल्ल समझा आईगी । तिने वी बोल्या जे एह गल्ल ठीक ई । स्यो दोनो जणे राजे ले गए कने तिसो सारी गल्ल बात दस्सी । तिह्ने बोल्या जे घमारा जो मारने रा इन्तजाम हुई जाओ तां सैं सब कुछ राजे रा हुई जाणा । राजा पहले तां इसा गल्ला जो मन्नो ई नी पर तां जे तिन्हे

तिसो मजबूर ई करीता तां राजा बी मन्नी गया । नाइए सलाह् दित्ती जे घमारा त सुआया मण पक्के मोती मंगुआए जाओ होर मोती तिसते ल्याई नी हूणे कने फेरी तिसो फांसी देई देणी ।

राजे घमार सदाया होर तिसो बोल्या जे सै सुआया मण मोती लाई के खजाने च देयो नहीं ता तिसो फांसी दित्त्या जाणी। घमारे बोल्या जे सै इसा गल्ला रा अगले कल जबाब देहंगा । सै घरें आया होर झिखिया मंजोलिया पई गया जे मरने री बारी आई गई । जान नमाणी बड़ी प्यारी हुआं ई । पदमणिए तिसते तिसरे देरी रा कारण पुच्छया । तिने सब कुछ तिसा जो दस्सी दित्त्या । तिसे बोल्या जे कल सै राजे ले जाओ होर बोलो जे मिजो इस कम्मा रे खातर तिन खच्चरां धना री भरी दित्ती जाओ कने कन्ना करने जो तिनां महीनयां री मोहलत दित्ती जाओ ।

घमार दुज्जे दिन राजे ले गया होर तिसले तेहड़ा ई बोल्या तेहड़ा रे पदमणिए समझाई रा था । राजे तिसो तिन खच्चरां धनां रीआं देइती होर मोती कठे करने जो तिना महीनयां री मोहलत देईती । पदमणिए धनां रीआं खच्चरां अपणे महला रीआ कुणिया सट्टी दित्तियां कने खच्चरा चुगणे जंगला खा जो छड्डी दित्तियां । तिहां जे दिन बितते गए, नाई कने वजीर खुश हूणे लगे जे घमारा री मौत औणे लगी कने असां रे घर दौलती कने भरी जाणे । तिनां महीनयां जो तांजे दो कर दिन रहे तां घमारा रे वी प्राण खुश्क हूणे लगे होर सै पदमणिया जो बोलणे लग्या जे सै मोतियां रा इंत्तजाम करो नहीं तां तिसरी मौत आईगी । तांजे सै बड़ा ई घबराई गया तां पदमणिए तिसो बोल्या जे सै हखीं मिट्टी के खड़ा हुई जाओ, तिसा किल्थे ते मोती सट्टाणे पर तां जे सुआया मण हुई जाओ, सैं बस करी देयां । तिने तिहांई कित्तया । पदमणी बिजली बणी ढेर मोतियां री वर्षा करने लगी। पर घमार बस नी करो । फेरी तिसे इक मोती तिसरे सिरा पर सट्टया । तां तिने बस कित्ती होर हखीं खोह्ली। पदमणी अपणे असली रूपा च आई गई । घमारे जाई के जंगला ते खच्चरा ल्यंदियां होर तिन खच्चरा मोतियां री भरी के राजे ले मोहलती रे आखरी दिन पेश करी तियां ।

वजीर कने नाई बड़े निराश हुए । हुण तिह्ने राजे जो घमारा ते शेरनियां रा सुआया मण दुध मंगुआणे री सलाहे दित्ती कांह जे भई सै शेरनियां खाई लैणा । राजे घमारा जो सदाई के एक फरमाइश पाई ती । घमारे सोच्या जे पहले तां गेड़ा ते बची गया था पर हुण बचणा मुश्किल आ । पर पदमणिया रीआ गलाहीते तिने सैं गल्ल वी मन्नी ली होर तिन खच्चरां फेरी धनां रीआं लई लइयां कने इकी महीने री मोहलत मंगी ।

पदमणिए घमारा जो पंज रंग बरंगे धागे दित्ते होर समझाया जे इह्नां जो लई के सैह जंगला च चली जाओ । पंजां शेरनियां दौड़ईयां रड़ांदियां तिसले पुज्जणा । तुह तिह्नां ते दुध मंगणा । तिह्ना पुच्छणा जे भई तुह अप्पू दूहणा कि असं ई दुही देइए । तुह बोलणा जे तुसे ई दुही के देई देओआ । घमारे तेहड़ा ई कित्या होर शेरनिया रा दुध वी खच्चरा पर लद्दी के मोहलती वाले दिन राजे ले पुज्वाईता ।

वजीर कने नाई फेरी बड़े निराश हुए । पर निह्नें दिल नी छड़या। हुण निह्न इक एहड़ी स्कीम बणाई जिसारे मुताबिक जे घमार कदी वी ज्यूंदा नी रही सकदा था । निह्ने राजे जो सल्हा दित्ती जे घमार करामाती आदमी आ । इसो मुर्गां च भेज्या जाओ तांजे एह तुसां रे बुजुर्गों रा सुखसांद ल्याई के देयो । इसते तुसां रेयां बुजुर्गों वी खुश हुई जाणा । राजे जो एह गल्ल बड़ी पसंद आई । तिने फट घमारा जो बुलाया होर बोल्या जे कल बारह बजे मुलखा रेयां लोगां इक इक लकड़ी ल्याई के चिता चिणनी होर तिज्जो मांह् अपणे बाप-दादे रा सुखसांद ल्याओणे मुर्गां च भेजणा । तूहं त्यार रहा । इहां तां घमारा जो पदमणिया ने सलाह लैणे रा मौका मिली जा था पर अज्ज तां राजे रा हुक्म था । घमारा जो पिस्सू पई गए जे हुण तां मौत आई ई गई । मैं रोंदा रड़ांदा घरें पुज्जया। पदमणिए तिसने सारी गल्ल बात पुच्छी होर बोल्या जे एह तां गल्ल ई कोई नी घबराणे री कोई जरूरत नी । तिसे जिसा जगा ते, नित्थी जे चिता चनोणी थी, अपणे महला च रातों रात चूहे कठे करी के एक सुरंग निकल-वाई ली । घमारा जो बोल्या जे भई जिस वगत चिता जो अग लगणी, इस वगत तु सुरंगा रीएं महला जो निकली आएयां ।

दुज्जे दिन ठीक बारह बजे घमारा जो चिता च चिनी के अग लगुआई दित्ती गई । घमार सुरंगा हीएं निकली के अपणे महला पुज्जी गया । इस कमा रे खातर घमारे छेयां महीनयां री मोहलत मंगी री थी जे तिस छेयां महीनयां ते बाद मुर्गोंते वापिस औणा । तांजे चिता री राख वणी गई तां वजीरा कने नाइए रीआ खुशीया रा ठिकाणा नी रहया जे हुण स्यो अपणीआ तरकीबा च कामयाब हुई गए । पर अपना इनाम हासिल करने जो हल्लीं तिह्नां जो छे महीने इन्तजार करने पौणा था ।

उत्थका पदमणिए घमारा जो छुपाई के अन्दर रखी रख्या । तिसरे नखून कने बालु रखुआलने शुरू करी दित्ते । छेयां महीनयां बाद तिसरे नांह कने बाल लम्बे-लम्बे हुई गए । तिसरी अन्दर रही के शक्ल ई बदली गई । पदमणी एक तां समझी गई री थी जे एह सारी शरारत वजीरा कने नाई री ई हई । जिस दिन छे महीने पूरे हुए, तिसे घमारा जो राजे ले जाणे जो त्यार कित्त्या होर समझाया–'राजे ले तुह बोल्यां जे भई तेरे बाप, दादा, पड़दादा, लकड़दादा बगैरा सब मुर्गां च कठे ए कने बड़े सुखा कने रहया कराए । जिस वगत मैं उत्थी तुसां रा सुखसांद लाई के उत्थी पुज्ज्या तां स्यो बड़े खुश हुए । छेयां महीनयां तक महाराज मैं मौजां ई मौजां कित्तियां। पर महाराज तिह्ना जो हुण चीजा री बड़ी तंगी ई । इक तां तिहना ले उत्थी नाई कोई नीआ । मेरे नांह बाल देखी के ई तुसें अन्दाजा लगाई सकां ए जे छेयां महीनयां च मेरा ई एह हाल हुई गया तां तिह्नां रा क्या हाल हुंगा। दुज्जे तिह्नां ले इकी काबल वजीरा री वी तंगी ई । तिह्ना ले कई पेचीदे मुकद्दमे फैसला करने जो पईरे । इस करी के महाराज मिंजो चलदे-चलदे जो निह्ने हुक्म कित्त्या था जे महाराज भई छेयां महीनयां रे खातरे तुसें अपणे नाई होर वजीरा जो मटब्बरेयां जो सुर्गां च भेजी देयो ।'

एह गल्ल बात समझी के घमार राजे ले चली गया । राजा तिसो देखी के बड़ा ई खुश हुआ जे तिसरेयां बुजुर्गों रा सुखसांद तिसले पुज्जी आया । राजे घमारा रा

बड़ा आदर सत्कार कित्या होर इक भारी सभा बुलाई के सारीआ जनता रे साहमणे तिसरे सुर्गा रा कने अपणे बुजुर्गा रा हाल पुच्छया । घमारे तिहां जे सै पदमणिए सम-झाई रा था, सारा हाल मुणाईना होर एह वी बोलीता जे नाई कने वजीर सटब्बरे तिहने छेयां महीनयां जो बड़ी जल्दी बुलाई रे । राजे उसी वगत नाई जो कने वजीरा जो समेत बाल-बच्चे दुज्जे दिन सुर्गा च जाणे जो त्यार हूणे रा हुक्म सुणाईता । वजीर कने नाई धाड़ा मारो होर बोलो जे धन-दौलत तां दूर रही, इत्थी कुलां रा इ नाश हूणे लगया। पर पुराणे राजे अपणीआ जिदा रे वी पुरे हुआं । नाई कने वजीरे राजे री बहुथेरी मिणतां कित्ती जे सै होर नाई कने वजीर भेजी देयो। पर राजा नी मन्नया ।

राजे दुज्जे दिन सारीआ रियास्ती रीआ जनता जो इक-इक लकड़ी ल्याओणे रा होर शमसाना पर हाजिर रहणे रा हुक्म दिया । दुज्जे दिन सारीआ लकड़ीआ री चिता चिणी गई । तिसा पर वजीर कने नाई समेत जनानें होर बच्चेयां बठाड़ते कने अग लगाई ती । स्यो सिधे सुर्गा पुज्जी गए । घमार तां छेयां महीयनां बाद हटी आया था पर तिहना कदी बी नी हटणा था ।

नाइए होर वजीर रा छियापा खत्म करी के घमार कने पदमणी सुखा कने रहणे लगे होर फेरी तिहनां जो किहनिएं वी तंग नी कित्या ।

शब्द	अर्थ
घमार	कुम्हार
वन्नी	बान्धी
तुआरे	उतारे
मांह	मैंने
कांह जे	क्योंकि
तलाओआ ते	तालाब से
सदाई के	बुला कर
पुज्जाईता	पहुंचा दिया
कित्या	किया

पम्मा नड्डा

–रूप शर्मा

बिलासपुरा रा इतिहास बड़ा नोखा कनें बीरता कनें भरी रा। चन्देरी ते आई कनें चन्देल्यां सुरम्यां इसा पहाड़ी रियास्ता जो हरा भरा कित्ता। इक समैं एड़ा बी आया तंजें कहलूरा रा बन्ना सिरमौरा ते नदौणा तक फैली रा था। इस जो बाई पहाड़ी रियास्तां री सरदारी हासल थी। मुगल बादशाह ते अंग्रेज सरकार इस जो बड़े अदबा कनें मन्नां थी। पर इसरे इतिहासा रा असली पता रियास्ता अन्दर रखड़िया ते बाद अठ दिनां तक गुग्गे रे दिनां च गाए जांदे झेड़े देहें। इन्हां झेड़ेयां च घलूरा रे सूरम्यां राजेयां, राणेआं, बजीरां ते भादर सिपाहियां रा नोखा बरतांत कित्ती रा। ए झेड़े बीर रसा कनें भरी रे। आवा हऊं तुसां जो पम्मे नड्डे रा बरतान्त झेड़े रे आधारा ते दस्सां हा:––

पम्मा नड्डा गेहड़वीं रा रैहणे वाला था। सै बड़ा सूरमा था। तिस समैं घलूरा च राजा अजमेर चन्दा रा राज था। राजे पम्मे री ल्याकत देक्खी कनें तिस जो बिलासपुरा री बजीरी दित्ती। राजा अजमेर चन्द बड़ा भादर राजा था। तिस रे समैं बिलासपुरा रात दूणी दिन चौगनी उन्नतिया पर था। बिलासपुरा री प्रसिद्धिया जो दिक्खी कनें हन्डूरी राजा हिम्मत सिंह बड़ा जल्दा-फुकदा रैंआं था। हन्डूरा (नालागढ़) रे लोक बी राजे री देखा-देखी घलूरा कनें खार खां थे। हन्डूरी राजे री राणी बड़ी सूझ बूझा री औरत थी। तिसे बड़ी चतिरियाइया कनें पम्मे जो घरे बुलाई कनें तिस जो कत्ल कराईता। ए सारी कथा गीता रे रूपा च ईआं गाई जांदी :–

बलासपुर सहर

ईआं पम्मा बजीर बणी गेआ। लोक खुश हुईगे। पर हन्डूरा रे लोक इस ते खुश नीं थे। तित्थी रोज घलूरा विरुद्ध गल बातां हुन्दी थी। तिन्हां मलौणां रा गढ़ चिणना सूरू करी ता। तंजे घलूरा ए खबर पुज्जी तां राजे पम्मे जो फौजां कनें हन्डूरा जो राह पाणे खातर भेज्या। पम्मा मनूरड़िया जाई पुज्या। तित्थी फौजें डेरा लाया तां हुण घलूरा रे सूरम्यां हन्डूरा जो लुटणा शुरू करी ता। हन्डूरा रे लोक अपणे राजे अग्गे खड़े हुई कनें आपणी बरबादिया बारे अरदास करने लग्गे। हन्डूरी राजा हिम्मत सिंह बड़ा दुखी होया। तिस जो किच्छ मनी सुझ्या करां था। सारेयां जो चुप दिक्खी कनें हन्डूरी राणी बसोली बोलणे लगी :–

सई बिरिया

बसोलिया राणिया री गल्ल सुणी कनें राजे तिसा री बात मन्नी लई। राणिए पम्मे जो चिट्ठी लिक्खी कनें आपणे दूता रे हत्था भेजी ती। जिस समैं दूत चिट्ठी लई कने पम्मे पास पुज्या तिस समय पम्मा निक्कू, नांगलू ते अमरू संघवाला कनें हार पासा खेल्या

करां था। दूते चिट्ठी पम्मे जो देई दित्ती। पम्मे सै पढ़ी कने लापरवाहिया कने खीसे च पाई लई। दूत नरास हुई कने हन्डूर पुज्या। तिने सारी वारदात राणिआ जो सुणाई ती। राणिए इक होर चिट्ठी भेजीः–

लिखे परवाने राणिए बसोलिए
पम्मा हो हण्डूर सदाया ।
लिखे परवाने राणिए बसोलिए
राय तेरिया गोदा देणा ।

राणिए हुण चिट्ठिया च लिख्या भई पम्मे रिया गोदा च मांह अपणा पुतर देई देणा। ईयां पम्मे हन्डुरा रा बजीर बी बणीं जाणा। पम्मा लालचा च आई गेआः–

खुलिएं तणिएं पैर पताणे,
पम्मा चढ़ी हण्डूर जान्दा ।
असें आए भाइयो देई तेरे पावणे,
बेहड़ेया अन्दरोल करायां ।

पम्मा चिठिया जो पाई कने खुश हुई गेआ। सै राणी बसोलिया गे पुज्या। राणिए पम्मे जो देक्खी कने बोल्या "अन्दरोल तां राजपूतां ते करींदा। ब्राह्मणा तें नी करीं दा। तू ब्राह्मण हा। फेरी तू मांहगे कांहं आया तिजो ता राजे गे जाणां चाईंदा था।" इस तरहां राणिएं तिसरा बड़ा अपमान कित्ता। पम्मा बड़ा दुखी हुईआ। "पर हुण गलती हुई गई री थी। जे हुण पिच्छे जांह ता घलूरियां मारी देणां। खरा ए ई कि हऊं हन्डुरी राजे ने दो बातां करी लऊं।" ईयां सोचदा पम्मा राजे रे दरबारा च खड़ा हुई गेआ। राजे मखौल किता–"पम्मा पता नीं चम्बा किला देणे आई गेया"। पम्मे रा मुंह लाल हुई गेआ। हऊं तां ब्राह्मण ए। किला लैणा तां तित्थी जाई कने घलूरा रे सूरमियां कने दो हत्थ करी लया।" राजे दिक्खी ल्या भई पम्मा डरने आला नी। तिने आपणे परोहता जो इशारा कित्या। परोहत हत्था च केसर कटोरी लैई कने खड़ा हुई गेआ :–

हत्थां ता लइयां भाईयो केसर कटोरी,
बुक्कल लइयां तलवारां ।

पम्मे केसर कटोरी देक्खी तां सै खुश हुई गेआ। पर हन्डुरीए परोहते केसर कटोरी दूर सट्टी कने झट तलवारा कनें पम्मे रा कत्ल करी ता :––

डिग पईआं भाईयो केसर कटोरी,
उच्छल पईआं तलवारां ।
अन्दर बेहड़ेयां पम्मा नड़डा मारया,
दर बिच बचोलणा मारो ।

इस तरह पम्मे कने तिस सौगी भाई रे दूता रा कत्ल हुई गेआ । ए खबर पुजदेयां पुजदेयां मनरूजड़ी पुजीगी : —

अमरू बोले सुण निक्कुआ,
निक्कू बोले सुण अमरूआ,
हुण क्या मंभर कमाणा ?
घलेरे रा बजीर मारया,
राजे रे मुजरे किहां जाणा ?
कलहां नचिआं जीओ अन्दर कहलूरे
रोहला लोक सवाया ।

खबरा कहलूर पुज्जी गी। राजे जो बोल्ली कनें कहलैआं री फौज मंगाई ली । फौज लई कने घलूरी फौज हन्डुरा पर छाई गई । इमा लड़ाईया च हिम्मता ते हीरा भाई बी लड़ने गए । हन्डूरी फौजां रे सरदार अनूप सिंह हिम्मते जो गोली मारी दित्ती :—

लगीआं लड़ाईयां जी सुरमे सपाहिए, गोलिए अम्बर छाया ।
अनूप सिंह उठवाई गोलियां मारदा हिम्मत रे तना लाई

हीरे जो तंजे पता लग्या तां सै.....।

भाईयां रे बदले भाई लैंदे
पूजेया मियां हीरा जाई
पकड़ लगाम अनूप सिंह सटया,
धार जही गरड़ाई
इको तां मारे बाटा घाटा,
इको रोपड़ सरहन्द जाई ।
कांसिए दा जीओ लायक बेटड़ा,
छन जणन्दी तेरी माई,
देववाणी तेरे कवीसरें जीओ,
रखया हुण झेड़ा सुणाई ।

नोट:— पम्मा नड्डा राजा अजमेर चन्दा रा वजीर था। अजमेर चन्द सन् 1692 ते 1728 सन तक कहलूरा रा राजा था।

शब्द	अर्थ
बन्ना	सीमा
खार खां थे	ईर्ष्या करते थे
चिणना	बनाना
खीसे	जेब
नरास	निराश

बन्दरा री चलाकी

—कांशी राम

बड़ी पुराणी गल्ल ही एकी राजे रे सात्त पुत्र थे। राजे रे पुत्र पढ़ाई-लिखाई कनें जवान होई गए। राजे रा बचार था भई सातों लड़के एकी घरा ही भिआणे। केसी होरी राज्जा मंझ एक राजा था तैसरे भी सत्त धीयां थीं। तैस राजे रा विचार येह था भई सातों मठियां एकी घरा भिहाणी। राजे आपणे मठेयां री बरी डोरी करने रे कठे आपणे भाट परोहत कने नाई सादे। जां ब्राह्मणा कने नाई आई गए ता राजें बोलेया भई उम्र खादी सासण भाटी कनें हुण जाणा मेरे टिकेआं रबारी करना'। ब्राह्मणें ता नाइयें खर्चा पाया ता रबारी करने चली पए। एक राज छाडेया, दूजा छाडेया त्रिजे राजा मंझ जाई कने पता चलेआ भई उत्था रे राजे री सात धीयां ही कने राजा तिन्हां एकी ही घरा देणा चाहां। ब्राह्मणे ता नाइए जाई कनें आपणे राजे री सारी गलबात राजे कने सुणाई दिती। जेस राजे री सात देइयां थी तिनें बड़ी खरी मनाई भई मठियां मणसी कने कलेश कटणे। राजे आपणे नाई ब्राह्मण कने होर कहारी-बगारी सादी कने सातां टिकेआं जो टिक्के भेजी ते। कड़माई पक्की होई गई। भाटें-परोहतें दान दच्छणा लई कनें टीप-टीपड़े मलाई गणी-गठी पत्री बाची, लग्न जोग पक्के करी दित्ते। सौहरी होई गए होरी रे होर साख बन्ध बणी गए।

आउन्दा आउन्दा लग्ना रा ध्याड़ा भी पुजी गया। राजे रेआं राज कुमारां ब्याह री पूरी तैयारी करी कने जनित्रा री तैयारी करी दित्ती। इन्हा भाउआं मंझ सभनीं ले हल्के भाउएं बोल्या भई पिच्छे भी राज पाट कल्लहे नी छडी जाणे। पिच्छे हाउं ही इत्थी रही जाहां, कने राजे भी जनेती जाणा। चोर-चोरटू कोए पिच्छे लुट मचाई देंघा ता भी बड़ी शरमा री गल्ल ही।

जनित्र चली पई। छः भाउ बैहणा (ब्याहणा) चली पए पर सातुआं रुकी गया। जनित्री जो एकी जगहा रात पई गई। सारेआं तिथी डेरा देई दित्ता। करणकार क्या हुये जे एक नाग आई गया। नागें बोलेआ—भई राजा मिंजो वचन दे। बासुकि नागें वचन लई लेए। बाद विच राजें पुच्छेया भई बासुकि नाग। तू बचनां रे बदले क्या मांगणां चाहां। बासुकि नागें बोलेया भई एजे सातुई खाली पालकी चलीरी एसा री लाड़ी मिंजो देई दैयां। राजा वचन देई बैठी रा था। जनित्र दूजे ध्याड़े उस राजा मंझ पुज्जी, लग्न वेदी, मक लावा, सतरवात होए। त्रिए दिन बरात वापसी पर तित्थी ही पुजी गई। सातुएं बैहण नागें लेई लई कने छः बैहणी छः भाउ सौगी-सौगी अपणेआं डोलेआं मंझ राजे रे बेहड़ेआं पुज्जी गए। सातुआं भाउ बचारा पालकी री निहाल मंझ था पर ध्यागदे-ध्यागदे हाथा पात्र आया।

एकी ध्याड़े तेसरीएं एकी भाभिएं तेस जो ठोकर मारी भई तूं एहड़ा सूरमा हुंगा ता आसांरिआ बैहणी जो लिआओंघा। राजे रे पुत्रा रे मना ठेस लगी तिने घोड़ा

पीढ़ेआ कने चली पया। घोड़े रा मित्र एक बान्दर भी था से भी सौगी चला गया। रस्ते मंझ एक दरिया भी आओं था। घोड़े पाणी पित्तेआ ता दरयाव आधा होई गया। बान्दरे भी पाणी पित्तेआ ता दरियाव सारा ही मुक्का करी दित्ता। बासुकी नाग पयालपुरी मंझ तेसा मठिया (देआ) रिया गोदा मंझ ढफैली करी सुत्तिरा था। बान्दरे देई चक्की कने बाहर कढ़ी दित्ती; आपु चुपचाप तेसरी जांघा दबाणे लगी गया जांघा जिकदे-जिकदे तेसजो निन्द्र आई गई। बान्दरा जो पता था भई नागा ते बचणा कठण हा। से तेत्थी कनारे बैठी कने बाण बाटदा लगी गया।

जां नाग जागेआ ता तिने कुछ होर हे देखेया। बान्दर डाला हेठ बाणा बाटदा लगी रा था। बासकि नागे पुच्छेया--भाइया बान्दरा ये क्या लगी रा तू करदा। बान्दरे बोलेआ --भई अज बड़ा भारी हिल्लण हूणा कने घर-टापरू सब कुछ रूढ़ी जाणे। मैं रस्सी बणाई कने आपु जो इते डाला सौगी बन्ही देणा। वासुकि नागें भी बोलेआ भई मिजो भी कुछ लाज दस। बान्दरे बोलेया भई-एक गल्ल होई सकदी भई तिज्जो भी इते डाला कने बान्ही कने बचाई सकां हा। बान्दरे से डाला कने बान्ही दित्ता कने आपु कुछ ढंग मलाई करी खिसकी कने आपणे राजे रे राजा मंझ मजे मंझ बसदे होये।

शब्द	अर्थ
भिआणे	शादी करने
धीयां	बेटियां
मट्ठियां	लड़कियां
रबारी	विवाह प्रस्ताव
मणसी कने	दान करके
पत्री बाची	जन्म कुण्डली देखी
जनित्रा री	बारात की
हुल्के	छोटे
जनेती	बाराती
नाग	सांप
त्रिए	तीसरे
घोड़ा पीढ़ेया	तैयारी की
सौगी	साथ
ढफैली करी	आराम से
जिकदे-जिकदे	दबाते-दबाते
हिल्लण	भूकम्प
टापरू	छोटे घर
रूढ़ी जाणे	गिर जाना

दो ठग

—कांशी राम

एकी गरौंवां दो भाई रहां थे तिन्हा मंझा ले एक भाई मैहर चारी (लम्बरदारी) करां था। एक दिन तिनें दुज्जें भाइएं जो बोलेश्रा—भाउवा आज मां जाणा मैहरचारिश्रा जो कने मां एक मैंह भी खरीदी कन्ने लियाणी। से आदमी बड़ा सीधा साधा था। तिन्ने 500 रुपये मंझ एक मैंह खरीदी लई। बाटा तेसजो पंज ठग मिली गए। तिन्हें मनां मंझ सोचेश्रा भई मैंह तां बड़ी बांकी ही। ये कोसी न कोसी तरीके जरूरी खरीदणी या लैणी। सेश्रो ठग ता थे हीं। सेश्रो पांजो हे श्रा एकी एकी मोड़ा पर खड़ी गए। एकीं ठगे पुच्छेश्रा भई कितने रुपयैंश्रां खरीदी। से सीधा माहणु था तिन्नें बौल्या पांजे सौएं। तिन्ने बोल्या–मोया ऐसा रा फूहट हा चिट्टा, ये ता ही चार सौ रुपयैं री। तिन्ने बोलेश्रा सच ही हा। दुज्जें बोल्या—ऐसा री ठरां (टांगें) भी भरी हीं। ये तिनां सौश्रां री ही। त्रीजे बोल्या भाई! एसाँ रा ता माथा भी बोला हा ऐसा रातां दो सौ रुपये ही देणा था। चौथें बोल्या—एसा रे खुर भी चिट्टे ही हेये सौ रुपये री ही। पांजुएं बोल्या—श्रोएं श्ररा मिजो एसा कोई दसें रुपयैं भी देन्दा ता मां तां भी नी लिश्राणी थी। तिन्ने पुच्छेश्रा—भई कांहा! तिन्हे बोल्या भई मैंह ही चौरी कने फुंहट खादी रा गालिएं तिस्सा जे एह दुहणी से एसा पैहल घस्से नमरी देणी।

तिन्ने बोल्या—जाह हो जान्दिए बलाई तू मां मंझे कां श्राई। जे मेरी म्हात्मी मुहैंस दुहन्दी मरी जाश्रो ता म्हैंस कजो खरीदणी। सेह स्वर्ण कुत्थी फुकणा जिसते कान भी छिजी जाश्रो। फेरी बालू कुत्थी पाणा जे नाक ही नी रहो तां। तिधी ते तिन्ने सोचेश्रा भई ऐसा जो छड्डी ही देहां। श्रो तिन्ने मैंह तित्थी ही छड्डी दित्ती। घरा पुज्जा ता तेसरे भैहड़ें (भाइएं) पुच्छेश्रा भई ल्यांदी नी मैंह। तां तिन्नें सारा हाल चाल सुनाई दित्ता। सारी विल-कथा सुणी कने मैहरा जो बड्डा दुख होया। तिन्ने बोल्या—भाउश्रा सेश्रो ता ठग थे। अच्छा कांईनी जे मेरे घस्से चड़े ता हाउं तिन्हा री सम्हाल लेंउं।

दुज्जे ध्याड़े तिन्नें घोड़ी लई। घोड़िया जो घरा दो लाल खवाए। जान्दा जान्दा बड़ी दूर पुज्जी गया। राती जो ठगां रे मुलखा जाई रहेश्रा। रात बीती गई जे भ्याग होवा तां घोड़िया श्रो दो छट्टी मारीं तेसें लिद्द करी ती। लिद्दा मंझ दो लाल निकली गए। ठगें बोल्या जाह हो जान्दिए गल्ले ए ता लाल हागां ही, ए खरीदी ही लैणी। सौदा हुन्दा दूंह हजारें होई गया। घोड़ी थी बड्डी भार जब्बर कने जमाने भी सस्ते हूणे। घोड़ी लाल हागणे रे लालचा री खरीदी लई। ठगें तिहां जे तिन्हौं दस्सी रा था तिहां हे तेसा सोठिया री मारी पर से कुत्थी गल्ल बणनी थी। लाल हागणे री गल्ल झूठी हे थी। मैहर होरी हटी श्राया। कन्ने से चन्दरा भी था तेस जो पता था भई ठगां भी तेस बाला जो श्रावण। तिधी ते तिन्नें पुवाश्रो घड़ी ता भई तिन्हा श्राउन्देश्रां जो मसाला त्यार रखिए।

तिन्ने दो खरगोम आन्दे तिन्हा मझां ले एकी जो आपणी लाड़ी वाल छड्डी त्या कन्ने एकी जो सौगी कहरिया लई गया। लाड़ी जो बोली गेया भई घरा जां मिजां पुच्छणा कोए आउंघे ता दस्सी देणा भई बैठो। फेरी तुध एस खरखोमा जो गलाणा भई जा तेमजो बोल भई घरा कोय प्रौहणे आइरे कन्ने सेम्रो तुम्माम्रों मादेआ करां हे। बारह एक बजे जो हाऊं भी आया फेरी बाकि गलबात मां आप्पुं करनी। तेसे तेहड़ा ही कित्ता। से सेहड तैसे मंयहणे पुजणे पर तिहां ही मिली ता कने तेमजो दम्मी ता भई कोए नावाकम प्रौहणे आइरे घरा तक आई जा। सैहड़ ता मजे कने कनकी डुडीखा बड़ेआ कने सैह बारह एक बजे हे दुज्जे मैढ़ लई कने पुज्जी गया। ठगां जो पैहली गलां तां भल्ली गई। ठगिया रा ध्यान आई म्या। गुड़ा रे लालचें माक्खीं मरां ही। तिन्हे सोचेआ भई आसें बाहर ठठिया मंझ रहां है। घरा औरतां जाणे रा पक्का पता नी रहन्दा कधी आउणा कधी जाणा। ता आसा भई सैढ़ खरीदी लेणे, चार ढभे चाहे करड़े भी देणें पम्रो।

तिन्हें बोल्या भई मैहरा सैहढ़ बेची दे। मैहरें बोल्या भई सैहढ़ ता मेरा बड़ा भारी कम्मा रा हां कने गारे कम्म कार एसरे हे सम्हाल रखी रे। आस्से भाई कल्हे माहणू हें ता आसां रा कम्म एसरे ही जिम्मे चली रा। ठगें बोलेआ तिज्जो चार पैसे मागां खरे खटाई जाणें कन्ने तूं सारियां अडियां छड्डो दे कन्ने एमजो बेची दे। मैहर कोए हुण जाची गया भई ठग पक्के गाहक हैं। तिन्ने बोलेया भई बेचणा ता नी था पर तुस्में भी घट मित्र नी होए जे तुस्मां खरीदणा आ तां एकी हजारा रुपये ते घट ता मुल लेणा हां नी।——

सारा मुल्ल तुल होई कन्ने सैहढ़ ठगां रे पल्ले पाइता। मैहरें आपणा पल्ला पूरा कित्ता से ओ घरारेआं आद करो। एक जगाहा बाटा ठगें सैहड़ रस्सी ते मिल्ला ओ बोल ता भई घरा बौलणा भई रोटी बणाई छड्डो कने थोड़ी देरा मंझ आसे भी पुज्जी गए। मैहड़ ता केतकी द्वारेआं रे झेकड़ेहला मंझ बड़ेआ कनै ठग सांझा आपणे घरा पुज्जी गए। जो घरा पुज्जेआ भई खाणा कांह नी बणेआ ता तिन्हौं जवाब मिल्ला भई तम्हारा घरा औणे री खबर पा थीं नी फैरी खाणा किहां दणदा। ऐसा गल्ला पर हे तिहे बोल्या भई आसें ता सैहड़ समझाई कने घरा भेजी रा था। घरा खबर लगी भई सैहड़ घरा पुज्जी रा हीं नी था।

ढंगा जो सिरा री बाही री पैरां मंझ निकली गई। तिन्हें सोचेआ भई मैहर बड़ा हीं खराब हा कने हुण आसां जिन्दा हे नी छड्डुणा। तिन्हां जो घरा पुजेआं तिने होर जुगत घड़ी तीरी थी। तिने घरा आपणी जनाना समझाई दित्ती री थी भई जां जे सेओ ठग घरा पुजघे ता तुध माहकने लड़ना पई जाणा सिन्ते आपणी लाड़ी रे गला एक खुन्ना री भरी री पोटली बान्ही ती। जां सेओ आए ता तेसें चैं चै लाई ती। मैहरें बौल्या भई रोटी कर मैहरिए घरा मित्र पुज्जे आई। हुण से होर भी ताल करदी लेंगी भई रोटी राटी मेरे ते नी बणदी। एस्सा गल्ला पर लम्बरदार मैहरिया पर गर्म होइ गया। दो चार बुरे-भले शब्द भीं बोली ते। हुण तिने तेसा जो जां गाली दित्ती ता तेसें भी के जाहणी कने दो-चार गालां मोटी मोटी तेस्सा

जो काढ़ी तो । ऐसा गल्ला पर मैहें तलवार कढ़ी श्रो जरा कर खुन्ना रीश्रा भरी रिश्रा पोटलीया पर रेसका मारी ता । हुण क्या था खून हे खून होई गया । ठगें बुझेश्रा भई एमरी गई । मैरें मैहरिया तर हुण चिट्टी चादर ढवाई दित्ती । श्रो दो तलवारां लई कने मन्त्र बोलणा लागी गया । एसें बाढ़ी एसें जिन्दी कित्ती । थोड़िया देरा बाद चादर ता कढी तीं कने मैहरी होरी जिन्दी होई कने ढुडकी ढाडकी हरन बात होई गई । जां जिन्दी होई गई ता लगी पुच्छणा भई रोटी क्या बणाणी । से खूब समझाई री थी हुण तेसें झट पट रोटी बणाई कने श्रापणे मैहरा श्रो बोलेश्रा भई प्रौहणेश्रां जो भुख लगी री हुंगी कने इन्हां जो रोटी खवाई देश्रो ।

ठगे सोच्या भई तलवारा मंझे ता सच ही कोई जादू जन्तर हा कने एह जरूर नीणी कने श्रासां री म्हाल्मी भी कधी-कधी एहढ़ा ही नखरा ठठरा करा ही ।

तिन्हें बोल्या भई श्रासां ए तलवारां जरूर खरीदणी थी पर तू देन्दा तां । मैहर बोल्था ए ता मेरा गलाया ही मनदी जे तुस्में लई जाश्रो ता मेरा ता कोय जीण ही नी रहैश्रा । ठगें बोलेश्रा भई कुछ हो श्रासां तलवारां जरूर लई जाणी । चाहे तू खरा मन्न चाहे बुरा तिन्हें मुल्ल तुल्ल कित्ता श्रो दूहं हजारे सौदा तय होई गया ।

तलवारां खरीदी ठग सीधे घरा पुज्जी गए । घरा जान्देहें बड़े भाउएं श्रापणी लाड़ी जो बड्डे रोभा कने बोल्या भई छोड़ चारें खाणा वणाई दे नईं ता एसा तलवारी कने हुण वड्डी सटघा । लाड़ी बचारी भौन भाहें बोलणा लगी फेरी तिज्जो बड्डा सुखन होणा पापिया । तिन्ने रत्तं कर जवाब सुणेश्रा कने तिन्ने श्रापणी लाड़ी बाडी ती । हुण से मन्त्र पढ़दा लगी गया । एकी हाथा एक तलवार लई एकी दुज्जीश्रो भुण भुण लाई ती—एसें बाढी, एसें जिन्दी कित्ती । पर हलो से कुल्था लें हुणी थी जिन्दी भला मुईरे भी कधी जिउन्दे होए । तिन्ने गलाया भई श्रजें ता ये जिन्दी होया नी करदी पर पता नी क्या गल्ल ही दुज्जे जो गल्लाया भई तूं श्रापणी लाड़ी जो बाढ़ीं करी देख । दुज्जे बाढी तेसजो भी सेह गल बीत्ती । त्रिजें भी सेहे कम्म कित्ता चौथे भी कने पांजुए भी । जो पाजां रे घरा रा घराकड़ा होई श्रगेश्रा ता हुण ऐश्रो बड्डे सोचा बचारा मझं पई गए होर पूरा पता चली पया भई तिन्ही जो ठगी दित्ता रा । श्रापणी श्रापणी म्हाल्मी री दस तेरहा कने कर्म धर्म करी के तेस मैहरा रे गराबां जो सेश्रो चली पए । तिन्हे पूरा सोच करी कने हुण तेग जो जिन्दा न छडणे री सोची लई री थी ।

मैहरा जो पता था भई हुण किछ पवाश्रौ करना जरूरी है श्रा । तिने क्या कित्ता भई श्रापणी लाड़ी समझाई भई जे ऐश्रो ठग श्राश्रोधा तिन्हो दस्सी देणा भई मैहर होरी मरी गईरा कने कुणिया दा बी छड्डी रा जे तबार नी हा ता श्राप्पुं देखी सकां हे बास सींघी लेश्रो एक श्रग्गे जे होएश्रा श्रा बास लग्या सिघण तिन्हां हे मैहर ठगा रा नाक कटी ता ।

त्तिनें बोल्या ऊंहुं-खूं—बड़ी भारी बास ही । त्तिने नाका पर हाथ थैया श्रो श्राप्पुं पिच्छे हटी गया । दुज्जें भी सोचेश्रा भई बास सिघीं हे लउं तिने भी तेहड़ा बोल्या

ऊहूं-खूं—बड़ी भारी बास ही। सरमा रे मारे तिने भी तेहड़ा ही कित्ता। त्रीजें सोचेग्रा

भई मैहर मरी ता गई रा हुण एसजो केहड़ी का बास पटरी चलो सिंघी हे लग्रो। त्रीजे री भी सेग्रो हालत होई। चौथा गया चौथे भी तेहड़ा ही बोल्या ऊंहू खूं—बडी भारी बास ही। पाजुए भी तिहां हे कित्ती उहूं-खूं—बड़ी भारी बास ही। जां पाजुए बोल्या भई मेरा नाक बड़ी ता सारे बचारे बाहर निकली गए। तां सभनी ग्रापणी बित-कथा सारेग्रां जो दस्सी ती कने ग्रापणियां ठगिया रे फल्ला पर बचारने लग्गे भई ठग्गी नी कित्ती हुन्दी ता जरूर हे नकटे भी नी हुन्दे कने घरा जो भी नी डबोन्दे।

शब्द	ग्रर्थ
मैंहस	भैंस
कुत्थी	कहां
प्रौहणा	मेहमान
जाची गया	जान गया
ढभे	पैसे
तुध	तूने
बाढी	कत्तल की
मुइरे	मरे हुए
जिउन्दे	जीवित
थैया	रखा
सिघी	सूंघना
तेहड़ा	वैसा
वसूलेग्रा	प्राप्त किया
खुह खणदे जो खानर	दूसरों को बुराई करने से अपनी बुराई

मैहरा रे भाउ ले पांच्च सौ रुपय्या ठगी रा था तिने तिन्हां ले पांच्च हजार वसूलेग्रा कने होर बड़ा भारी दिव दित्ता। खुह खणदे जो खाता मिल्हां हा। कधी कोसी जो बुरा नी सोचणा। बुरा करने वाले रा बुरा हे हुग्रां हा।

इक पैसे कने ब्याह

—कांशीराम पठानिया

बड़ी पुराणी गल्ल ही । एक बुड्ढी थी । तेसा रा एक लड़का था । लड़के रा ब्याह भी होइरा था । एक ब्याड़े मन रे मन्ना मंझ पता नी क्या ज्ञान बसेआ तिने आपणी अम्मा ते एक —ढब्बा मांगेआ । तेसरी अम्में पुच्छेआ भई बच्चा तुध ढब्बा कुत्थी पाणा । मट्टें बोल्या अम्मा एगल्ल कजो दसणी कने कजो पुच्छणी पर हाउं ढब्बा जो बरबाद नी गवांघा । आम्मे बोलेआ बच्चा ढब्बा ता नी हा पर तू गरज दस्सी देओ ता चाहे केत्थीते भी लिआई कने देणा ढब्बा जरूर मिली जांघा । आखर कार मट्टू जो दसणा पया । मट्टू बोल्या अम्मा हा ता गल्ल हामण री ही पर हुण हाऊं दस्सी हे देहां भई मां आपणे ब्याहा रा कुछ ढंग पलंग करना तिधि री तई हाऊं ढब्बा मांगा हा । मट्टू री मावें केती ना केती ता पैसा उवाड़ेआ ओ मट्टूआं देईता । मावा री ममता बुरी हुई मावां जो आपणे मट्टू रे ब्याहा रा ता बड्डा हे चाव हुआं हा ।

मट्टें जो जो पैसा मिला ता पैसा जेबा पाया ता केसी मुलखा बखा ओ चलदा होया । एकी जगह जाई कने मट्टू एकी ढब्बेरा कुजू खरीदो ।

केत्थी बड़ी दूर जाईके एक बजार आया । लड़का तेथी तिने बजारा उतर गया । तेत्थी एक हलवाई हलुआ बणाया करां था । हलवाईऐ मट्टू जो बलवाया एक कुजू खरीदा होर हलवाइएं मट्टू जो हलुआ दित्ता झमट्टू । बड्डा भारी खुश होया । मट्टू हलुआ कुजू मंझ भरी कने खान्दा खान्दा अग्गे चले गया अग्गे तेस जो एक धोबी मिला । धोबिएं बोल्या तेरा नौं क्या हा । तिने बोल्या मेरा नौं हा झकझांजा' । धोबिएं बोल्या खां क्या हा । तिने बोल्या चलेजा अग्गे एक पीपल औणा तेत्थी एहड़ी चीज मिलणी । धोबिएं बोल्या मां कपड़े केस बाल छड़ने । मट्टें बोल्या कपड़े माह बाल हे छुड्डी दे । मट्टू धोबी जो टपदे देख्या कने कपड़े पाए ता चलदा होया । बाटा एक घोड़ स्वार मिलैआ । मट्टा कुजू ले हलुआ अजें भी खाणा लगीरा था । घोड़े चराणे वाले बोल्या भई मट्टूआ तू क्या खाहां । मट्टू बोल्या तिज्जो ये चीज अग्गे अग्गे आप्पु मिली जाणी । अग्गे एक पीपला रा डाल औणा तेत्थी तुधू रूकी जाणा । तिने बोल्या भई मां घोड़ा कोस बाल छड़ना । मट्टू बोल्या घोड़ा तू माह बाल छुड्डी जा । घोड़े चारने वाले तेसरा नौं पुच्छेआ । मट्टू नौं दस्सा मुल दित्ता । घोड़े जो चारने वाला तित्था ते चली गया । मट्टू घोड़ा पाया ता चलदा होया । बाटा तेस जो एक बुड्ढी ता एक मट्टी चलदे मिल्ले ।

मट्टा आपणे कुजू मंझा ते हलुआ खाणा लगीरा था । बुड्डियें पुच्छेआ भई तू क्या लगी रा खाणा । मट्टू बोल्या बल्ले ये से चीज़ ही । बुड्डियें बोल्या थोड़ी जेह मंजो भी दे । मट्टू बोल्या हाउं नी देन्दा कने जा ओ अग्गे एक पीपल आओंणा तेत्थी तुसां जो खुद

मिली जाणी । तेसें बोल्या ता ए मट्ठी केत्थी छाडणी । मट्ठे बोलेश्रा एमा एत्थी हे रहणा दे । बुड्डिए पुच्छेश्रा एमा भई तेरा नौं क्या हां । मट्ठे बोल्या मेरा नौं हा घरज्वाईं । बुड्डी चली गई । मट्ठा घोड़े पर बैठा कने मट्ठी भी बठाली ना चलदा बणेश्रा । धोबी श्राया तिनें कपड़े सम्हाले ता हईनी हुण तेसजो बड़ा भारी दुख होया। धोवी कचहरियां चले गया तिनें श्रापणें कपड़ेश्रां गुम होणे री रपोट करी ती । तिन्हें बोल्या भई कपड़ेश्रां बल्ले था कुण धोविए बोल्या एक मट्ठा था तिन्ने श्रापणा नौं झखझाजां दसेश्रा । ठाणे दारें बोलेश्रा भई झखझांजा, ता हवा जो बोलां हे । श्रब क्या करें । धोबी रा झगड़ा खतम होया । फेरी तवां जो घोड़े चारने वाला पुज्जी गया भई घोड़ा चोरी चल्ली गया कने एक मट्ठा था तिनें श्रापणा नौं मुलदित्ता दसेश्रा था तिने हे नित्ता हुंगा । हुण ठाणे दारे बोल्या भई जां तिने नौं हे मुलदित्ता दस्सेश्रा ता क्या पता लाईए। तेसरा भी झगड़ा तिहां हे मुक्की गया । पीछें लै बुड्डी श्राई भई मेरी एक मट्ठी थी तेसा जो एक मट्ठा श्रापणा नौं घरज्वाईं दस्सेश्रां करां था सेह लई गया । ठाणे दारें बोल्या भई जे नौं घरज्वाईं दसदा था ता तेस श्रापणे ज्वाईं जो घरा जाइके हे टोल। बुडी घरा श्राई । सब मजे मंझ बसदे होय मट्ठे व्याह करी लया । एहड़ा समझ-कार मट्ठा था एकी ढब्बे कने हे लाड़ी लई श्राया ।

शब्द	अर्थ
ढब्बा	पैसा
कुत्थी	कहां
गरज	जरूरत
केती न केती	कहीं न कही
कुज्जू	मिट्टी का बर्तन
नौं	नाम
कासे बाल	किसके पास
छाडणी	छोड़नी
टोल	ढूंढ

P&SHPS—2468-A. C. L./76—6-1-77—1,000 Books.

सोमसी (त्रैमासिक पत्रिका)

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी के तत्वावधान में पर्वतीय संस्कृति-कला एवं भाषा के विभिन्न पक्षों को उजागर, संरक्षित तथा पोषित करने के उद्देश्य से एक त्रैमासिक पत्रिका '**सोमसी**' का प्रकाशन जनवरी, 1975 से हो रहा है। पत्रिका का वार्षिक चन्दा मात्र 12 रुपये है तथा यह प्रदेश के कालेजों व स्कूलों के पुस्तकालयों के लिए शिक्षा निदेशक, हि0 प्र0 द्वारा स्वीकृत है।

पत्रिका के अब तक के अंक भी अकादमी कार्यालय में प्राप्य हैं। संस्कृति, भाषा एवं कला के अध्येताओं के लिये यह पत्रिका नए कीर्तिमान स्थापित करती है।

कृपया निम्न पते पर सम्पर्क स्थापित करें—

सचिव,
हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा
अकादमी, परीमहल,
शिमला-171009

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी, परी महल शिमला-९ के प्रकाशन

1. **पहाड़ी लोक रामायण**

   (प्रदेश के विभिन्न जनपदों में प्रचलित राम-कथा के रूपों का संकलन तथा सारगर्भित विवेचन)। — 12-00

2. **ऋतम्भरा**

   (प्रदेश के संस्कृत कवियों की कविताओं का हिन्दी अर्थ सहित संकलन)। — 6-00

3. **माला रे मणके**

   (हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध पहाड़ी कवियों की कविताओं का संकलन)। — 6-00

4. **छनाट**

   (संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार महाकवि भास के छः नाटकों का पहाड़ी भाषा में रूपान्तर)। — 12-00

5. **श्यामला**

   (प्रदेश के प्रसिद्ध हिन्दी कवियों की कविताओं का संकलन) — (प्रैस में)

6. **कथा सरवरी भाग-1**

   (हिमाचल प्रदेश के शिमला, सोलन, सिरमौर तथा कुल्लू जनपदों की लोक-कथाओं का संकलन)। — 2-50

7. **कथा सरवरी भाग-2**

   (हिमाचल प्रदेश के चम्बा, कांगड़ा, ऊना, मण्डी, हमीरपुर तथा बिलासपुर जनपदों की लोक कथाओं का संकलन)। — 2-50

8. **इन्दुकाव्यम्**

   (भूतपूर्व सिरमौर रियासत का संस्कृत भाषा में इतिहास) — 15-00

9. **उर्दू काव्य संकलन**

   (प्रदेश के उर्दू कवियों की कविताओं का संकलन) — (प्रैस में)

नोट—हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी के सभी प्रकाशन प्रदेश के पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत होते है।